अनुक्रमणिका

क्र.स	विषय विवरण	पृष्ठ सख्या
1	अर्थ सहयोगी का परिचय	3
2	विद्यार्थियों का समय चक्र	4
3	विद्यार्थियों के लिए आदर्श आचार सहिता	5
4	अभिभावकगणों से अपेक्षा, आध्यात्मिक प्रतिज्ञा	5-6
5	उद्देश्य, शिविर के नियम	7
6	बच्चों को धार्मिक पाठशाला भेजना आवश्यक, धार्मिक शिक्षण सस्थाओं में विद्यार्थी के नियम	8
7	ग्रीष्मावकाश एव बाल अभिरुचिया	9
8	त्रैमासिक पाठ्यक्रम वर्ग नर्सरी से त्रयोदश तक	10-14
9	प्रार्थनाए (1 से 14)	15-22
10	शास्त्रीय गाथाएं	23-24
11	मगलाचरण के श्लोक (भावार्थ सहित)	23-24
12	सृष्टि कर्तृत्व मीमासा	29-32
13	जैन तत्त्व ज्ञान प्रश्नोत्तरी	33-53
14	प्रतिक्रमण के सूत्र में आए कठिन शब्दार्थ	54-55
15	सम्यक्त्व के सडसठ बोल	56-60
16	छ काय का थोकडा	62-62
17	कथाए (भ महावीर, गणधर इन्द्रभूति, महासती चदनबाला, मेघकुमार, अर्जुनमाली, कामदेव श्रावक, सुलसा श्राविका, सुबाहूकुमार, छोटी बहू रोहिणी, महासति सुभद्रा, विवेक, विनय)	63-82
18	आध्यात्मिक जीवन के नियम, शाश्वत स्वर	83-89
19	आठ मूल, आठ नही, शृगार, बारह महापापी, यति धर्म, बारह शिक्षा, भोजन	89-94
20	मासाहार छोडे, शाकाहारी बने, सर्वनाश की गभीर चेतावनी	95-98
21	विचारणीय (हमारा आहार, अहिंसक सौन्दर्य प्रसाधन, गर्भपात-विवरण, गुटखा, सिगरेट से केंसर, शराब एक भयकर विष)	99-106
22	वैज्ञानिक एव डाक्टरी खोजों का परिणाम	107-112
23	भारत सरकार का फैसला	113
24	उपहास और अमेरिकन डाक्टर्स	114
25	प्राकृतिक उपचार, विटामिन 'खाद्य प्राण या सार'	117
26	जैन नवयुवक एव महिला मडल अपील	124
27	श्रावक की दिनचर्या	126

अर्थ सहयोगी का परिचय

प्रस्तुत पुस्तक धर्मनिष्ठ, दानवीर श्री केवलचद भॅवरीदेवी मुथा रायपुर म प्र की ओर से मातुश्री दाखीबाई मुथा की स्मृति मे प्रकाशित की जा रही है। श्री मुथाजी आचार्य श्री नानेश एव युवाचार्य श्री रामेश के अनन्य भक्त हैं। साधु सतो की सेवा मे सदैव तन-मन-धन समर्पित भाव से सेवारत रहते हैं। आपकी धर्मपत्नी भॅवरी देवी मुथा महिला मडल की सक्रिय सदस्या रही हुई है। आपके 3 भाई मगलचदजी, सपतराजजी, उत्तमचदजी धर्मनिष्ठ श्रावक है। आपके पुत्र श्री विजयकुमारजी का सबध दानवीर, धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी बोहरा की सुपुत्री के साथ हुआ। सुपौत्र सुनील कुमार का विवाह नागपुर निवासी नवलचदजी पुगलिया की सुपुत्री के साथ हुआ। शालिभद्र की सगाई श्री सपतराज जी सुराणा जयपुर के साथ सपन्न हुई। पूरा परिवार धर्मनिष्ठ श्रद्धायुक्त रहा है।

धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्रीमान केशरीचदजी धारीवाल श्री नथमल जी धाडीवाल के सुपुत्र हैं। आप आदर्श त्यागी 1007 श्री सपतमुनिजी म.सा के ससारपक्षीय भाई व निरूपमाश्रीजी म.सा. के देवर तथा सूरजकवरजी म.सा. के भाई एव सुयशाजी म.सा. के दादाजी हैं। ऐसे धर्मनिष्ठ परिवार के श्री धारीवाल जी अपनी पूज्य मातुश्री पानदेवी एव धर्मपत्नी श्री सूरजदेवी की स्मृति में इस पुस्तक के प्रकाशन मे सहयोग दिया है।

समर्पण

श्री अमृतलाल हरकचद धाडीवाल द्वारा सकलित सस्कार मार्गदर्शक भाग 2 की यह कृति भावी पीढी को सर्वागीण सस्कारित करने हेतु आचार्य श्री नानेश के पवित्र कर कमलो मे सादर समर्पित है।

अमृतलाल हरकचद

प्रकाशित

सकलित सामग्री गणेश जैन ज्ञान भडार, रतलाम से उपलब्ध कर श्री अ भा साधुमार्गी सघ द्वारा जनता के उपयोगार्थ प्रकाशित।

विद्यार्थियों का समय चक्र

5.30 जागरण ध्यान चिन्तन वन्दन

6 00 प्रार्थना भजन-सामायिक

6.30 जलपान स्नानादि निवृत्ति

सवेरे स्कूल जाने वाले	दोपहर में स्कूल जाने वाले
7.30 स्कूल	7.30 स्कूल होमवर्क आदि
12.30 भोजन	9 30 घर कार्य मे सहयोग
1 00 घर कार्य में सहयोग	11 30 भोजन
3 00 स्कूल होमवर्क आदि	12 00 स्कूल

शाम को

5 00 बजे खेलकूद विश्राम

6 00 बजे भोजन

7 00 बजे शाला होमवर्क

9 00 बजे ध्यान चिंतन एव शयन।

विद्यार्थियों के लिए आदर्श आचार संहिता

1 प्रार्थना समय मे सभा में अनिवार्य उपस्थिति दूँगा।

2 कक्षा मे विनम्रतापूर्वक सरल और स्पष्ट हिन्दी भाषा बोलूँगा।

3 खाली समय का सदुपयोग पुस्तकालय, वाचनालय एव अध्ययन मे करुँगा।

4 कुतर्क नही करुगा, जिज्ञासा का सरलतापूर्वक समाधान प्राप्त करुँगा।

5 अपनी गलती को सरलता से स्वीकार करुँगा। यह बहुत बड़ा तप है।

6 मादक नशीली वस्तु और जर्दा, गुटका, भाग, गाजा आदि का सेवन नही करुगा।

7 विविध खेल व्यायाम, भाषण, सगीत आदि के प्रति रुचि रखूँगा।

8 किसी की वस्तु को नही चुराऊँगा एव झूठ, कपट, हिंसा से दूर रहूँगा।

9 माता-पिता गुरुजनो को आदर दूगा एव उनकी आज्ञा मानूगा।

10 सस्था की सम्पत्ति अपनी समझकर उपयोग करुँगा। नष्ट नही करुँगा।

11 कोई भी वस्तु कही भी मिलने पर कक्षा अध्यापक जी को सौपूँगा।

12 प्रतिदिन शौच आदि के बाद मजन करुँगा।

13 व्यवहार शुद्धि एव दूसरो के प्रति आदर आदर्श विद्यार्थी के लक्षण है।

अभिभावकगणों से अपेक्षा

1 अपने होनहार बालको को धार्मिकशाला मे नियमित भेजे।

2 उनके अध्ययन हेतु घर पर भी ध्यान देवे।

3 शाला मे भेजने से पूर्व देख ले कि उनकी पाठ्यसामग्री उनके साथ में है या नही। उनके शरीर पर वस्त्र साफ सुथरे हैं या नही।

4 समय-समय पर धार्मिक शालाओ का अवलोकन करें।

5 सस्कार निर्माण हेतु आपके कोई सुझाव हो तो शाला मे देवे।

णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स

समाज के दिलचस्प उत्साही सक्रिय महानुभावो से अपेक्षा—

1 समाज के बालक को अपना बालक समझे।

2 ये बालक समाज के भावी कर्णधार हैं।

3 आप इनके प्रति अपना कर्तव्य निभाएँ।

4 समाज द्वारा सचालित पाठशालाओं और लगने वाले शिविरों मे अपने अमूल्य समय का योगदान देकर निरीक्षण करे।

5 बालको के सस्कार निर्माण में आपका अमूल्य मार्गदर्शन एव सहयोग (तन, मन, धन) अपेक्षित है।

6 समय-समय पर (महावीर जयन्ती, अक्षय तृतीया आदि) विशेष आयोजन कर बालको के उत्साह में वृद्धि करें।

आध्यात्मिक प्रतिज्ञा

1 सिद्ध शिला मेरा देश है।

2 अरिहत सिद्ध मेरे भगवान है।

3 पच महाव्रत के पालक आचार्य उपाध्याय साधु साध्वी मेरे गुरु हैं।

4 अरिहन्त देव की आज्ञा मेरा धर्म है। मैं अपने धर्म से प्रेम रखता हूँ।

5 मेरे धर्म की समृद्ध एव वैविध्यपूर्ण परम्परा का मुझे गर्व है।

6 मेरी नस नस मे जैनत्व की श्रद्धा सदा से है और रहेगी।

7 मैं नियमित रूप से धर्म स्थानक एव जैन पाठशाला में जाऊँगा।

8 मैं सभी जीवो के प्रति मैत्री भाव रखूगा। गुणवानों के प्रति प्रमोद भाव रखूगा।

9 मै दुखी जीवो पर अनुकपा भाव रखूगा। विपरीत विचारो के प्रति माध्यस्थ भाव रखूगा।

10 मैं अपने माता पिता एवं गुरुजनो के प्रति सदा विनयी रहूँगा।

11 मेरी भावना है कि ससार त्याज्य है और सयमपूर्वक मोक्ष आदरणीय है।

उद्देश्य

अपने बच्चों को आदर्श बनावें

बादल बिना नहीं बरसात। सत्संग बिना नहीं उत्थान॥

आज समाज मे टीवी, विडियो का आतरिक प्रदूषण बहुत बढ गया है। इस वजह से पाठशालाएँ मृत प्राय बन गई है। आज का बालक भावी परिवार समाज और राष्ट्र की नीव है। नीव की सुदृढता पर ही भवन की मजबूती है। बालक के सस्कार निर्माण का कार्य उसके गर्भ मे आते ही शुरू हो जाता है। जन्मने और बडे होने पर वह अपने आस-पास के वातावरण से भी सस्कार ग्रहण करता है। माता-पिता, शिक्षक, अभिभावक के प्रत्येक आचरण और व्यवहार ही इन नन्हे-मुन्ने प्यारे बालको का विद्यालय एव पाठ्यक्रम है। वह बालक को गुलाब भी बना सकता है और बबूल भी। अमृत भी बन सकता है और जहर भी। उनके मस्तिष्क मे अनुराग भी पैदा कर सकता है और आग भी।

बालक भावी समाज का विधाता है। नव समाज का कर्णधार है। उसे प्रारभ मे जैसे सस्कार मिलेगे वैसा ही उसका जीवन निर्मित होगा। अत बालको को प्रारभ से ही शुद्ध सात्विक समतामय जीवन जीने की कला मे योग्य बनाने के सस्कार देने की महती आवश्यकता है। जिससे उसका जीवन सही अर्थो मे नैतिक, धार्मिक मूल्यों पर प्रतिष्ठित हो सके।

आज के युग की यही माग व पुकार है।

शिविर के नियम

1 ग्रीष्मकालीन शिविर 9, 11, 13 या 15 दिन के लगते हैं।

2 अन्य अवकाश के शिविर 3, 5, 7 या 9 दिन के लगते हैं।

3 धार्मिक शालाओ के नियमित बच्चो को प्राथमिक प्रवेश।

4 बच्चो को पूर्व प्रदत्त किताबे आदि साथ मे लाना आवश्यक।

5 शिविर गुप्तदानदाताओं के तन, मन, धन के सहयोग से लगते है।

बच्चों को धार्मिक पाठशाला भेजना आवश्यक

बालक का जीवन कलाकार (कुम्हार) की उस गीली मिट्टी के समान है जिसके द्वारा वह चाहे तो दीया बना सकता है, गमला बना सकता है घडा बना सकता है, चाहे तो राम की मूर्ति और चाहे तो रावण का बुत, इसी प्रकार कृष्ण अथवा कस, युधिष्ठर या दुर्योधन, भगवान महावीर, बुद्ध या हिटलर तैमूर लग, आदि की मूर्ति भी बना सकता है, लेकिन वह तभी तक बना सकता है जब तक मिट्टी गिली है अथवा सामग्री कच्ची है। एक बार परिपक्व होने पर एड़ी से चोटी तक का जोर लगाने पर भी घडे को गमला अथवा गमले को दीया नही बनाया जा सकता।

ऐसा ही जीवन होता है बालको का। जैसे जैसे सस्कार उनमे डाले जाते है वैसा ही उनका भविष्य बनने वाला होता है। यदि इस छोटी उम्र मे माता-पिता ने लापरवाही की तो आज के गदे और भौतिक वातावरण मे फिर उसे सभालना आसान काम नही है। चारो ओर इसानियत को लूटने के लिए भयकर लुटेरे दिन दहाडे मुह फाडे खडे हैं। जैसे कि सिगरेट, बीड़ी तम्बाकू, शराब, अडे, मास, जर्दा-गुटका, लाटरी (जुआ) आदि का विज्ञापन खुले रूप में टीवी, सिनेमा, अखबारो, पत्र पत्रिकाओं एव बडे बड़े विज्ञापन बोर्डो के माध्यम से खूब बडा चढ़ा कर किया जा रहा है। नन्हा-मुन्ना कोमल बालक उचितानुचित तो नहीं समझ पाता वह जैसा देखता-सुनता है, वैसा ही ढलता जाता है। बालक के जीवन की सुसस्कारी बनाने के लिए उन्हे धार्मिक इसानियत के नाते प्रत्येक धार्मिक बधु का यह सर्वप्रथम कर्तव्य है कि स्थान स्थान पर बाल सस्कार पाठशालाएँ खुलवाये व तन, मन से सहयोगी बने।

धार्मिक शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थी के नियम

1 सोने से पूर्व, उठने के बाद एव भोजन के पूर्व 5 नवकार मत्र गिनें।

2 घर मे माता-पिता वड़ो को तथा गुरुजनो को नियमित प्रणाम करे।

3 पाठशालाओ में आते ही जय जिनेन्द्र कहें।

4 पाठशाला मे सभी को 'जी' लगाकर सम्बोधित करें।

5 पाठशाला मे सामायिक अथवा सवर में बैठे।

6 अपनी पुस्तको की सुरक्षा रखकर शाला मे लावे।

ग्रीष्मावकाश एवं बाल अभिरुचियाँ

ग्रीष्मावकाश होते ही बच्चे खाली हो जाते हैं। न स्कूल, न होमवर्क, न किताब, कापियों से माथा पच्ची। वे गरमी मे सिर्फ इधर उधर भागते फिरेगे या मनोरजन के नाम पर गिल्ली डडा और गोलियॉ खेलेगे या भूत-प्रेत की जासूसी उपन्यास, डरावनी कहानियॉ या कामिक्स पढते रहेगे। वे इनसे निष्क्रिय होकर उदासीन हो जाते हैं या आपस मे मारपीट शैतानी शरारते कर घर वालो को परेशान करेगे। वे यह नही समझते कि छुट्टियो का उपयोग कैसे करें।

माता-पिता की सजगता बच्चो को सक्रियता प्रदान करेगी उनको अध्ययन के वातावरण से जुड़ी रखेगी। बच्चों की रुचि जानकर उन्हे रचनात्मक कार्य जैसे धार्मिकता, आध्यात्मिकता, निर्भीकता, स्वदेश प्रेम और मेहनत के कार्य सीखने हेतु अच्छे साहित्य अथवा शिविरो के माध्यम सुलभ कराये जाने चाहिए ताकि बच्चे पूरे ग्रीष्मावकाश मे व्यस्त रहकर निडर एव साहसी बन सकते है। उन्हे एक निश्चित दिनचर्या एव नियमितता की प्रेरणा दे।

आज के परिप्रेक्ष्य मे युवको का खान-पान एव रहन-सहन कैसा हो रहा है। यह सर्वविदित है। युवक वर्ग तो क्या वृद्ध भी बड़े-बडे शहरों की ऐसी होटलों में शौक से जाते हैं जहा शाकाहारी मासाहारी भोजन बनता है। जैन समाज के सामूहिक भोजन भी वही दिये जाते हैं। यह सब क्या है?

सस्कारो के अभाव और सगति के प्रभाव से ही हम देखते हैं कि आजकल जैन समाज में अधिकाशत जहा देखो वहा भैरू भवानी चडी आदि की पूजा अर्चना हो रही है। जो अरिहत सिद्ध की उपासना हेतु सामायिक प्रतिक्रमण आदि करते हैं उनको क्या ऐसा करना शोभा देता है। उत्तर—नही।

उन सब दृष्टिकोणो से ही शिवरो एव जैन पाठशालाओ के माध्यम से बालको को सस्कार दिए जाने का प्रयास किया जा रहा है।

समाज के उदार व्यक्ति इन कार्यों मे अपना तन, मन, धन से सक्रिय सहयोग दे रहे हैं जिसका लाभ समाज को पूर्ण रूप से उठाकर बालको मे सुसस्कार निर्मित करना चाहिए जिसके मार्गदर्शन हेतु संस्कार मार्गदर्शक भाग 1 पूर्व मे प्रकाशित की गई। यह भाग 2 प्रकाशित किया जा रहा है।

संस्कार मार्गदर्शक
श्री जैन धार्मिक शिक्षण संस्कार योजना
त्रैमासिक पाठ्यक्रम

क्र.	वर्ग	व्यावहारिक शिक्षा	सामायिक	अर्थ प्रश्नोत्तर	प्रति-क्रमण	अर्थ प्रश्नोत्तर	25/67 बोल	अर्थ प्रश्नोत्तर	भक्तामर	मेरी भावना	प्रार्थना	श्लोक	गाथाए	नाम	जानकारी	कहानी	निबन्ध
१	२	३	४		५		६		७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
१	नर्सरी	कक्षा ५ तक	तस्स उत्तरी तक	तिखुत्तो तक	—		३ बोल तक	—	१	१	१	–	—	२४ तीर्थंकर			
२	प्रथम	कक्षा ५ तक	करेमि भते तक	तिखुत्तो तक	—		७ बोल तक	३ बोल प्रश्नोत्तर	२	२	२	–	—	२४ तीर्थंकर सप्त कुव्यसन	—	—	—
३	द्वितीय	कक्षा १० तक	सामायिक पूर्ण	तस्स उत्तरी तक	—		१३ बोल तक	५ बोल तक	६	३	३	२	—	२४ तीर्थंकर सप्त कुव्यसन ११ गणधर	—	भ. महावीर का सामान्य परिचय	—

वर्ग	व्यावहारिक शिक्षा	सामायिक	अर्थ प्रश्नोत्तर	प्रति-क्रमण	अर्थ प्रश्नोत्तर	25/67 बोल	अर्थ प्रश्नोत्तर	भक्तामर	मेरी भावना	प्रार्थना	श्लोक	गाथाए	नाम	जानकारी	कहानी	निवन्ध
२	३	४		५		६		७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
तृतीय	कक्षा १२ तक	सामायिक पूर्ण ३२ दोष	करेमि भते तक	अरिहतो महदेवो तक		१६ बोल तक	८ बोल तक	१०	५	४	४	—	२४ तीर्थंकर, सप्त कुव्यसन ११ गणधर १६ सती	सामायिक का महत्त्व	भ. म. का सामान्य परिचय राजा मेघरथ	सामायिक
चतुर्थ	कक्षा ७ से ऊपर	सामायिक विधि	सम्पूर्ण	इच्छामि खमा-समणो तक		२० बोल तक	११ वोल तक	१५	७	५	६	—	२४ तीर्थंकर सप्त कुव्यसन ११ गणधर १६ सती + २० विरहमान	सामायिक + धार्मिक पाठशाला का महत्त्व	भ. म. का सामान्य परिचय राजा मेघरथ	धार्मिक पाठशाला का शुभारम्भ
पचम	कक्षा ७ से ऊपर	सामायिक विधि	सम्पूर्ण	१२ अणुव्रत तक	स्थूल तक	सम्पूर्ण	१५ बोल तक	२५	९	६	८	—	२४ तीर्थंकर सप्त कुव्यसन ११ गणधर १६ सती + २० विरहमान + १२ चक्रवर्ती	सामायिक + धार्मिक पाठशाला व शिविर का महत्त्व	भ. म. का सामान्य परिचय राजा मेघरथ	धार्मिक शिविर का समापन

क्र.	वर्ग	व्यावहारिक शिक्षा	सामायिक	अर्थ प्रश्नोत्तर	प्रति-क्रमण	अर्थ प्रश्नोत्तर	25/67 बोल	अर्थ प्रश्नोत्तर	भक्तामर	मेरी भावना	प्रार्थना	श्लोक	गाथाए	नाम	जानकारी	कहानी	निबन्ध
१	२	३	४		५		६		७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
७	षष्ठ	कक्षा ८ से ऊपर	सपूर्ण विधियुक्त सार्थ ३२ दोष	सपूर्ण विधि सहित	५ पद की वदना तक	अणुव्रत तक	सपूर्ण ६७ बोल के नवबोल	२० बोल	३५	सपूर्ण	७	१०	७	२४ तीर्थंकर सप्त कुव्यसन ११ गणधर १६ सती + २० विरहमान + १२ चक्रवर्ती	यदि मैं धार्मिक पाठशाला का अध्यापक होता	चदनवाला पूर्णिया श्रावक सती सुभद्रा	धार्मिक शाला एव शिविर शुभारभ समापन
८	सप्तम	कक्षा ८ से ऊपर	सपूर्ण विधियुक्त सार्थ ३२ दोष	सपूर्ण विधि सहित	सम्पूर्ण	सम्पूर्ण	सम्पूर्ण	सम्पूर्ण	सम्पूर्ण	सपूर्ण	८	१०	९	२४ तीर्थंकर सप्त कुव्यसन ११ गणधर १६ सती + २० विरहमान + १२ चक्रवर्ती ९ बल्देव ९ वासुदेव	यदि मैं धार्मिक शिविर का सचालक होता	चदनवाला पूर्णिया श्रावक सती सुभद्रा	धार्मिक शाला एव शिविर शुभारंभ समापन
९	अष्टम	कक्ष ९ से ऊपर				सम्पूर्ण	सम्पूर्ण		तत्वार्थ सूत्र २ अध्याय	दशवै-कालिक सूत्र २ अध्याय	९	१४	९	२४ तीर्थंकर सप्त कुव्यसन ११ गणधर १६ सती + २० विरहमान + १२ चक्रवर्ती ९ प्रतिवासुदेव ९ बलदेव ९ वासुदेव	यदि मैं धार्मिक शिविर का सचालक होता	९ कहानी से शिक्षा प्रश्नोत्तर	चाय धूम्रपान रात्रि भोजन गुटका चुटकी

वर्ग	व्यावहारिक शिक्षा	सामायिक	अर्थ प्रश्नोत्तर	प्रति-/क्रमण	अर्थ प्रश्नोत्तर	25/67 बोल	अर्थ प्रश्नोत्तर	तत्त्वार्थ सूत्र	दशवै-कालिक	प्रार्थना	श्लोक	गाथाएं	नाम	जानकारी	कहानी	निबन्ध
२	३	४		५		६		७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
नवम	कक्षा ९ से ऊपर	सामायिक सार्थ सविधि ३२ दोष युक्त	सपूर्ण	प्रति-क्रमण सार्थ सविधि	सपूर्ण	सपूर्ण	सपूर्ण	२ अध्याय कठस्थ	२ अध्याय कठस्थ	९	१४	९	६३ श्लाध्य पुरुष २० विहरमान १६ सती ११ गणधर १० श्रावक	जैन धर्म की वर्तमान समय में उपयोगिता	९ कहानी से शिक्षा प्रश्नोत्तर	चाय धूम्रपान रात्रि भोजन गुटका चुटकी
दशम	कक्षा १० से ऊपर	सामायिक सार्थ सविधि ३२ दोष युक्त	सपूर्ण	प्रति-क्रमण सार्थ सविधि	सपूर्ण	सपूर्ण	सपूर्ण	४ अध्याय कठस्थ	४ अध्याय कठस्थ	१०	१४	९	६३ श्लाध्य पुरुष २० विहरमान १६ सती ११ गणधर १० श्रावक	जैन धर्म की वर्तमान समय में उपयोगिता	क्षमा नम्रता सरलता अकिचनता पर अपने विचार	मासाहार-शराब और शाकाहार-दूध में से किसे अपनाए और क्यों ?
एकादस	कक्षा १० से ऊपर	सामायिक सार्थ सविधि ३२ दोष युक्त	सपूर्ण	प्रति-क्रमण सार्थ सविधि	सपूर्ण	सपूर्ण	सपूर्ण	६ अध्याय	६ अध्याय	१०	१४	९	६३ श्लाध्य पुरुष २० विहरमान १६ सती ११ गणधर १० श्रावक	सामान्य ज्ञान	तप सयम सत्य ब्रह्मचर्य पर अपने विचार	मासाहार-शराब और शाकाहार-दूध में से किसे अपनाए और क्यों ?

क्र	वर्ग	व्यावहारिक शिक्षा	सामायिक	अर्थ प्रश्नोत्तर	प्रति-क्रमण	अर्थ प्रश्नोत्तर	25/67 बोल	अर्थ प्रश्नोत्तर	तत्वार्थ सूत्र	दशवै-कालिक	प्रार्थना	श्लोक	गाथाए	नाम	जानकारी	कहानी	निबन्ध
१	२	३	४		५		६		७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
१३	द्वादस	कक्षा ११ से ऊपर	सामयिक सार्थ सविधि ३२ दोष युक्त	सपूर्ण	प्रति-क्रमण सार्थ सविधि	सपूर्ण	सपूर्ण	सपूर्ण	८ अध्याय	८ अध्याय	१०	सपूर्ण	सपूर्ण	उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन १, ९, २३	सामान्य ज्ञान	देव, गुरु धर्म पर अपने विचार	जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म
१४	त्रयोदश	कक्षा ११ से ऊपर	सामयिक सार्थ सविधि ३२ दोष युक्त	सपूर्ण	प्रति-क्रमण सार्थ सविधि	सपूर्ण	सपूर्ण	सपूर्ण	सम्पूर्ण	सम्पूर्ण				उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन १, ९, २३	सामान्य ज्ञान	अहिसा अपरिग्रह अनेकात पर अपने विचार	श्रावक के १२ व्रत ३ मनोरथ 14 नियम सागारी सथारा

प्रार्थनाएँ

(1) अरहतो को नमस्कार

अरहन्तो को नमस्कार, श्री सिद्धो को नमस्कार।
आचार्यों को नमस्कार, उपाध्यायो को नमस्कार।
जग मे जितने साधुगण हैं, उन सबको बन्दू बार-बार
अरहन्तो को नमस्कार, श्री सिद्धो को नमस्कार।

(2) अरहंत जय जय

अरहत जय जय, सिद्ध प्रभु जय जय।
साधु जीवन जय जय, जिन धर्म जय जय ॥1 ॥
अरहत मगल, सिद्ध प्रभु मगल।
साधु जीवन मगल, जिन धर्म मगल ॥2 ॥
अरहत उत्तम, सिद्ध प्रभु उत्तम।
साधु जीवन उत्तम, जिन धर्म उत्तम ॥3 ॥
अरहत शरण, सिद्ध प्रभु शरण।
साधु जीवन शरण, जिन धर्म शरण ॥4 ॥
चार शरण दु ख हरण जगत मे, और न शरणा कोई होगा।
जो भव्य प्राणी करे आराधन, उनका अजर अमर पद होगा ॥5 ॥

(3) महावीर भगवान

महावीर भगवान, तुमको लाखो प्रणाम।
तीस वर्ष में दीक्षा लेकर, बड़ी बडी बाधाए सहकर।
डिगे नही भगवान, तुमको लाखों प्रणाम ॥1 ॥
ब्रह्मज्ञान फिर सहज सुहाया, जीवो को उपदेश सुनाया,
ऐसे त्रिशला नन्दन, तुमको लाखो प्रणाम ॥2 ॥
हम सब बालक शरण तुम्हारी, तारो प्रभु यह विनय हमारी।
प्यारे धर्म दुलारे, तुमको लाखो प्रणाम ॥3 ॥
दीन दु खी के सदा सहारे, महावीर हैं देव हमारे,
करते सविनय वन्दन, तुमको लाखों प्रणाम ॥4 ॥

(4) सेवो सिद्ध सदा जयकार

सेवो सिद्ध सदा जयकार, जासे होवे मगलाचार ॥टेर ॥
अज अविनाशी अगम अगोचर, अमल अचल अविकार,
अन्तर्यामी त्रिभुवन स्वामी, अमित शक्ति भण्डार ॥1 ॥
कर पणट्ठ कमट्ठ अट्ठ गुण, युक्त मुक्त ससार ।
पायो पद परमेष्ठी तास पाद, बन्दू बारम्बार ॥2 ॥
सिद्ध प्रभु को सुमिरण जग मे, सकल सिद्धि दातार,
मनवाछित पूरण सुरतरु सम, चिंता चूरण हार ॥3 ॥
जपे जाप योगीश रात दिन, ध्यावे हृदय मझार,
तीर्थकर हु प्रणमे उनको, जब होवे अणगार ॥4 ॥
सूर्योदय के समय भक्तियुत, स्थिर चित्त दृढ़ता धार,
जपे सिद्ध यह जाप तास घर, होवे ऋद्धि अपार ॥5 ॥
सिद्ध स्तुति यह पढे भाव से, प्रतिदिन जो नरनार,
सो दिव शिव सुख पावे निश्चय, बना रहे सरदार ॥6 ॥
माधव मुनि कहे सकल सघ में, बढे हमेशा प्यार,
विद्या विनय विवेक समन्वित, पावे प्रचुर प्रचार ॥7 ॥

(5) (A) गुरुदेव नमस्कार

गुरुदेव तुम्हे नमस्कार बार बार है,
श्री चरण शरण से हुआ जीवन सुधार है ।
अज्ञान तम हटाके ज्ञान ज्योति जगा दी,
दृढ आत्म ज्ञान में, अखड दृष्टि लगा दी ॥
उपदेश सदाचार सकल, शास्त्र सार है ॥ 1 ॥ गुरुदेव
विधियुक्त सिर झुकाके, कर रहे है वदना,
अव हो रही मगलमयी सद्भाव स्पदना ॥
माधुर्य से मिटा रहे, मन का विकार है ॥ 2 ॥ गुरुदेव
यह है मनोरथ नित्य रहे, सत चरण मे,
अतिम समय समाधि मरण चार शरण मे ।
यह सूर्य चद्र मोक्ष मार्ग मे विहार है ॥ 3 ॥ गुरुदेव

(5) (B) मिलता है सच्चा सुख

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणो मे।
यह विनती है पल-पल, क्षण क्षण, रहे ध्यान तुम्हारे चरणो मे ॥1 ॥
चाहे वैरी सब ससार बने, चाहे मौत गले का हार बने।
चाहे जीवन मुझ पर भार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणो मे ॥2 ॥
चाहे काटों पे मुझे चलना हो, चाहे अग्नि मे मुझे जलना हो।
चाहे छोड के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणो मे ॥3 ॥
चाहे सकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारो ओर अधेरा हो।
पर मन ना डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणो मे ॥4 ॥
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम ये आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणो मे ॥5 ॥

(6) उठ भोर भई

उठ भोर भई टुक जाग सही, भज वीर प्रभु-भज वीर प्रभु।
अब नीद अविद्या त्याग सही, भज वीर प्रभु-भज वीर प्रभु ॥ 1 ॥
जग जाग उठा तू सोता है, अनमोल समय क्यू खोता है।
तू काहे प्रमादी होता है, भज वीर प्रभु-भज वीर प्रभु ॥ 2 ॥
यह समय नही है सोने का, है वक्त पाप मल धोने का।
अरु सावधान चित्त होने का, भज वीर प्रभु-भज वीर प्रभु ॥ 3 ॥
तू कौन कहा से आया है, अब गमन कहा मन भाया है।
टुक सोच यह अवसर पाया है, भजवीर प्रभु-भजवीर प्रभु ॥4 ॥
रे चेतन चतुर हिसाब लगा, क्या खाया खरचा लाभ हुवा।
निज ज्ञान जगा तू सभाल हिया, भजवीर प्रभु-भजवीर प्रभु ॥5 ॥
गति चार चौरासी लाख रुला, यह कठिन कठिन शिव राह मिला।
अब भूल कुमार्ग विषे मत जा, भजवीर प्रभु-भजवीर प्रभु ॥6 ॥

7. नवकार मत्र है महामत्र

नवकार मत्र है महामन्त्र, इस मन्त्र की महिमा भारी है।
आगम मे कथी गुरुवर से सुनी, अनुभव मे जिसे उतारी है ॥1 ॥ नवकार ..
अरहताण पद पहला है, अरि आरति दूर भगाता है।
सिद्धाण सुमिरण करने से, मनवाछित सिद्धि पाता है ॥
आयरियाण तो अष्ट सिद्धि, नवनिधि के भडारी है ॥2 ॥ नवकार .
उवज्झायाण अज्ञान तिमिर हर, ज्ञान प्रकाश फैलाता है।
सव्व साहूण सब सुखदाता, तन मन को स्वच्छ बनाता है ॥
पद पाच के सुमिरण करने से, मिट जाती सकल बीमारी है ॥3 ॥ नवकार
श्रीपाल सुदर्शन मयणरहा, जिसने भी जपा आनद पाया।
जीवन के सूने पतझड में, नव फूल खिले सौरभ छाया ॥
मन नदनवन मे रमण करे, यह ऐसा मगलकारी है ॥4 ॥ नवकार .
नित नई बधाई सुने कान, लक्ष्मी वरमाला पहनाती।
अशोक मुनि जय विजय मिले, चित्त की प्रसन्नता बढ जाती ॥
सत्कार मिले सन्मान मिले, भव जलसे नैय्या तारी है ॥5 ॥ नवकार

8. वीर हिमाचल

वीर हिमाचल से निकसी, गुरु गौतम के श्रुत कुण्ड ढरी है।
मोह महाचल भेद चली, जग की जडता सब दूर करी है ॥
ज्ञान पयोदधि माहि रली, बहुभग तरगन ते उछरी है।
ता शुचि शारद गग नदी, प्रति मै अजली निज शीष धरी है ॥
ज्ञान सुनीर भरी सलिला, सुरधेनु प्रमोद सुखीर निधानी।
कर्म की व्याधि हरत सुधा, अघमैल हरत शिवाकर मानी ॥
जैन सिद्धान्त की ज्योति बढी, सुरवृक्ष समान महासुखदानी।
लोक अलोक प्रकाश भयो, मुनिराज बखानत है जिनवानी ॥
[illegible] देव विषै मघवा, उडुवृन्द विषै शशि मगलकारी।
भूप संमूह विषै भरतेश्वर, केशव योध विषै अनुहारी ॥
नागन मे धरणेन्द्र बड़ो, चमरेन्द्र असुरन में अधिकारी।
त्यो जिन शासन सघ विषै, मुनिराज दिपै श्रुत ज्ञानभडारी ॥
कैसे करी केतकी कणेर एक कह्यो जाय,
आक दूध गाय दूध अतर घणेर है।

रीरी होत पीरी पण होश करे कचन की,
कहा काग वाणी कहा कोयल की टेर है ॥
कहा भानुतेज भयो आगियो बिचारो कहा,
पूनम को उजवालो कहा अमावस अँधेर है ।
पक्ष छोड पारखी निहार एक निश्चय करी,
जैन वैन और वैन अतर घणेर है ॥
वीतराग वाणी साची मोक्ष की निशानी महा,
सुकृत की खानि ज्ञानी आप मुख बखानी है ।
इनको आराध के तिरे है अनत जीव,
सोही जहाज जान श्रद्धा मन आणी है ॥
सरधा है सारधार सरधा ही से खेवो पार,
श्रद्धा बिन जीव ख्वार, निश्चय करमानी है ।
वाणी तो घणेरी पण वीतराग तुल्य नही,
इनके सिवाय और चौरासी कहानी है ॥

9. मनाऊं मै तो

मनाऊ मै तो श्री अरहत महत ॥ टेर ॥
तरु अशोक जाको अवलोकत, शोक समूह नशत ।
सुरकृत वाणवरण के नभ से, अचित सुमन बरसत ॥1 ॥ मनाऊ
अर्ध मागधी वाणी जाकी, योजन इक पर्यत ।
सुनत अमर नर पशु हिल मिलके, समज सुबोध लहत ॥2 ॥ मनाऊ
मुनि मन सम सित चमर अमर गण, प्रमुदित ह्वै ढारत ।
स्फटिक रत्न के सिंहासन पर, त्रिजगपति राजत ॥3 ॥ मनाऊ
प्रभा वलय तम प्रलय करन हित, दिनकर सम दमकत ।
पृष्ठ भाग रहि प्रभुजी के सिर, प्रबल प्रकाश करत ॥4 ॥ मनाऊ
गगन माहि घन गर्जारव सम, दुदुभिनाद बजत ॥
तीन छत्र शिर सोहे ताते, तू त्रिभुवन को कत ॥5 ॥ मनाऊ
तव सुमिरे सुख सम्पत्ति पावे, सुर नर पद प्रणमत ।
अष्ट सिद्धि नव निधि घर प्रकटे, तेरो जो जाप जपत ॥6 ॥ मनाऊ
माधव मुनि कर जोड वीनवे, विनय सुनो भगवत ।
ऋद्धि सिद्धि बुद्धि वैभव दो, अरु दो सुख सादि अनत ॥7 ॥ मनाऊ

10. वीर जिनेश्वर

वीर जिनेश्वर सोई, दुनिया जगाई तूने।
ज्ञान की मधुर सुरीली बशी बजाई तूने ॥1 ॥
भारत की नैय्या डोली, मृत्यु आ सिर पर बोली।
स्वर्ग से आकर भगवन् पार लगाई तूने ॥2 ॥
पशुओ पर छुरिया चलती, रक्त की नदिया बहती।
करुणा के साग्र, करुणा, गगा बहाई तूने ॥3 ॥
देवों की करना पूजा, बस काम था और न दूजा।
मानव की अटल प्रतिष्ठा, जग में जताई तूने ॥4 ॥
पथो का झूठा झगडा, जनता का मानस बिगडा।
भेद सहिष्णुता की, रखी सच्चाई तूने ॥5 ॥
पापो का पक धोना, नर से नारायण होना।
अजर अमर पद की, राह दिखाई तूने ॥6 ॥

11. सच्चा भगत

सच्चा भगत बन जाऊॅ भगवान तुम्हारा अब मै ॥ टेर ॥
क्रोध निकट नही आने देऊॅ, शस्त्र अचूक क्षमा का लेऊॅ।
दूर ही मार भगाऊँ, भगवान् .।
सतगुणी जन सब मिल जावें, मदमत्सर नही मन में आवे।
सादर शीश झुकाऊँ, भगवान् ।
सत्य शख का नाद बजाऊॅ, उथल पुथल की क्राति मचाऊँ।
सोया जगत जगाऊॅ, भगवान् ।
न्याय मार्ग से मुख नहीं मोडू, स्वीकृत प्रण को कभी न छोडू।
कर्तव्य पथ बलि जाऊॅ, भगवान् ।
प्राणी मात्र को अपना भाई, मानू सबकी चाहू भलाई।
सेवा ही मत्र बनाऊॅ, भगवान् ।
ऊॅच नीच का भेद न मानू, गुण पूजा का महत्त्व पिछानू।
व्यक्ति न व्योम चढाऊॅ, भगवान् ।
करुणानिधि वर। करुणा कीजे, आत्मिक बल कुछ ऐसा दीजे।
अजर अमर बन जाऊँ, भगवान् तुम्हारा अब मै ॥7 ॥

12. प्रतिज्ञा

हम सब करे प्रतिज्ञा, अब नियम से रहेगे।
सच्चे हृदय से कहते, हम प्रेम से रहेंगे॥ टेर ॥
हम सब है बहन भाई, जैसी है दोनों ऑखे।
पछी को जैसी प्यारी, होती है दोनों पाखे॥
डाली पे फूल खिलते, हम इस तरह खिलेगे॥1॥ सच्चे हृदय से
इक रग ढग होगा, इक धारा इक किनारा।
रेखाएँ टूट करके, एक होगा रूप प्यारा।
मिलती है गगा यमुना, ऐसे गले मिलेंगे॥2॥ सच्चे हृदय से .
चमकेगा वीर शासन, नेतृत्व एक होगा।
एक शिक्षा दीक्षा होगी, चौमासा एक होगा।
विचरण आलोचनाएँ, आचार्य एक देगे॥3॥ सच्चे हृदय से .
अनुशासन एक और इक अनुशासता हमारे।
चलना कदम मिलाकर, उनके जो हो इशारे।
हम भी करेंगे वैसा, आचार्य जो कहेगे॥4॥ सच्चे हृदय से . .
साधु और साध्वी जी, श्रावक व श्राविकाएँ।
आबाल वृद्ध सारे, आज्ञा में धर्म मानें॥
असहयोग होगा उनसे, विपरीत जो चलेगे॥5॥ सच्चे हृदय से
होगा न तेरा मेरा, जो होगा सब हमारा।
गूजेगा सब दिशा मे, हम एक हैं का नारा॥
बूदो के मेल से ही, जीवन हिलोर लेगे॥6॥ सच्चे हदृय से
सम्पत्ति समाज के हित, हम सब करें समर्पण।
शिव सुख तभी मिलेगा, कहता है जैन दर्शन।
जो राग द्वेष त्यागे, वे ही सुखी बनेंगे॥7॥ सच्चे हृदय से

13. महावीर के सिपाही

महावीर के हम सिपाही बनेगे, जो रक्खा कदम वह न पीछे धरेगे ॥ टेर ॥
सिखा देगे दुनिया को, शाति से रहना। अहिंसा की बिजली, नसो मे भरेगे ॥1 ॥
लगावेगे मरहम, जो होवेगे जख्मी। सुखी करके जग को, स्वय दु ख सहेगे ॥2 ॥
कही जुल्म दुनिया मे, रहने न देगे। अगर सर कटेगा, खुशी से मरेगे ॥3 ॥
घुड़दौड मे जग के, न पीछे रहेगे। कसेगे कमर और, आगे बढेगे ॥4 ॥
अहिंसा के सेवक है, हम वीर सच्चे। धर्म युद्ध में हम, खुशी से लड़ेगे ॥5 ॥
हमे वीर सुख दु ख की, परवा नही है। अहिंसा का झडा, फहरा के रहेगे ॥6 ॥

14. जय क्षमाश्रमण

जय क्षमा श्रमण। अब हम अपराध खमाएँ ॥ टेर ॥
हे सद्गुरु। तब चरणो मे शीश नमाएँ।
जय क्षमा श्रमण, अब हम अपराध खमाएँ ॥
हमने भव भव मे जीव अनत सताए।
धर्मातिक्रात मिथ्या उपचार लगाए ॥
निज निंदा कर अब विधिवत् विषय वमाएँ ॥1 ॥ जय क्षमा श्रमण
श्री चरण शरण मे प्रतिक्रमण करना है।
मन वच काया का सारा मल हरना है ॥
कल्याणमार्ग मे श्रद्धा शुद्ध जमाएँ ॥2 ॥ जय क्षमा श्रमण
निर्वाध चल रही क्या सयम की यात्रा।
[illegible] आत्मभाव की बढती रहती मात्रा ॥
हम भी स्वरूप मे अपना चित्त रमाएँ ॥3 ॥ जय क्षमा श्रमण
हैं आप महाव्रत समिति गुप्तिधारी।
सतुष्ट जितेन्द्रिय शुद्धाचार विहारी ॥
इन परम पवित्र गुणो मे आप समाएँ ॥4 ॥ जय क्षमा श्रमण

शास्त्रीय गाथाएँ

1 धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो।
देवावि त नमसति, जस्स धम्मे सयामणो ॥ (दश 1 1)

भावार्थ

अहिंसा सयम और तप रूप धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। जिस व्यक्ति का इस प्रकार के धर्म मे सदा मन लगा रहता है, देवता भी उसे नमस्कार करते हैं।

2 जे य कते पीए भोए, लद्धे विपिट्ठि कुव्वइ।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइत्ति वुच्चइ ॥ (दश 2-3)

भावार्थ

प्राप्त कात प्रिय भोगो से जो व्यक्ति मुह फेर लेता है, और अपने स्वाधीन भोगो को त्याग देता है, वही त्यागी कहलाता है।

3 अप्पा चेव दमेयव्वो अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दतो सुही होई, अस्सि लोए परत्थ य ॥ (उतरा 1-15)

भावार्थ

अपने स्वय को वश मे करना चाहिए, निश्चय ही अपने मन और इन्द्रियों को वश मे करना बहुत कठिन है। जो स्वय पर नियत्रण कर लेता है वह इस लोक और परलोक मे सुखी होता है।

4 वर मे अप्पा दतो, सजमेण तवेण य।
माह परेहिं दम्मतो बधणेहिं वहेहिंय ॥ (उतरा 1-16)

भावार्थ

मुझे स्वय ही सयम और तप के द्वारा अपने पर नियत्रण करना श्रेष्ठ है। यदि ऐसा नही कर सका तो नरक मे या पशु योनि मे अन्य लोग बधन और वध के द्वारा मेरे को वश मे करेगे।

5 अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मितममित्त च, सुपट्ठिओ, दुपट्ठिओ ॥ (उतर 20-37)

भावार्थ

मैं स्वय ही अपने दु खो और सुखों का कर्ता हू और इनको मैं स्वय ही दूर करने वाला हू। श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वाला मैं ही मेरा मित्र हू और कुमार्ग पर चलने वाला मैं ही मेरा शत्रु हूँ।

6 जो सहस्स सहस्साण, सगामे दुज्जए जिणे।
एग जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ॥

भावार्थ

युद्ध क्षेत्र में लाखों योद्धाओ को जीतना बड़ा कठिन काम है। पर उससे भी अधिक कठिन तो अपने मन और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना है। जो मन और इन्द्रियो को जीत लेता है वही विजय सर्वश्रेष्ठ है।

7 जहाकिपाग फलाण, परिणामो न सुदरो।
एव भुताण भोगाण, परिणामो न सुदरो॥ (उत्तरा. सूत्र)

भावार्थ

जैसे किंपाक (मीठे और सुदर जहरीले) फलो को खाने का परिणाम सुन्दर नही होता वैसे ही भोगे हुए क्षणिक इन्द्रिय विषयों का भी परिणाम सुन्दर नही होता है।

8 खणमेत्त सोक्खा बहुकाल दुक्खा, पगामदुक्खा अणिगाम सोक्खा।
ससार मोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाणउ कामभोगा॥ (उ सूत्र)

भावार्थ

काम भोग क्षणमात्र सुख और बहुत समय तक दु ख देने वाले हैं अर्थात् और बहुत दु ख देने वाले हैं। ये ससार से उदासीन आत्मा के क्षी हैं और अनर्थों की खान हैं।

सल्ल कामा विस कामा, कामा आसी विसोवमा।
कामे य पत्थे माणा य, अकामा जति दोग्गइ॥ (उ सूत्र)

भावार्थ

काम भोग सल्य है, विष है। जहरीले सर्प के समान जहरीले हैं। इनकी (काम भोग की) चाह करने वाला उनका सेवन न करते हुए भी दुर्गति मे जाता है।

मंगलाचरण के श्लोक (भावार्थ सहित)

वरमेको गुणी पुत्रो, न च मूर्खा शतान्यपि ।
एकश्चन्द्र तमो हति, न च तारागणेऽपि च ।।1 ।।

भावार्थ

जैसे करोड़ो तारो की अपेक्षा एक ही चन्द्रमा रात्रि के अधकार को नष्ट कर देता है, वैसे ही सैकड़ो मूर्ख पुत्रो की अपेक्षा एक गुणवान पुत्र श्रेष्ठ है जो कुल की शोभा बढ़ाता है ।

लालयेत् पचवर्षाणि, दशवर्षाणि ताड़येत् ।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्र मित्र वदाचरेत् ।।2 ।।

भावार्थ

बालको का पाच वर्षो तक लालन पालन करें, दस वर्षो तक सभी प्रकार से शिक्षित करे और सोलह वर्ष की उम्र हो जाने पर उनके साथ मित्र की तरह व्यवहार करे ।

माता शत्रु पिता वैरी, याभ्या बालो न पाठित ।
न शोभते समा मध्ये, हस मध्ये बको यथा ।।3 ।।

भावार्थ

वे माता पिता शत्रु है, दुश्मन हैं जिन्होंने अपने बालकों को आध्यात्मिक सस्कार नही दिये । क्योकि ऐसे बालक, सज्जनो की सभा मे उसी तरह शोभा नही पाते जैसे हसों के बीच मे बगुला (सफेद रग होने पर भी) शोभा नही पाता ।

शैले शैले न माणिक्य, चदन न वने वने ।
साध्वो न हि सर्वत्र, मौक्तिक न गजे गजे ।।4 ।।

भावार्थ

जैसे सभी पर्वतों पर हीरे पन्ने माणक मोती नही मिलते, सभी वनों मे चन्दन नही मिलता, सभी हाथियों को मस्तक पर गज-मुक्ता नही मिलते, वैसे ही सत सब जगह नही मिलते ।

यत्र गुर्वस्तु पूज्यते, यत्र धान्य सुसस्कृतम् ।
अदन्त कलहो यत्र, शक्रस्तत्र वसाम्यहम् ॥5 ॥

भावार्थ

लक्ष्मी इन्द्र से कहती है—हे इन्द्र । मेरा निवास वही होता है जहा बड़ो की पूजा, आदर सत्कार होता है, जहा खानपान शुद्ध और पवित्र होता है जहा लडाई झगडा नही होता है ।

सर्वेऽत्र सुखिन सतु, सर्वे सतु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यतु, मा कश्चिद् दु ख भाग्भवेत् ॥6 ॥

भावार्थ

ससार के सभी प्राणी सुखी हो, सभी स्वस्थ हो, सभी सबको सरल नम्र देखे । किसी को किसी प्रकार का कष्ट न हो । ऐसा चिन्तन सभी को होना चाहिए ।

अज्ञानतिमिरान्धाना, ज्ञानाजन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलित येन, तस्मै श्री गुरुवे नम ॥7 ॥

भावार्थ

जिन्होने अज्ञान रूप अधकार से अधे बने प्राणियो की आखें ज्ञान रूपी अजन शलाका द्वारा उघाड दी (खोल दी) उन गुरुदेव को मेरा नमस्कार हो ।

राग द्वेष विजेतार, ज्ञातार विश्व वस्तुन ।
शक्र पूज्य गिरामीश, तीर्थेश स्मृति मानये ॥8 ॥

भावार्थ

जिन्होने राग द्वेष पर विजय प्राप्त कर ली है, जिन्होने ससार के सभी पदार्थो को जान लिया है । जो इन्द्रों से पूजित हैं, जिनको वाणी पर अधिकार है, उन तीर्थ के स्वामी का मैं स्मरण करता हूँ ।

मगल भगवान वीरो, मगल गौतम प्रभु ।
मगल स्थूलिभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मगलम् ॥9 ॥

भावार्थ

भगवान महावीर, गौतम स्वामी, स्थूलिभद्रादि महापुरुष और जैन धर्म मगलमय है।

सर्व मगल मागल्य, सर्व कल्याण कारकम्।
प्रधान सर्व धर्माणा, जैन जयतु शासनम् ॥10 ॥

भावार्थ

सभी मगलो मे श्रेष्ठ, सभी का कल्याण करने वाला, सभी धर्मो मे प्रधान जैन शासन जयवत हो।

अर्हतो भगवत इन्द्र महिता, सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता।
आचार्या जिन शासनोन्नतिकरा, पूज्या उपाध्यायका ॥
श्री सिद्धात सुपाठका मुनिवरा, रत्नत्रयाराधका।
पचैते परमेष्ठिन प्रतिदिन, कुर्वन्तु नो मगलम् ॥11 ॥

भावार्थ

इन्द्रों के द्वारा पूजनीय अरिहत भगवत, सिद्ध क्षेत्र मे विराजमान सिद्ध भगवत्, जिन शासन की उन्नति करने वाले आचार्य, पूज्य उपाध्याय, श्री सिद्धान्त पाठी मुनिवर जो ज्ञान, दर्शन, चरित्र की आराधना करते है। ये पाच परमेष्ठि प्रतिदिन हमारा मगल करे।

वीर. सर्व सुरासुरेन्द्र महितो, वीर बुधा सश्रिता।
वीरेणाभिहत स्व कर्म निचया वीराय नित्य नम ॥

वीरात्तीर्थमिद प्रवृत्तमतुल, वीरस्य घोर तपो।
वीरे श्री धृति कीर्ति काति निचया, श्री वीर। भद्र दिश ॥12 ॥

भावार्थ

भगवान महावीर सुर-असुर के इन्द्रो द्वारा पूजनीय हैं। केवल ज्ञानी भगवान महावीर को, जिनके द्वारा अपने कर्म नष्ट किए गए, मेरा नित्य नमस्कार हो। यह विस्तृत तीर्थ भगवान महावीर के द्वारा प्रवर्ताया है। भगवान महावीर

की घोर तपस्या है उनमे श्री, धैर्य कीर्ति और काति का समूह है। ऐसे हे भगवान महावीर ! सरल एव कल्याणमय दिशा दर्शन हमें देवें।

ब्राह्मी चदनबालिका भगवती, राजीमती द्रौपदी।
कौशल्या च मृगावती च सुलसा, सीता सुभद्रा शिवा ॥
कुती शीलवती नलस्य दयिता, चूला प्रभावत्यपि।
पद्मावत्यपि सुदरी दिन मुखे, कुर्वन्तु नो मगलम् ॥13 ॥

भावार्थ

ब्राह्मी, चन्दनबाला, भगवती, राजीमती, द्रौपदी, कौशल्या, मृगावती, सुलसा, सीता, सुभद्रा, शिवादेवी, कुती, शीलवती, नलराजा की धर्मपत्नी दमयती, चेलना, प्रभावती, पद्मावती और सुदरी जी प्रतिदिन हमारा मगल करें।

सत्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोद, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्व।
माध्यस्थ भाव विपरीत वृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातुदेव ॥14 ॥

भावार्थ

हे प्रभो ! सभी प्राणियो से मैत्री भाव, गुणीजनो मे प्रमोद भाव, दु खी जीवो पर कारुण्य भाव, विपरीत वृत्ति वालो पर माध्यस्थ भाव, मेरी आत्मा सदैव इन भावों को धारण करे।

सृष्टि कर्तृत्व मीमांसा

कर्तावादी कहे जीव का, कर्ताहर्ता परमेश्वर।
सृष्टि को रच जीव बनाए, इसमें सदेह पड़े नजर ॥
अगर रची सृष्टि ईश्वर ने, फिर क्यो अतर दिया है डाल।
एक सुखी एक दुखी बनाया, एक धनी निर्धन कगाल ॥
ऊच नीच क्यो पुरुष बनाए, एक दयालु एक चाडाल।
सब जीवो पर समदृष्टि क्यो, रहा न इसका कहिये हाल ॥
अगर कहो अपने भक्तो को, वह रखता हरदम खुशहाल।
करे बुराई जो ईश्वर की, उसे देत दु ख अति विकराल ॥
तो खुशामदी हुवा ईश है, बड़ा दोष यह करिये ख्याल।
अगर कहो अनुसार कर्म के, देता है सुख दु ख धनमाल ॥
तब तो यह बतलाओ जीव के, सग कर्म लगे क्यो कर।
सृष्टि को रच जीव बनाए, इसमे सदेह पड़े नजर ॥1 ॥
जब ईश्वर ने प्रथम जीव को, पैदा किया जगत के माह।
उस दम कर्म जीव के सग मे, लगे हुवे थे या कि नाह।
अगर कहोगे कर्म सग थे, यह तो बात हुई बे राह।
किये कर्म बिन कर्म कहा से, लगे जीव क्यो हुआ तबाह ॥
अगर कहोगे कर्म नही थे, सग जीव के जनमत वार।
फिर यह आए कर्म कहा से, इसका बतलाओ विस्तार ॥
किए कर्म क्यो पैदा ईश ने, करे जीव को जो लाचार।
कोप जीव पर किया ईश ने, क्यो सुख दु ख यह दीन्हा डार ॥
झूठ बात यह हुई सरासर मन में समझो जरा चतुर।
सृष्टि को रच जीव बनाए, इसमे सदेह पड़े नजर ॥2 ॥
अगर कर्म अनुसार दण्ड दे, रचता जीव बीच ससार।
पैदा करी दड दे गणिका, जो नितकरे भोग व्यभिचार ॥
खूब दिया यह दड ईशने, भ्रष्ट करे जग मे नरनार।
अगर कहो स्वाधीनपने से, करती है गणिका यह कार ॥
है पूरण सर्वज्ञ ईश तो, तीनकाल की जाने बात।
तब क्यो रची देह गणिका की, जब उसको था इतना ज्ञात ॥
होकर के स्वाधीन ये गणिका, भ्रष्टाचार करे जग बीच।

तब तो दोष हुआ ईश्वर को, किया जान कर करतब नीच ॥
ईश्वर के स्वाधीनपने मे, लगे दोष अब सुनो जिकर।
सृष्टि को रच जीव बनाए, इसमे सदेह पडे नजर ॥3 ॥
दुष्ट लोग जीवो को मारकर, बेरहमी से हरते प्राण।
किये ईश ने क्यों ये पैदा, जब उसको था इतना ज्ञान ॥
अगर कहोगे घाती द्वारा, दड लहे है जीव अजान।
आज्ञा से इधर की अपने कर्मों का फल भोगे आन ॥
जब धातक ने ईश्वर की, आज्ञा से कीना जीव सहार।
फिर क्यों उनको दोष लगावे, पापी दुष्ट कहे ससार ॥
जैसे किसी धनी घर चोरी, करी चोर धन लियो अपार।
धनी पुरुष के कर्म योग से करवाई चोरी करतार ॥
दड मिला निर्दोष चोर को, था ईश्वर का दोष मगर।
सृष्टि को रच जीव बनाए, इसमे सदेह पड़े नजर ॥4 ॥
अगर कहोगे धाती नर का, है अपराध बात ले मान।
फिर क्यो पैदा किए ईश ने, पापी जन चडाल महान ॥
अगर जानकर इन्हे बनाए, तब ईश्वर चडाल सम्मान।
अगर किये बिन जाने पैदा, तब तो है मुरख नादान ॥
हुआ नष्ट सर्वज्ञ पना अब, रक्षक पन पर करिये गौर।
जब करता है जग की रक्षा, तब क्यो कीन्हे ठग अरु चोर।
अगर कहोगे खान पानका, यही किया चोरो के तौर।
फिर क्यो पहरेदार बनाए, फिरे जगाते कर कर शोर।
तब तो दगाबाज है ईश्वर, जब करता यह कपट मगर।
सृष्टि को रच जीव बनाए, इसमें सदेह पडे नजर ॥5 ॥
अरु यह भी कहते हो ईश्वर, सबके घट मे रहा है व्याप।
जब ईश्वर घट घट का वासी, फिर तो आप करे पुन पाप।
आप ही ईश्वर पाप करे है, जग जीवो को दे सताप।
यह अन्याय है प्रकट रीति से उसको तो मानोगे आप ॥
और दूसरे जब घट घट मे, ईश्वर का प्रकाश निवास।
फिर स्वाधीन जीव है कैसे, हरदम रहे ईश जब पास।
सच अरु झूठ कपट छल जग मे, पाप पुण्य जितने व्यौहार।
सभी कराता है परमेश्वर, जीव करे होकर लाचार।

करे ईश अरु भरे जीव दुख, यह ईश्वर मे बडी कसर।
सृष्टि को रच जीव बनाए, इसमे सदेह पडे नजर ॥6 ॥
घट घट व्यापी जब परमेश्वर, तब मेरे घट वास जरूर।
मगर ईश के कर्तापन का, मैं खडन करता भरपूर ॥
तब तो अपना खुद वह खडन करे मेरा नही जरा कसूर।
अगर मेरा कसूर कहो तब, रहे नही ईश्वर का नूर ॥
फिर कहते हो निराकार है, जिसका नही कोई आकार।
मगर बिना आकार रचे क्या, वस्तु दिल मे करो विचार ॥
अगहीन नर क्या कर सकता, हाथ पैर बिन जब लाचार।
है अचरज की बात बिना, आकार रचे ईश्वर ससार ॥
ऐसी झूठी बात को माने, नही कोई भी ज्ञानी नर।
सृष्टि को रच जीव बनाए, इसमें सदेह पडे नजर ॥7 ॥
फिर कहते हो परमेश्वर का, ज्योति स्वरूप सदा सुखकार।
निराकार पन नष्ट हो गया, जब उसका है रूप आकार ॥
सर्वशक्ति नही रही ईश मे, जब सब जीव हुवे स्वाधीन ॥
सर्वज्ञान नही रहा ईश मे, नही दयालु करो यकीन ॥
नही रहा घट-घट का व्यापी, समदृष्टि भी रहा न ईश।
रक्षकपन नही रहा ईश में, निर्विकार भी नही जगदीश ॥
जो जो गुण तुम वर्णन करते, कर्तापन मे रहे न एक।
नही जीव का कर्ता ईश्वर, ज्ञानी लोगो करो विवेक ॥
ईश्वर होता महादोषी, उसको कर्ता कहो अगर।
सृष्टि को रच जीव बनाए, इसमें सदेह पडे नजर ॥8 ॥
एक बात का और गुणीजन, जरा ध्यान से करिये ख्याल।
ईश्वर ने रच करके सृष्टि, क्यो सर अपने धरा बबाल ॥
अपने सुख आनद में उसने, व्यर्थ फिकर क्यो लीना डाल।
हुआ फायदा क्या ईश्वर को, फैलाया यह माया जाल ॥
अगर कहोगे ईश्वर ने रच, जग को हुन्नर बताया है।
मै हू ऐसा बली गुणीजन, मेरी ही सब माया है ॥
तब तो हून्नर उन्हे दिखाया, खुद ही जिन्हे वनाया है।
बड़ा घमण्डी मानी है जो, जग का जाल बिछायाहै।
किस कारण से दुनिया को रच, किया ईश ने प्रकट हुन्नर ॥

सृष्टि को रच जीव बनाए, इसमे सदेह पड़े नजर ॥9 ॥
कर्तापन का कहा हाल अब, हर्तापन का सुनो जिकर ।
अपने हाथ बनाकर वस्तु, नही हरे कोई ज्ञानी नर ॥
अगर चतुर नर किसी वस्तु को, बना बनादे खडित कर ।
उसे कहे सब मूरख दुनिया, यह तो आती साफ नजर ।
लिखकर साफ ईबारत को जो, मेटे अपने हाथ बसर ।
समझो उसको गलत ईबारत, या कुछ उसमे रही कसर ।
कहो जीव रचने मे ईश ने, गलती की या भूलाडगर ।
या मुरखपन किया ईशने, हरे जीव पैदा कर कर ।
नही ईश्वर हरे किसी को, दोष लगाओ उसके सर ।
सृष्टि को रच जीव बनाए, इसमे सदेह पड़े नजर ॥10 ॥
करो झूठ अरु सच का निर्णय, पक्षपात को तज गुणवान ।
कर्तापन में परमेश्वर के, होता है सब भ्रष्ट जहान ॥
ईश्वर के सर दोष लगा अति, पापी कपटी अरु नादान ।
तुम ईश्वर को दोष लगाओ, फिर बनते हो भक्त महान ।
अरे भाई जो कर्म करोगे, उसका फल भोगोगे आप ।
कहे शास्त्र सुत करे भरे सुत, बाप करे सो भोगे बाप ।
भक्ति के कारण से ईश्वर, नही माफ करता है पाप ।
दोष लगाओ मत ईश्वर को, वरना भोगोगे सताप ॥
पक्षपात को तजकर ज्ञानी, यही बात लो हृदय धर ।
सृष्टि को रच जीव बनाए, इसमें सदेह पडे नजर ॥11 ॥
है नही ईश्वर कर्ता हर्ता, जगत जीव का आदि न अत ।
निज निज कर्म योग से सुख दु ख, पावे जीव जगत भ्रमत ॥
नही ईश कुछ दड देत हैं, नही ईश कुछ करत हरत ।
राग द्वेष से रहित मोक्ष मे, अजर अमर ईश्वर भगवत ॥
पाप करे सो लहे जीव दु ख, पुण्य करे सुख लहे अपार ।
पाप पुण्य के नाश करे पर, वीतरागपन है सुखकार ॥
समझन कारण गुणी जनो के, ये काफी है चद सतर ।
सृष्टि को रच जीव बनाए, इसमे सदेह पड़े नजर ॥12 ॥

जैन तत्त्व ज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1 सामायिक किसे कहते है ?

उत्तर जिसके द्वारा समभाव की प्राप्ति हो ऐसी क्रिया को तथा समभाव की प्राप्ति को सामयिक कहते है।

प्रश्न 2 समभाव की प्राप्ति कैसे होती है ?

उत्तर विषम भाव को छोडने से।

प्रश्न 3 विषमभाव किसे कहते है ?

उत्तर सावद्य योग को।

प्रश्न 4 सावद्य योग किसे कहते है ?

उत्तर अट्ठारह पाप तथा अट्ठारह पाप के व्यापार को

प्रश्न 5 अट्ठारह पाप विषमभाव क्यो है ?

उत्तर 1 आत्मा के स्वभाव को समभाव कहते है तथा 2 आत्मा का स्वभाव जिससे प्राप्त हो, उसे भी 'समभाव' कहते है। 1 जिसके आत्मा का स्वभाव ढके तथा 2 जिसके समभाव की प्राप्ति मे विघ्न हो, उसे 'विषमभाव' कहते है।

प्रश्न 6 करण किसे कहते है ?

उत्तर योग की क्रिया को 1 करना 2 कराना और 3 करते हुए का अनुमोदन करना अर्थात् भला जानना ये तीन करण है।

प्रश्न 7 योग किसे कहते है ?

उत्तर करण के साधन को 1 मन 2 वचन और 3 काया—ये तीन 'योग' है ?

प्रश्न 8 क्या सामायिक का नियम जीवन भर तक के लिए और तीन करण, तीन योग से नही किया जा सकता है ?

उत्तर किया जा सकता है। इस प्रकार नियम लेने को दीक्षा कहा जाता है।

प्रश्न 9 दीक्षा मे और सामायिक मे क्या अन्तर है ?

उत्तर अठारह पाप इन नव प्रकारो से होता है 1 मन से करना, 2 कराना और 3 अनुमोदन करना 4 वचन से करना 5 कराना और 6 अनुमोदन करना 7 काया से करना 8 कराना और 9 अनुमोदन करना। इन नव प्रकारो को 'नवकोटि' कहते हैं। दीक्षा मे 18 पापो

का नवकोटि से प्रत्याख्यान करना पडता है सामयिक में छह कोटि या आठ कोटि से प्रत्याख्यान करना पडता है। छह कोटि मे तीसरी छठी और नवमी ये तीन कोटिया खुली रहती है तथा आठ कोटि मे मन से अनुमोदन की एक तीसरी कोटि खुली रहती है।

दीक्षा जीवन भर के लिए ही होती है, जबकि सामयिक इच्छानुसार एक मुहूर्त उपरान्त आदि के लिए होती है।

प्रश्न 10 प्रतिक्रमण किसे कहते है ?

उत्तर अतिचार से या पाप से लौटना, पुन धर्म मे आना।

प्रश्न 11 निन्दा किसे कहते है ?

उत्तर 1 अल्परूप से निन्दा करना, 2 अट्ठारह पाप कर्मो की एक साथ निन्दा करना, 3 एक बार निन्दा करना, 4 आत्मसाक्षी से निन्दा करना।

प्रश्न 12 गर्हा किसे कहते है ?

उत्तर विशेष रूप से निन्दा करना 2 एक-एक पाप की भिन्न भिन्न निन्दा करना 3 बारम्बार निन्दा करना 4 देव या गुरु की साक्षी से निन्दा करना।

प्रश्न 13 सामायिक से क्या लाभ है ?

उत्तर 1 अट्ठारह पाप छूटते है 2 समभाव की प्राप्ति होती है 3 एक घडी साधु-सा जीवन बनता है। 4 जैसे खुले समय में बडे पशु, पक्षी, मनुष्य आदि की दया और रक्षा की भावना होती है, वैसे ही सामायिक में छोटे से छोटे जीवो की भी दया और रक्षा करनी चाहिए ऐसी भावना उत्पन्न होती है और दृढ बनती है। 5 ससार के कार्य करते हुए अरहन्तो की वाणी सुनने वाचने का अवसर कठिन रहता है, सामयिक करने से अरहन्तो की वाणी सुनने वाचने का अवसर मिलता रहता है। 6 सामयिक पौषध आदि व्रत मे रहे हुए श्रावक श्राविकाओं की सेवा का लाभ मिलता है इत्यादि सामयिक से बहुत लाभ है।

प्रश्न 14 अतिचार किसे कहते है ?

उत्तर व्रत की तीसरे दोष को। व्रत भग करने का विचार होना अतिक्रम है। साधनो को जुटा लेना 'व्यतिक्रम' है। व्रत को भग करने को अतिचार कहते है। तथा व्रत को सर्वथा भग कर देना 4 अनाचार है। ये सब व्रत के दोष है।

प्रश्न 15 दुष्प्रणिधान किसे कहते है ?

उत्तर मन, वचन या काया के योग को अशुभ प्रवृत्ति मे लगाना तथा अशुभ प्रवृत्ति मे एकाग्र बनाना 'दुष्प्रणिधान' है।

प्रश्न 16 सुप्रणिधान किसे कहते हैं ?

उत्तर मन, वचन या काया के योग को शुभ प्रवृत्ति मे लगाना या शुभ प्रवृत्ति मे एकाग्र बनाना 'सुप्रणिधान' है।

प्रश्न 17 सामायिक स्मृति न रखने का क्या भाव है ?

उत्तर 1 सामायिक का प्रत्यख्यान लेना ही भूल जाना 2 अभी मै सामयिक मे हूँ यह भूल जाना 3 'मैंने सामायिक कब ली' 4 'कितनी ली' यह भूल जाना। 5 वर्ष मे या 6 महीने मे इतनी सामायिक करुगा इस प्रकार लिए हुए प्रत्याख्यान का भूल जाना इत्यादि।

प्रश्न 18 सामायिक को अनवस्थित करने का क्या भाव है ?

उत्तर 1 सामायिक विधि से न लेना। 2 विधि से न पारना। 3 सामायिक का काल पूरा होने से पहले पारना। 4 सामायिक से ऊबना। 5 सामायिक कब पूरी होगी — इस प्रकार विचार करना, बार-बार घडी की ओर देखते रहना। 6 वर्ष मे या महीने में जितनी सामयिके करने का प्रत्याख्यान किया, हो उतनी सामयिके न करना 7 सामायिक जिस समय प्रात सध्या, पक्षी (पक्खी) आदि को करने का नियम लिया हो उस समय न करना इत्यादि।

प्रश्न 19 इच्छाकारेण के पाठ का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर आलोचना का पाठ।

प्रश्न 20 इसे आलोचना का पाठ क्यो कहते है ?

उत्तर इससे जीव-विराधना की आलोचना की जाती है, इसलिए।

प्रश्न 21 विराधना किसे कहते है ?

उत्तर जीवो को दु ख पहुँचाने वाली क्रिया को तथा 2 जीवो को दु ख पहुँचाना।

प्रश्न 22 क्या चलने से ही विराधना होती है ?

उत्तर नही। उठने से, वैठने से, हाथ-पॉव पसारने से, सिकोडने से आदि क्रियाओ से भी जीव-विराधना होती है।

प्रश्न 23 क्या किसी के मन को दुखाना तथा कटुवचन बोलना विराधना नही है ?

उत्तर है। इसलिए किसी का मन दुखे ऐसा काम भी नही करना चाहिए तथा ऐसी वाणी भी नही बोलनी चाहिए। इस पाठ मे (इच्छाकारण) में यद्यपि शरीर को कष्ट पहुँचाने से होने वाली 10 प्रकार की विराधना का ही 'मिच्छामि दुक्कड' दिया है (कहा है), पर इससे मन वचन की विराधना का मिच्छामि दुक्कड भी समझ लेना चाहिए।

प्रश्न 24 क्या 'मिच्छामि दुक्कड' कहने से ही पाप निष्फल हो जाता है (धुल जाता) है ?

उत्तर नही। बिना मन केवल जीभ से कहने से पाप निष्फल नही हो जाता। मन के पश्चाताप् के साथ कहने से अवश्य ही निष्फल होता है। अत मिच्छामि दुक्कड मन के पश्चाताप के साथ कहना चाहिए।

प्रश्न 25 तस्स उत्तरी का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर उत्तरीकरण का पाठ

प्रश्न 26 इसे उत्तरीकरण का पाठ क्यो कहते है ?

उत्तर इससे आत्मा को विशेष उत्कृष्ट बनाने के लिए कायोत्सर्ग की प्रतिज्ञा की जाती है, इसलिए।

प्रश्न 27 प्रायश्चित किसे कहते है ?

उत्तर जिससे पाप कटकर आत्मा शुद्ध बने तथा 2 पाप कटकर आत्मा का शुद्ध बनना।

प्रश्न 28 विशुद्धि किसे कहते है ?

उत्तर अच्छे परिणामो से (विचारों से) आत्मा का विशेष शुद्ध बनना।

प्रश्न 29 शल्य (मोक्ष-मार्ग) के काटे कितने है ?

उत्तर तीन हे 1 माया शल्य (क्रोध, मान, माया, लोभ) 2 निदान शल्य धर्मकरणी के अलावा फल चाहना) 3 मिथ्यादर्शन शल्य (मिथ्यात्व)।

प्रश्न 30 आगार किसे कहते है ?

उत्तर प्रत्याख्यान (पच्चक्खाण) मे रहने वाली 1 मर्यादा तथा 2 छूट को।

प्रश्न 31 कायोत्सर्ग मे आगार क्यो रखे जाते है ?

उत्तर क्योकि जीव-रक्षा आदि के लिए कायोत्सर्ग बीच मे छोडना पड़ता है तथा 2 कायोत्सर्ग मे खासी आदि रोके नही जा सकते।

प्रश्न 32 ध्यान पारने का पाठ बताइये।

उत्तर कायोत्सर्ग मे आर्त्त-ध्यान या रौद्र-ध्यान ध्याया हो या धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान न ध्याया हो, कायोत्सर्ग मे मन-वचनकाया चलित हुई हो तो 'तस्स मिच्छामि दुक्कड'।

प्रश्न 33 लोगस्स का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर चतुर्विशति स्तव का पाठ।

प्रश्न 34 'लोक का उद्योत करने वाले' का भाव क्या है?

उत्तर विश्व का ज्ञान करने वाले।

प्रश्न 35 यहा कीर्तन किसे कहा है?

उत्तर मन से 1 नाम स्मरण करने को और 2 गुण स्मरण करने को।

प्रश्न 36 यहा वन्दन किसे कहा है?

उत्तर मन से 1 नाम स्तुति को और 2 गुण स्तुति करने को।

प्रश्न 37 यहा पूजन किसे कहा है?

उत्तर पूज्य मानकर (स्मरणीय और स्तवनीय मानकर) काया (पचाग नमाकार) से नमस्कार करना।

प्रश्न 38 कीर्तन तथा वन्दन से क्या होता है?

उत्तर 1 ज्ञान बढता है। जैसे गुणो के स्मरण तथा स्तुति से यह ज्ञान होता है 1 कि कौन से गुणो वाला देव सच्चा देव हो सकता है तथा नामो के स्मरण एव स्तुति से यह ज्ञान होता है कि ऐसे गुणो वाले सच्चे देव कौन हुए? 2 श्रद्धा बढ़ती है। जैसे — इन गुणो वाले देव ही सच्चे देव है तथा इन नामों वाले देव ही सच्चे देव हुए। 3 नये पाप-कर्म बधते हुए रुकते है क्योकि मन से स्मरण चलने से मन मे आहारादि की सज्ञाए उत्पन्न नही होती तथा वचन से स्तुति होती रहने पर वचन से स्त्री आदि विकथाएँ नही होती। 4 पुण्य बधते है क्योकि स्मरण मन का शुभ योग है तथा स्तुति वचन का शुभ योग है। 5 पुराने पाप — कर्म क्षय होते है क्योकि स्मरण तथा स्तुति, स्वाध्याय तथा धर्म-ध्यान रूप है।

प्रश्न 39 लोगस्स मे तीर्थकरो को जो अरिहन्त है, उन्हें सिद्ध भी क्यो कहा?

उत्तर 1 ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय ये आठ कर्मों में चार मुख्य कर्म है। इनको नष्ट कर देने से तीर्थकरो का आत्मकल्याण का काम प्राय सिद्ध हो चुका है इसलिए 2 वर्तमान की अपेक्षा तो वे सिद्ध है ही।

प्रश्न 40 क्या तीर्थकर किसी पर प्रसन्न होते है?

उत्तर नही, क्योक वे राग-द्वेष रहित होते है।

प्रश्न 41 क्या तीर्थकर किसी को सम्यक्त्व और चारित्र देते है तथा किसी को मोक्ष दिखाते है?

उत्तर नही। तीर्थकर तो केवल सम्यक्त्व और चारित्र का उपदेश ही देते है इनका धारण तो जीव अपनी योग्यता जगने पर ही करता है तथा स्वय पुरुषार्थ करके ही मोक्ष जाता है।

प्रश्न 42 तब 'तीर्थकर बोधि तथा समाधि दे, मोक्ष दिखावे' ऐसी प्रार्थना क्यो की जाती है?

उत्तर इसलिए कि ऐसी प्रार्थना से वे हमे सम्यक्त्व तथा चारित्र का उपदेश देते हैं उनके उपदेश से हममे योग्यता जगती है और हम सम्यकत्व तथा चारित्र ग्रहण करते हैं इसलिए उनके उपदेश के अनुसार सम्यकत्व तथा चारित्र का पालन करके ही जीव मोक्ष देखते है इसलिए उनके उपदेश देने को ही 'मोक्ष दिखाना' माना गया है।

प्रश्न 43 इसे दृष्टान्त देकर स्पष्ट कीजिए?

उत्तर जैसे वैद्य तो केवल औषधि बताता है। औषधि खरीद कर लेना और खाकर निरोग बनने का काम रोगी ही करता है, परन्तु ये दोनों काम 'वैद्य औषधि बतावे' उसके बाद होते है। इसलिए कहा जाता है कि वैद्य ने औषधि दी और आरोग्य दिलाया। इसी प्रकार तीर्थकर तो केवल उपदेश देते है, उसे धारण करना और कर्म काट कर मुक्ति देखने का काम जीव ही करता है। परन्तु ये दोनो काम तीर्थकर के उपदेश से होते है इसलिए कृतज्ञता के कारण कहा यही जाता है कि तीर्थकर सम्यक्त्व तथा चारित्र देते है तथा मोक्ष दिखाते है।

प्रश्न 44 क्या तीर्थकरो की प्रार्थना से सासारिक पदार्थ जैसे पत्नी, पुत्र, धन, घर आदि मिल सकते है?

उत्तर हा।

प्रश्न 45 तो क्या सासारिक पदार्थो को तीर्थकर देते है?

उत्तर नही। किन्तु उनकी प्रार्थना से प्रसन्न होकर तीर्थकरो के भक्त देव सासारिक पदार्थ देते है या अपने आप सासारिक पदार्थ मिलते है।

प्रश्न 46 क्या तीर्थकरो से सासारिक पदार्थ की प्रार्थना करना उचित है?

उत्तर नही। लोगस्स मे की गई प्रार्थना के समान मोक्ष की पात्रता आये, सम्यकत्व जागे चारित्र धारण हो, मोक्ष प्राप्त हो—ऐसी ही प्रार्थना करनी चाहिए।

प्रश्न 47 यदि कोई सासारिक प्रार्थना करता हो, तो?

उत्तर करना छोड दे। न छोड सके तो सासारिक प्रार्थना को दुर्बलता समझे और धार्मिक प्रार्थना को ही सच्ची प्रार्थना समझे।

प्रश्न 48 तीर्थकर चन्द्रो से अधिक निर्मल कैसे है?

उत्तर चन्द्र मे कुछ कलक (कालापन) दिखता है पर तीर्थकरो में चार घाति कर्म—रूप कलक नही होता, इसलिए वे चन्द्रों से अधिक निर्मल है।

प्रश्न 49 तीर्थकर सूर्यो से अधिक प्रकाश करने वाले कैसे?

उत्तर सूर्य कुछ ही क्षेत्र तक प्रकाश करता है, पर तीर्थकर अपने केवल ज्ञान से सब क्षेत्रो को जानते है और प्रकाशित करते है। इसलिए तीर्थकर सूर्यो से अधिक प्रकाश करने वाले है।

प्रश्न 50 'करेमि भते' कब बोला जाता है?

उत्तर सामायिक लेते समय लोगस्स पढ लेने के पश्चात् वन्दना करके।

प्रश्न 51 नमोत्थुण कब बोला जाता है?

उत्तर सामायिक लेते समय 'करेमि भते' से सामायिक लेने के बाद तथा पारते समय लोगस्स के बाद।

प्रश्न 52 इस पाठ का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर शक्रस्तव का पाठ।

प्रश्न 53 इसे शक्रस्तव का पाठ क्यो कहते है?

उत्तर पहले देवलोक के इन्द्र, जिनका नाम शक्र है, वे भी इसी नमोत्थुण से अर्हतो व सिद्धो की स्तुति करते है, इसलिए इसे 'शक्रस्तव' कहा जाता है।

प्रश्न 54 अर्हतो और सिद्धो की स्तुति (स्तव) कैसे करनी चाहिए?

उत्तर जैसे कि लोगस्स या नमोत्थुणॅ मे की गई है अर्थात् उन्होने दीक्षित बनकर जो तप किये और गुण प्राप्त किये, केवली बनकर जो उपकार किये मोक्ष पहुँचकर जो सुख प्राप्त किये — उन्ही कार्यो की स्तुति करनी चाहिए परन्तु उन्होने ससार मे रहते जो कुछ सासारिक कार्य किये उसकी स्तुति नही करनी चाहिए।

प्रश्न 55 नमोत्थुण पढ़ने से क्या लाभ है ?

उत्तर लोगस्स पढ़ने से जो लाभ है प्राय वे ही लाभ ‘नमोत्थुण’ से भी होते है क्योकि दोनो मे तीर्थकरो का कीर्तन, वन्दन और पूजन किया जाता है।

प्रश्न 56 लोगस्स और नमोत्थुण मे क्या अन्तर है ?

उत्तर लोगस्स मे प्रधान रूप से 1 नाम स्मरण, 2 नाम स्तुति, 3 नमस्कार और प्रार्थना है तथा नमोत्थुण मे 1 गुण स्मरण 2 गुण स्तुति और 3 नमस्कार है।

प्रश्न 57 जबकि लोगस्स और नमोत्थुण दोनो समान लाभ वाले है, तब दोनो की क्या आवश्यकता है ?

उत्तर 1 नाम स्मरण, नाम स्तुति, प्रार्थना, गुण — स्मरण, गुण स्तुति, नमस्कार आदि सभी भक्ति के विविध रूप है। सभी रूपों से की गई भक्ति, सर्वागीण होती है अत लोगस्स, नमोत्थुण दोनो आवश्यक है। 2 सभी की आत्माएँ समान नही होती। किसी की नाम स्मरण और नाम — स्तुति रूप भक्ति मे विशेष तल्लीनता होती है, तो किसी की प्रार्थना मे विशेष तल्लीनता होती है किसी की गुण स्मरण और गुण स्तुति मे विशेष तल्लीनता होती है तो किसी की नमस्कार मे विशेष तल्लीनता होती है। इनमे से ये कोई भी भक्त भक्ति के लाभ से वचित न रहे, इसलिए भी लोगस्स तथा नमोत्थुण दोनों आवश्यक है। 3 कोई नाम-स्मरण या नाम स्तुति या प्रार्थना या गुण-स्मरण या गुण-स्तुति या नमस्कार इनमे से किसी एक ही प्रकार की भक्ति को अनुचित न बतावे इसलिए भी लोगस्स और नमोत्थुण दोनो आवश्यक है।

प्रश्न 58 सभी प्रकार की भक्ति मे कौन-सी भक्ति श्रेष्ठ है ?

उत्तर गुण-स्मरण भक्ति

प्रश्न 59 क्या इस भक्ति के सभी भक्तियो का काम चल सकता है ?

उत्तर सामान्यतया नही। कोई भक्ति अधिक लाभ कर सकती है, पर वह दूसरी भक्ति का काम नही कर सकती। इसलिए सभी भक्तियाँ करनी चाहिए।

प्रश्न 60 सामायिक मे वेश कैसे पहने या उपकरण कैसे रखे?

उत्तर निरवद्य स्थान को देखकर पूजकर वहा अपना आसन लगावे। सासारिक वेश-कुरता, टोपी, पगडी, पेन्ट, पायजामा आदि उतारे। एक लागवाली धोती लगावे। सती जी के स्थान का आगार दुपट्टा लगाना हो तो स्त्रियो के सामने निश्चित रूप से तथा अन्य समय मे भी प्राय किसी कधे या बाहु को खुला न रखते हुए दुपट्टे लगावे। मुख वस्त्रिका का प्रतिलेखन करके उसमे डोरा डालकर मुह पर बाधे। माला, पुस्तक आदि को अपने आसन पर रखे। पुजनी को पुस्तक से कुछ दूर रखे, पुस्तक पर न रखे।

प्रश्न 61 सामायिक लेने की विधि क्या है?

उत्तर सन्तो के उपाश्रय मे सामायिक करने का अवसर आवे तो विनय से पहले सन्तो को वन्दन करे, फिर वेश परिवर्तन करे। फिर पुन 1 तिक्खत्तो के पाठ के तीन बार पचाग वन्दना करे। तिक्खुत्तो से करेमि तक बोलते हुए तीन बार प्रदक्षिणावर्त करे। फिर दोनो घुटने जमीन पर टिकाकर दोनो हाथो को सीप के समान जोड़कर, मस्तक पर लगाकर वदामि से पज्जुवासामि तक का पाठ बोले। फिर पचाग झुकाते हुए 'मत्थएण वदामि' कहे। तीन बार वन्दना करके चउवीसत्थव (अलोचना आदि) की आज्ञा ले। यदि गुरुदेव न हो तो पूर्व या उत्तर दिशा मे मुह करके भगवान महावीर स्वामी को या आचार्य श्री जी को वन्दन करके। फिर यदि वडे श्रावक उपस्थित है तो उनमे 'चउवीसत्थव' की आज्ञा ले। नही तो भगवान् से ही आज्ञा ले। आज्ञा लेकर 2 नमस्कार मत्र पढे। फिर 3 इच्छाकारेण का पाठ वोलकर इर्यापथिक की आलोचना करे। फिर 4 तस्सउत्तरी बोलकर प्रायश्चित आदि के लिए कायोत्सर्ग करके कायोत्सर्ग मे इच्छाकारेण के पाठ का 'इरियावहिए विराहणाए से ववरोविया' तक का अपने मन मे चिन्तन करे। इस प्रकार कायोत्सर्ग पूर्व लोगस्स के पास से पूर्ण शुद्धि करके पूर्व प्रतिज्ञानुसार 'णमो अरहताण' कह कर कायोत्सर्ग पारे फिर णमो अरहंताण से साहूण तक एक प्रकट नमस्कार मत्र पढ़े। फिर ध्यान पारने का पाठ पढे। फिर कीर्तन के लिए चतुर्विशतिस्तव रूप 5 लोगस्स का पाठ पढे फिर वन्दन करके

गुरुदेव से या बडे श्रावक से सामायिक का प्रत्याख्यान करे या उनकी आज्ञा होने पर अथवा उनके अभाव मे भगवान् की साक्षी से स्वय 6 'करेमिभते' के पाठ से सामायिक का प्रत्याख्यान करे। पाठ मे 'जावनियम' शब्द से आगे जितनी सामायिक लेनी हो, उतने उपरान्त का कथन करे। फिर 7 दो नमोत्थुण पढ़े। सिद्ध भगवान् को दिये जाने वाले पहले नमोत्थुण मे 'ठाण सपत्ताण' तथा अरिहन्त भगवान् को दिये जाने वाले दूसरे नमोत्थुण में 'ठाण सपाविउ—कामाण' कहे। इस तरह सामायिक लेने की विधि पूरी हुई।

प्रश्न 62 खड़े रहने की विधि क्या है?

उत्तर सशक्त और कारण रहित अवस्था मे खड़े रहते समय पैरों के अगले भाग में चार अगुल तथा पिछले भाग में कुछ कम चार अगुल का अन्तर डालकर खडे रहना चाहिए। इस समय मस्तक को कुछ झुकाकर रखना चाहिए तथा दृष्टि चल न रखते हुए स्थिर रखनी चाहिए।

प्रश्न 63. खडे रहने की ऐसी मुद्रा को क्या कहते है और क्यों कहते है?

उत्तर ऐसी मुद्रा को 'जिनमुद्रा' कहते है। 1 जिनेश्वर (अरहन्त) भगवान् कायोत्सर्ग आदि इसी मुद्रा से करते हैं, इसलिए इसे 'जिनमुद्रा' कहते है। 2 इस मुद्रा से आलस्य पर विजय मिलती है। 3 मन मे दृढ़ता उत्पन्न होकर परिषहो (कष्टों) को सहने की शक्ति आती है। इसलिए भी इसे 'जिनमुद्रा' कहते है।

प्रश्न 64 हाथ जोडने की विधि क्या है?

उत्तर दोनों हाथ की अगुलियों को आपस मे फसाकर कमल की कली के आकार मे हाथ जोड़ने चाहिए और हाथो की दोनो कोहनियों को नाभि के निकट टिकाना चाहिए।

प्रश्न 65 हाथ जोड़ने की इस मुद्रा को क्या कहते है?

उत्तर इस मुद्रा को 'योग मुद्रा' कहते है। इससे देव, गुरु, धर्म, शास्त्र आत्मा जिसका भी ध्यान करना हो, उसमें तन, मन अधिक अच्छे जुड़ जाते है। इसलिए इसे 'योग मुद्रा' कहते है।

प्रश्न . 66 कायोत्सर्ग की विधि क्या है?

उत्तर कायोत्सर्ग जिनमुद्रा मे खडे होकर या पर्यकादि आसन से बैठकर करना चाहिए। परन्तु योगमुद्रा मे हाथ नही जोडना चाहिए। यदि कायोत्सर्ग जिनमुद्रा से (खड़े रहकर) करना हो तो, तो दोनो हाथो

को घुटनो की ओर लम्बे करके रखने चाहिए तथा खुले रखने चाहिए और यदि पर्यकासन (आलथी-पालथी) से करना हो तो बाये हाथ को आलथी पालथी के बीचो-बीच खुला रखना चाहिए और उसी पर दाये (जीमने) हाथ को खुला रखना चाहिए।

प्रश्न 67 सामायिक मे क्या करना चाहिए ?

उत्तर सामायिक मे सावद्य योग (अट्ठारह पाप) त्यागे जाते है, इसलिए उन्हे छोड़कर निरवद्य योग अपनाना चाहिए। विशिष्ट प्रकार का पुण्य, सवर तथा निर्जरा ये तीनो निरवद्य योग है। इनमें भी ध्यान मुख्य है। इसलिए ध्यान की ओर अधिक लक्ष्य देना चाहिए।

प्रश्न 68 धर्मध्यान करने तथा टिकाने के आलबन (उपाय) बताइये ?

उत्तर धर्म ध्यान के चार आलबन है—1 वाचना वाचना लेना अर्थात् नया तत्त्वज्ञान, नई धार्मिक कथाएँ या स्तुतिया सीखना। 2 पृच्छना पूछना अर्थात् तत्त्वज्ञान, धार्मिक कथा या स्तुतियो में जो भी शका उत्पन्न हो, उन्हे बड़ो से (ज्ञानियो से) पूछकर दूर करना तथा जिज्ञासा पूरी करना। 3 परियट्टणा परिवर्तना अर्थात् सीखा हुआ तत्त्वज्ञान, सीखी हुई कथाएँ, स्तुतिया तथा प्राप्त किया हुआ समाधान दोहराना। 4 अणुप्पेहा अनुप्रेक्षा, अर्थात् सीखे हुए तत्त्वज्ञान को, धर्म-कथाओ को, स्तुतियो तथा प्राप्त किये हुए समाधान को दुहराते हुए उस पर चिन्तन करना, बारह भावनाएँ भाना।

प्रश्न 69 सामायिक शुद्ध और उत्तम कैसे हो ?

उत्तर सामायिक के समय चारो आलबनों से धर्म-ध्यान करते रहने पर प्राय मन पाप मे नही जाता। यदि कभी चला जाये तो पुन शीघ्र उससे लौट आता है। मन पाप मे चले जाने पर तत्काल उसे धर्म से जोडने के साथ ही मिच्छामि दुक्कड देना (कहना) चाहिए। इस प्रकार करते रहने पर सामायिक नित्य अधिक शुद्ध और उत्तम होती जायेगी।

प्रश्न 70 शालाओ मे बालको को जयजिनेन्द्र कहने की प्रेरणा दी जाती है, तो ये जिनेन्द्र कौन होते है ? जिनकी जय बोली जाती है ?

उत्तर साधारण जीवन जीते हुए मानव के मन मे जब आतरिक जागृति उत्पन्न होती है तब वह ससार के पाच इन्द्रियो के विषयो से उदासीन होकर पाच अणुव्रत, पाच महाव्रतों का क्रमश आराधक होता है। आराधना का विकास होने पर वह आतरिक वृत्तियो को

उत्तर नही, किन्तु व्रत धारण करने वालो को स्थावर काय के जीवो की हिंसा से होने वाले कार्यो की मर्यादा करना चाहिये।

प्रश्न 86 इन 12 व्रतों मे यह अनर्थां दण्ड क्या होता है? अनर्था दण्ड कैसा होता है? समभाव की साधना मे उसका त्याग किस प्रकार सहायक होता है?

उत्तर गृहस्थ मे रहकर मानव इतना ही कमाता है जिससे उसका परिवार, समाज व राष्ट्र का पोषण होता चला जाए। उस व्यवसाय को करने के लिए जो आरम्भ समारभ जनित पाप क्रियाएँ करनी पडती है वे अर्थादण्ड है। प्रयोजन वश भोजन पानी बनाने खाने, खिलाने पिलाने मे जो करना पड़ता है वे सब अर्थादण्ड है। पर आधा पानी पीए आधा ढोल दे तो यह अनर्था दण्ड है। बिना प्रयोजन व्यर्थ मे जो भी कार्य, किया जाता है वह सब अनर्था दण्ड है। आज विवाह शादियो साल गिरहो पर भोजन, पानी बिजली आदि का व्यर्थ खर्च नही हो तो अरबो-खरबो रुपये की बचत हो सकती है, उनसे होने वाले पैसो का जनकल्याणर्थ सदुपयोग होना चाहिए।

प्रश्न 87 क्या शिक्षा प्रद या अनुभव बढ़ाने वाले नाटक सिनेमा टेलीविजन आदि देखना अनर्थ दड है?

उत्तर ऐसा कोई नियम नही है कि इन्हें देखने से अनर्थ दड ही होता है। पर इनके देखने से अधिकतर विषय कषाय विकथा आदि बढ़ते हैं इसलिए इनसे बचना चाहिए। फिर भी देखना चाहे तो इनकी मर्यादा कर आगार रूप मे खुला रख लेना चाहिए।

प्रश्न 88 सामायिक मे सावद्य योगों का त्याग क्यो करना पड़ता है?

उत्तर सावद्य योग (18 पाप) विषम भाव हैं। इनका त्याग करके ही समभाव की प्राप्ति करने के लिए सामायिक की साधना करनी पडती है। मन, वचन, काया से स्वय हिंसा करना नही, झूठ बोलना नही, आदि 18 पाप स्वय करना नही तथा दूसरों से करवाना नही, वही शुद्ध समभाव की प्राप्ति है।

प्रश्न : 89 दिशावगासिक व्रत किसे कहते है?

उत्तर पूर्व व्रतो मे जो जीवन भर के लिए मर्यादा की थी उनमें द्रव्य, क्षेत्र काल, भाव आदि से कमी करना तथा तिविहार उपवास कर अथवा अशनादि चारों आहार करते हुए मर्यादा पूर्वक धर्म जागरण

में समय बिताना जिसे आज की परिभाषा मे दया सवर और दसवा चौपोरिया पौषध कहते है वह दिशावकासिक व्रत कहलाता है।

प्रश्न 90 श्रावक यदि एक दिन के लिए दया व्रत (दिशावकशिक व्रत) कर भिक्षा मागकर ले आये और निर्वाह करे तो उसमे आरम्भ समारभ नही करना पड़ता, उसमे तो कोई दोष नही है।

उत्तर चिन्तन करने पर यह भली भाति ज्ञात हो जाता है कि दया मे भिक्षा वृत्ति करने पर आरम्भ सभारम्भ अधिक होता है। यदि वह घर पर भोजन करे तो घर पर तो अन्य एव उसके लिए भोजन बनता ही है वह उसमे से भोजन कर लेता है। पर दया व्रत का प्रत्याख्यान करते समय यदि वह यह छूट रखे कि भिक्षावृत्ति ग्रहण कर दया व्रत करुगा, तब सब को मालूम हो जाता है कि यह आज घर पर भोजन नही करेगा। तो वे लोग सोचते है कि यह हमारे घर पर भिक्षा के लिए आयेगा और हमारे यहा विशिष्ट भोजन नही मिलेगा तो हमारी भी प्रतिष्ठा का सवाल बन जायेगा। इसलिए अन्य कई गृहस्थ उस दयाव्रती श्रावक के लिए बहुत ज्यादा आरम्भ समारम्भ करते है। ऐसी स्थिति मे वह भिक्षावृत्ति से दया व्रत करने वाला आरम्भ सभारम्भ के दोष से बच नही सकता।

प्रश्न 91 कई व्यक्ति भिक्षावृत्ति द्वारा ही दया व्रत करना श्रेष्ठ समझे तो अनुचित क्यो है ?

उत्तर गृहस्थ में रहने वाला व्यक्ति भिक्षा देने का अधिकारी है, लेने का नहीं। भिक्षा लेने के अधिकारी तो पाच महाव्रत धारी त्यागी साधु ही होते हैं।

प्रश्न 92 भगवती सूत्र शतक बारहवें मे तो खाते-पीते पौषध व्रत का वर्णन है ?

उत्तर वहा भिक्षावृत्ति करके दया व्रत करने का वर्णन नही है वह पाठ-तएण से सखे समणोवासए ते समणोवासए एव वयासी तुण्भेण देवानुप्पिया विपुल असण पाणा खाइम साइम आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा पडिभुजेमाणा पक्खिय पोसह पडिजागरमाणा विहरिस्सामो अर्थात् श्रावस्ती नगरी के अन्य श्रावको ने शख जी से पूछा कि भगवान् यहॉ पधारे हैं। पक्खी के पर्व का प्रसग है इस दिवस को कैसे मनाया जाये तव शख जी ने उन दूसरे श्रावको से कहा कि हे देवानुप्रियो तुम विपुल मात्रा मे चारो आहार तैयार कराओ। अपन उसका आस्वादन करते हुए एक-दूसरे को आहार देते हुए भोजन करते हुए पक्खी के पाषध का अनुपालन करते हुए

दिन-रात बिताएगे। यह खाते-पीते किया जाने वाला पौषध ऐसा है जिसको वृद्ध जवान प्रौढ बालक महिलाएँ सभी कर सकती है। इसमे बहुत लाभ की सभावना है इसके माध्यम से बच्चो को प्रेरणा एव सस्कार मिलते है वे सस्कार बच्चो के जीवन विकास में सहायक होते हैं। इस प्रकार शखजी ने श्रावको को चारों आहार बनवाने को कहा। यदि दयाव्रत मे भिक्षावृत्ति की करना शास्त्र सम्मत होता तो शख जी श्रावको को कहते कि भिक्षा वृत्ति कर भोजन करेगे। अपने को दया व्रत के लिए कुछ भी करने की जरूरत नही है। पर ऐसा नही कहा।

प्रश्न 93 ग्यारहवा पौषध कितने प्रकार का है ?

उत्तर प्रतिपूर्ण पौषध चारो आहार के त्याग पूर्वक कम से कम 5 प्रहर का और अधिक समय का किया जाने वाला ग्यारहवा पौषध कहलाता है।

प्रश्न 94 सामायिक और पौषध मे क्या अतर है ?

उत्तर एक सामायिक एक मुहुर्त यानि 48 मिनिट की होती है उसमे निद्रा का त्याग होता है। जबकि ग्यारहवे पौषध मे निद्रा की छूट है और दया रूप के दशवे पौषध मे आहार भी किया जाता है। तिविहार दशवे पौषध मे आहार नही किया जाता।

प्रश्न 95 क्या साधु-साध्वी ही दान के पात्र है ?

उत्तर दान के उत्कृष्ट पात्र तो साधु-साध्वियाँ ही है। प्रतिमा धारी श्रावक व्रतधारी श्रावक व सामान्य स्वधर्मी समकिती श्रावक भी दान के पात्र हैं।

प्रश्न 96 क्या 12 वे व्रत मे दीन दुखियो को दान दिया जा सकता है ?

उत्तर दीन दुखी, अनुकम्पादान के पात्र है। उससे पुण्य बध होता है। उन्हे दान देने का इस व्रत मे निषेध नही है।

प्रश्न 97 आधाकर्म दोष किसे कहते है ?

उत्तर साधु व गृहस्थ के निमित्त से बनाया जाने वाला और खरीदकर दिया जाने वाला आहार आधाकर्मी दोष से युक्त है।

प्रश्न 98 सलेखना किसे कहते है ? इसमे और आत्मघात मे क्या अतर है ?

उत्तर सलेखना-शरीर और कषायो को कृश-कमजोर करने वाला तप सलेखना कहलाता है। इस सथारे मे शरीर का विधि पूर्वक समय

पर विसर्जन होता है। उससे ससार भ्रमण घटता है आत्मिक उन्नति होती है। आत्मघात-कषाय पूर्वक शरीर का अत आत्मघात कहलाता है। इससे आत्मिक गुणो का ह्रास होता है और ससार भ्रमण बढता है।

प्रश्न 99 प्रतिक्रमण सूत्र को आवश्यक सूत्र क्यो कहते है ?

उत्तर अनुयोग द्वार सूत्र मे कहा है कि साधु और श्रावक वर्ग को अवश्य करणीय होने से इसे आवश्यक सूत्र कहते है। यह प्रतिक्रमण सूत्र आत्मा को पुष्टिकारक है। जैसे शरीर निर्वाह के लिए भोजन, हवा, पानी आवश्यक है। वैसे ही आत्मिक शक्तियो को जागृत करने वाला होने से प्रतिक्रमण सूत्र आवश्यक कहलाता है।

प्रश्न 100 प्रतिक्रमण सूत्र के चौथे आवश्यक मे किसी किसी पुस्तक में गौचरी चर्या की पाटी व निद्रा दोष निवृत्ति की पाटी और तैतीस बोल आदि की पाटियॉ भी लिखी हुई है तो क्या श्रावक को इन्हे बोलना चाहिये।

उत्तर ज्ञान (जानकारी) करने के लिए इन्हे कभी भी पढ़ा जा सकता है पर प्रतिक्रमण करते समय श्रावक को इन्हे बोलना उपयुक्त प्रतीत नही होता, क्योकि ये भिक्षावृत्ति आदि करने वाले साधु के लिए भिक्षाचर्यादि दोषों से निवृत्ति होने के लिए उपयोगी है।

प्रश्न 101 श्रावक जब पौषध करता है तो उस समय निद्रा दोष निवृत्ति की पाटी क्यों नही बोलना चाहिये ?

उत्तर निद्रा दोष निवृत्ति की पाटी तो बहुत अधिक सोने वाला अथवा बार-बार सोने वाले साधु के लिए आलोचना रूप है। श्रावक पौषध मे धर्म जागरण करता है वह पौषध मे बहुत समय सोये या बार-बार सोये ऐसा नही लगता। कई श्रावक तो पौषध पचक्खने के पहले सामायिक ग्रहण करते है फिर पौषध ग्रहण करते है। वह सामायिक का काल पूरा न हो तब तक सोते नही, हाथ पाव लम्बा नही करते इसलिए श्रावक को निद्रा दोष लगने की सभावना कम है। श्रावक को पौषध व्रत मे किसी प्रकार का दोष लगा हो, पौषध की सम्यक् अनुपालना नही की हो तो उसको अतिचार मानकर उसका मिच्छामि दुक्कड दिया जाता है। श्रावक यदि धर्म जागरण नहीं करके पौषध मे निद्रा भी ले ली हो तो उससे पौषध की सम्यक् अनुपालना नही होती। अत उसका मिच्छामि दुक्कड तत्सम्बन्धी पाटी से दिया जाता है तो फिर निद्रा दोष निवृत्ति की पाटी को उसे उच्चारण

करने का कोई तात्पर्य नही रह जाता है। तैंतीस आशातना की पाटी भी श्रमण के लिए है क्योकि उसमे श्रमणोचित्त बातो का ही उल्लेख है। इन तैतीस आशातनाओ को टालने वाला भिक्षु श्रेष्ठ होता है ऐसा उल्लेख उतराध्ययन सूत्र के तैतीसवें अध्ययन मे है। श्रावको के लिए उल्लेख नही है। नमो चौबीसाए की पाटी मे श्रमण की प्रतिज्ञा का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि मैं सयमी विरत हूँ। स्पष्ट है कि वह साधु के लिए ही है। श्रावक के लिए नही, क्योकि श्रावक सपूर्ण असयम का त्यागी नही होता। अत श्रावक के लिए इस पाटी का उच्चारण करना उपयुक्त नही है। यदि इन श्रमण सूत्र की पाटियो का उच्चारण श्रावक प्राचीन समय मे करता तो, प्राचीन आवश्यक निर्युक्ति अवचूर्णी मे उनका उल्लेख अवश्य मिलता लेकिन श्रावक धर्म विधि मे इनका अनुल्लेख होना ही इस बात को प्रमाणित करता है कि श्रमणसूत्र की इन पाटियो का श्रावक को उच्चारण नही करनाचाहिए। (देखो आवश्यक निर्युक्ति, अवचूर्णि द्वितीय भाग गाथा 1570 से 1576, पृ 245 से 262 प्रकाशक मोतीचन्द मगनभाई मैनेजिग ट्रस्ट भावनगर 1965)

प्रश्न 102 नमस्कार महामत्र के पाच पदों मे कितने गुण है? किस पद में कितने-कितने गुण है?

उत्तर नमस्कार महामत्र के पाच पदो मे 108 गुण है। अलग-अलग निम्नानुसार हैं (1) अरिहन्त के पाच पदो मे 12 गुण—1 अणासवे 2 अममे 3 अकिचणे 4 छिन्नसोए 5 निरुवलेवे 6 ववगय पेमराग दोस मोहे 7 णिग्गथपवयण देषए 8 सत्थणायगे 9 अनतणाणी, 10 अणतदसी 11 अणतचरित्ते 12 अणतवीरियसजुत्ते। (2) सिद्ध पद में 8 गुण—1 अनतज्ञान 2 अणतदर्शन 3 अनत सुख 4 क्षायिक सम्यक्त्वचारित्र 5 अमरत्व 6 अमूर्तत्व 7 अगुरुलघुत्व 8 अनतवीर्यत्व (अकरण)। (3) आचार्य पद मे 36 गुण — 1 जाति सम्पन्न 2. कुल सम्पन्न 3 बल सम्पन्न 4 रूप सम्पन्न 5 विनय सम्पन्न 6 ज्ञान सम्पन्न 7 दर्शन सम्पन्न 8 चारित्र सम्पन्न 9 लज्जावान 10 लाघव सम्पन्न 11 ओजस्वी 12 तेजस्वी, 14 यशस्वी 15 जित्कोध 16 जित्मान 17 जित माया 18 जित्लोम 19 जितेन्द्रिय 20 जितनिद्रा 21 जिस्परिषह 22 जीवित आश मरणमय विप्रमुक्त 23 व्रत प्रधान 24 गुण प्रधान 25 करण प्रधान 26 चरण प्रधान 27 निग्रह प्रधान 28 निश्चय प्रधान 29 विद्या प्रधान 30 मत्र प्रधान 31 वेद प्रधान 32 व्रह्म प्रधान 33 नय प्रधान 34 नियम प्रधान 35 सत्य प्रधान

36 शौच प्रधान। (4) उपाध्याय पद मे 25 गुण हैं — 1 सूत्र अर्थ तदुभय के ज्ञाता 2 स्वसमय पर समय (सिद्धान्त) के विज्ञाता 3 मिथ्यात्व विध्वसक 4 सम्यक्त्व प्रधोतक 5 वाचना दान कुशल 6 नयनिक्षेप प्रमाण विज्ञ 7 ज्ञान चक्षुदाता 8 जिन सदृश प्रभावक 9 केवली सम विषय प्रतिपादक 10 सारणा वारणा धारणा मे निष्णात 11 करणसत्तरी चरणसत्तरी के आराधक 12 सम्यक् रूपेण आश्रव अवरोधक 13 धर्म मे अस्थिरवान् को (अरतिवान को) स्थिर करने मे समर्थ 14 जागृत उपयोगवान् 15 समयज्ञ (द्रव्य क्षेत्र काल भाव के ज्ञाता) 16 तन्मयता से सूत्र अर्थ की यथार्थ अभिव्यक्ति दाता 17 अपराजित (देव मनुष्यो द्वारा वाद-विवाद से पराजित न होने वाला) 18 निश्चय व्यवहार के ज्ञाता 19 स्व पर हित चिन्तक 20 धीर वीर गभीर 21 मदविहीन 22 जाति कुल सम्पन्न 23 अकाषायिक भावों की ओर गतिशील 24 प्रतिसलीन वृत्ति के धारक 25 सशय निवारक। (5) साधु-साध्वी पद मे 27 गुण — 1 से 5 पाच महाव्रत पाले, 6 से 10 पाच इन्द्रिया जीते, 11 से 14 चार कषाय टाले 15 भावसत्य 16 करण सत्य 17 जोग सत्य 18 क्षमावन्त 19 वैराग्यवन्त 20 मन समाधारणता, 21 वचन समाधारणता 22 कायसमाधारणतया 23 ज्ञान सम्पन्न 24 दर्शन सम्पन्न 25 चारित्र सम्पन्न 26 वेदनीय समाअहिय सनिया 27 मारणातिय समाअहिया सनिया।

प्रश्न 103 चौरासी लाख जीवन योनि के जीवों से अठारह लाख चौवीसहजार एक सौ बीस प्रकार के अपराधो का मिच्छामि दुक्कड का क्या भाव है?

उत्तर नारकी 14, तिर्यंच 48, मनुष्य 303 और देवता 198, कुल 563 जीवों के प्रकार है। उनका अभिहया, वत्तिया आदि 10 प्रकार से विराधना, 2 राग द्वेष के वशीभूत 3 करण, 3 योग से 3 काल मे की हो तो 5 पद और छटी आत्मा की साक्षी से क्षमा मागी जाती है। यानि मिच्छामि दुक्कड देकर फिर पाप कर्म नही करने की प्रतिज्ञा की जाती है। 563 x 10 x 2 x 3 x 3 x 3 = 304020 x 6 = 1824120 प्रकार के होते हैं।

प्रश्न 104 ससार मे जनगणना से लगभग 5 अरब की जनसख्या कही जाती है तब चौरासी लाख जीव योनि मे 14 लाख मनुष्य कहने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर प्रत्येक लाख के पीछे 50 जाति गिनने से मनुष्य की 700 जाति बनती है जैसे मारवाडी, पजाबी, बगाली मद्रासी आदि आस्ट्रेलियन, अफ्रिकन आदि इन 700 जाति मे से प्रत्येक मे 5 वर्ण, 2 गध, 5 रस 8 स्पर्श और 5 सठाण पाये जाते हैं। तब 700 x 5 x 2 x 5 x 8 x 5 = 14 लाख की सख्या बनती है। एक-एक जाति में सफेद अथवा काले आदि वर्ण वाले लाखों मनुष्य में प्रत्येक गध रस स्पर्श और सठाण यानि लम्बे छोटे आदि आकृति वाले पाये जाने से अरबो की सख्या को इन चौदह लाख मे वर्गीकरण कर लिया है। आपत्ति जैसी बात नही है।

प्रश्न 105 प्रतिक्रमण के माध्यम से किसका किन पाटियो से प्रतिक्रमण किया जाना है ?

उत्तर · प्रतिक्रमण में 1 मिथ्यात्व 2 अव्रत 3 प्रमाद 4 कषाय और 5 अशुभ योग का प्रतिक्रमण किया जाता है। निम्नानुसार है — 1 अरहन्तो महदेवो (दसण सम्यक्त्व) की पार्टी से मिथ्यात्व का 2 बारह व्रतो की पाटीसे अव्रत का 3 आठवें अनर्थदण्ड की पाटी से (पमायारिये से) प्रमाद अनर्थदण्ड का 4 अठारह पापो की पाटी से चारो ही कषायो का और 5 नवमा सामायिक व्रत (एयस्स नवमस्य) की पाटी से अशुभ योग (मन, वचन आर काया के अशुभ योगों का प्रतिक्रमण किया जाता है।)

प्रश्न 106 आभिग्रहिक मिथ्यात्वि आदि को 25 मिथ्यात्व में गिनाए है उसका तात्पर्य क्या है ?

उत्तर (1) अपनी मानी हुई गलत मान्यताओं को कट्टरता पूर्वक पकड़े रहना, असत् और मिथ्या कदाग्रह से अभिनिवेश पूर्वक चिपकेरहना आभिग्रहिक मिथ्यात्व है। जैसे भगवान् के आनन्द कामदेव आदि 10 श्रावक 12 व्रतधारी और 15 कर्मदान के तीन करण तीन योग से त्यागी थे। वे 500 हलवा जमीन से खेती करते थे। उससे स्पष्ट है कि खेती करना फोडी कम्मे कर्मादान मे नही है। ऐसा प्रबल एव सचोट उपासगदशाग नामक अगशास्त्र का प्रमाण होने पर वो अपने मिथ्याभिनिवेश से खेती को कर्मादान मे माने वह आभिग्रहिक मिथ्यात्व है।

(2) सत्य असत्य की प्रतीति के बिना, विवेक रहित अवस्था अनभिग्रहिक मिथ्यात्व है। जैसे पॉच महाव्रत पॉच समिति तीन गुप्ति का पालन करने वाले साधको को और बिना आचार्य के

नेतृत्व वाले सूत्र विपरीत प्ररूपणा करने वालों की कथनी करनी को भिन्न नही समझना अनभिग्रहिक मिथ्यात्व है।

(3) सत्य तत्त्व को अपने दिल मे समझते हुए भी अपनी पकडी हुई बात को नही छोडना, जिनेन्द्र देव द्वारा प्ररूपित शास्त्रो से विरुद्ध प्ररूपण करना अपने मिथ्या पक्ष की स्थापना के लिए कुतर्क और कुयुक्तियो का आश्रय लेना आदि आभिनिवेशिक मिथ्यात्व है। जैसे किसी तथ्य को, सिद्धान्त को मूर्धन्य व शास्त्रज्ञ मुनिवरो ने एक स्वर से सम्मेलन मे स्वीकार कर लिया है वह निर्णय जीत व्यवहार की तरह माना जाता है। ऐसे निर्णय की उपेक्षा करना आभिनिवेशिक मिथ्यात्व की श्रेणी मे गिना जाता है।

(4) वीतराग परमात्मा के वचनो पर श्रद्धा नही रखते हुए सशय करना साशयिक मिथ्यात्व है। जैसे भगवान द्वारा प्ररूपित विद्युत् की सचित्तता पर सदेह करना।

(5) जिन धर्म की मान्यताओ से विपरीत प्ररूपणा करना विपरीत मिथ्यात्व है। जिनेश्वर देव ने आचार्य की निश्रा के बिना नव डहर तरुण साधु-साध्वियो को गच्छ में रहने का निषेध किया है किन्तु बिना आचार्य के गच्छ में रहना और अपने आप को वीतराग की आज्ञा का आराधक बताकर उत्कृष्टाचारी कहना विपरीत मिथ्यात्व है।

इस प्रकार अन्य मिथ्यात्व की परिभाषा सरल होने से यहॉ विस्तार भय से स्पष्ट नही किया गया। सुज्ञ बुद्धि से समझ लेना चाहिए।

प्रतिक्रमण सूत्र में आए हुये कठिन शब्दों का अर्थ

शब्द	अर्थ।
अब्भणुण्णाएसमाणे	आज्ञा होने पर।
असावगपाउग्गो	श्रावक के नही करने प्रायोग्य।
जं वाइद्ध	जो सूत्र के अक्षर उलट पलट कर पढ़े हों।
बच्चामेलिय	अपनी बुद्धि से अन्य सूत्र का पाठ मिलाया हो।
सुट्ठुदिन्नं दुट्ठुपडिच्छियं	शिष्य की योग्यता से अधिक ज्ञान दिया हो, अविनीत शिष्य ने दुष्ट भाव से ग्रहण किया हो।
परमत्थ सथवो वा	परमार्थ (नवतत्त्व) का सस्तव (सम्यक् ज्ञान)।
सुदिट्ठ परमत्थ सेवणावावि	परमार्थ के अच्छे जानकारो की सेवा करना।
वावन्न कुदसण वज्जणा	सम्यक्त्व से भ्रष्ट और कुदर्शनियो की सगति सेवा नही करना।
वितिगिच्छा	धर्म के फल में सदेह करना और त्यागियो के मलीन वस्त्र देखकर घृणा करना।
ससप्पओगे	कामना या आकाक्षा या इच्छा करना।
अभ्याख्यान	झूठा कलक लगाना।
पैशुन्य	चुगली करना।
परपरिवाद	निन्दा करना।
जावणिज्जाए	शक्ति के अनुसार।
निसीहियाए	अपने योगों को पापकर्म से हटाकर।

मे मिउगाहं अणुजाणह	मुझको आपकी परिमित भूमि मे प्रवेश करने की आज्ञा दीजिए।
अहो कायं काय सफास	आपके दोनो चरणो को मेरी काया (मस्तक और हाथ) से स्पर्श करने से।
खमणिज्जो भे किलामो	आपको जो कष्ट हुआ उसे क्षमा करावे।
अप्पकिलताण भे बहुसुमेण	बिना कष्ट के आप बहुत सुखपूर्वक।
जवणिज्जं	मन और इन्द्रियो की पीड़ा से रहित स्वस्थ है।
सव्व मिच्छोवयाराए	सभी मिथ्या आचरणो से पूर्ण।
अब्भुट्ठिओमि	उद्यत हुवाहू।
अपच्छिम मारणांतिय	सब से बाद मृत्यु के समीप (निकट)।
सलेहणा झूसणा	शरीर कषाय ममत्वादि कृश (कमजोर) करने के लिए तप विशेष का सेवन करना।
धम्मनिहिय नियचित्तो	धर्म मे अपना चित्त स्थिर करके।
अकयण्णुणा	अकृतज्ञता से।
पड़िनिवेसेण	आग्रहपूर्वक।
अन्नत्थणाभोगेण	उपयोग रहित (भूल से) कोई वस्तु सेवन हो जाय तो मेरे आगार है।

सम्यक्त्व के सडसठ बोल

पहले बोले श्रद्धान चार

जिन कार्यो से धर्म मे श्रद्धा उत्पन्न हो और धर्म श्रद्धा सुरक्षित रहे उसे सम्यक्त्व का श्रद्धान कहते हैं।

1. **परमार्थ संस्तव**—नवतत्त्वो का ज्ञान प्राप्त करे।

2. **सुदृष्ट परमार्थ सेवन**—नवतत्त्वों के जानकारो की सेवा करे।

3. **व्यापन्न वर्जन**—जिन्होने सम्यक्त्व छोड दिया है ऐसे निन्हव, नास्तिक, अन्य मतधारण कर लिया हो उनकी सगति न करे।

4. **कुदर्शन वर्जन**—कुतीर्थिको की सगति से दूर रहे।

दूसरे बोले लिंग तीन

जिन बाहरी गुणो को देखकर अनुमान लगे कि इस पुरुष मे सम्यक्त्व है उसे सम्यक्त्व का लिंग कहते हैं।

1. श्रुतानुराग—रागरग सगीत में रुचि रखने वाले पुरुष की तरह केवली प्ररूपित वाणी सुनने मे अनुराग (रुचि) रखे।

2 धर्मानुराग—तीन दिन का भूखा खीर खाड के भोजन मे रुचि रखने वाले पुरुष की तरह केवली प्ररूपित धर्म पालने मे रुचि रखे।

3 देवगुरु वैयावृत्य—अनपढ़ पुरुष विद्या प्राप्ति के लिए विद्यागुरु को पाकर हर्षित होकर उनकी सेवा करता है उसी तरह देवगुरु के दर्शन पाकर हर्षित होकर धर्मप्राप्ति के लिए उनकी सेवा करे।

तीसरे बोले विनय दस

देव गुरु धर्म आदि का जो वदन भक्ति गुण कीर्तन बहुमान आदि करना, सम्यक्त्व का विनय कहलाता है।

1 अरहत विनय, 2 अरहंत प्ररूपित धर्म का विनय, 3 आचार्य विनय, 4 उपाध्याय विनय, 5 स्थविर विनय, 6 कुल, 7 गण, 8 सघ विनय, 9 क्रियावान् का विनय, 10 साभोगिक (स्वधर्मी) विनय।

चौथे बोले शुद्धि तीन

पीलिया मोतियाबिंद आदि न होना शुद्ध दृष्टि है वैसे ही देव गुरु धर्म के विषय मे अशुद्धि नही होना।

1. देवशुद्धि—मन वचन काया से अरहत सिद्धो को ही देव माने गुणगान करे वदन नमन करे। अन्य देवों को नही।

2. गुरु शुद्धि—आचार्य (36 गुण) उपाध्याय (25 गुण) साधु साध्वी (27 गुण) से युक्त को ही गुरु माने गुणगान करें वदन करे। अन्य को नही।

3. धर्म शुद्धि—केवली प्ररूपित अहिंसामय धर्म को ही धर्म माने गुणगान करे नमन करे। अन्य को नही।

पांचवें बोले लक्षण पांच

जिस अतरग गुण से सम्यक्त्व की पहचान हो उसे सम्यक्त्व का लक्षण कहते हैं।

1. शम—शत्रु मित्र पर समभाव रखे।

2 संवेग—मुक्ति की अभिलाषा।

3. निर्वेद—सासारिक कामभोगो मे उदासीनता।

4. अनुकंपा—दु खी जीवों पर करुणा।

5 आस्था—जिन वचनो पर दृढ विश्वास रखे।

छठे बोले दूषण पाच

जिससे सम्यक्त्व में मलीनता हो।

1. शंका—जिन भगवान के वचन मे सदेह करना।

2. कांक्षा—अन्य मत के आडम्बर आदि देखकर उसकी इच्छा करना।

3 विचिकित्सा—धर्म के फल मे सदेह करना। या त्यागियो के मलीन वस्त्र देखकर घृणा करना।

4. पर पाखंडी प्रशंसा—कुतीर्थियो की प्रशसा और परिचय करना।

5. परपाखडी सस्तव— कुतीर्थियो की प्रशसा और परिचय करना।

सातवें बोले भूषण पाच

जिन कार्यो से सम्यक्त्व की शोभा बढे।

1. कुशलता—जिन शासन में कुशल हो।

2. प्रभावना—जिन शासन की प्रभावना करे।

3. तीर्थ सेवा—चतुर्विध सघ की सेवा करे।

4. स्थिरता—श्रद्धा से डिगते हुए को स्थिर करे।

5 भक्ति—शासन की भक्ति करे। या जिन शासन मे भक्ति रखे।

आठवें बोले प्रभावना छ.

जिन कार्यों से धर्म की प्रभावना हो।

1 बहुश्रुत—उपलब्ध शास्त्रो के रहस्य का जानकार हो।

2. धर्मकथी—कथा सुनाने में चतुर हो।

3. वादी—प्रतिज्ञा हेतु दृष्टान्त आदि से अन्य मत का खडन कर जैन मत की स्थापना करे।

4. नैमित्तिक—निमित्त के द्वारा तीन काल की बात जाने।

5. तपस्वी—उग्र तप करे।

6 विद्यावान्—अनेक विद्या का ज्ञाता।

7 लब्धिसपन्न—अनेक लब्धि का धारक।

8. कवि—शास्त्रानुसार गद्य पद्य रचे।

नववे बोले आगार छ

सम्यक्त्व की रक्षा मे छूट रखना।

1 राजाभियोग—राज के दबाव से। 2 गणाभियोग—कुटुम्ब जाति पचायत के दबाव से। 3 बलाभियोग—बलवान के दबाव से। 4 देवाभियोग—देव देवी के दबाव से। 5. गुरुनिग्रह—बडो के दबाव से। 6. वृत्तिकातार—आजीविका के लिए स्वामी के दबाव से। बिना इच्छा अन्य मती देवगुरु से वार्तालाप आदि करना पड़े तो सम्यक्त्व मे दोष लगता है पर सम्यक्त्व भग नही होता।

दसवें बाले यतना छ

सम्यक्त्व की सुरक्षा हेतु निम्न कार्य न करे।

1 वदना, 2 नमस्कार, 3 आलाप, 4 सलाप, 5 दान, 6 अनुप्रदान। अन्य मती देवगुरु की उपरोक्त प्रकार से 6 कार्य न करे। (अनुकपा भाव से किसी से आलापादि करना अथवा दानादि देने का तीर्थकर द्वारा निषेध नही है। सुदेव गुरु से अवश्य करे।)

ग्यारहवे बोले भावना छ

निम्न भावना से सम्यक्त्व पुष्ट होती है।

1 जीव है, 2 जीव नित्य है, 3 जीव अपने कर्मो का कर्ता है, 4 जीव आठ कर्मों का भोक्ता है, 5 मोक्ष है, 6 मोक्ष का उपाय है।

बारहवें बोले स्थान छ

निम्न छ उपायों से सम्यक्त्व की रक्षा होती है। उसे स्थान कहते हैं।

1 मूल—(जड़) सम्यक्त्व रूपी जड़ से धर्मरूपी वृक्ष सुरक्षित रहता है।

2 द्वार—धर्मरूपी नगर के लिए सम्यक्त्व रूपी दरवाजा हे।

3 नीव—धर्मरूपी महल की स्थिरता के लिए सम्यक्त्व रूपी नीव है।

4 पृथ्वी—धर्मरूपी ससार के लिए सम्यक्त्व रूप पृथ्वी जरूरी है।

5 पात्र—धर्म रूपी खीर के लिए सम्यक्त्व रूपी थाली जरूरी है।

6 निधि—(पेटी) सम्यक्त्व रूप पेटी से धर्मरूप धन सुरक्षित रहता हे।

तेरहवें बोले रुचि दस

जिन कार्यों से देव गुरु धर्म के प्रति रुचि बढे।

1 निसर्गरुचि, 2 उपदेश, 3 आज्ञा, 4 सूत्र, 5 बीज, 6 अभिगम, 7 विस्तार, 8 सक्षेप, 9 क्रिया, 10 धर्मरुचि। इन दस कार्यों से सम्यक्त्व उत्पन्न होता है।

चौदहवे बोले भेद पांच

पाच प्रकार का सम्यक्त्व होता है।

1 औपशमिक, 2 क्षायिक, 3 क्षायोपशमिक, 4 सास्वादन 5 वेदक।

पन्द्रहवें बोले आचार आठ

जिन आचरणो से सम्यक्त्व का पालन होता है।

1 नि शकित, 2 नि काक्षित, 3 निर्विचिकित्सक, 4 अमूढ दृष्टि, 5 उपवृहण, 6 स्थिरीकरण, 7 वात्सल्य, 8 प्रभावना।

सोलहवें बोले प्रकार तीन

1 कारक, 2 रोचक, 3 दीपक।

श्रावक जी के इक्कीस गुण।

1 तत्त्वज्ञ, 2 असहाय, 3 अनतिक्रमणीय, 4 निशक, 5 गीतार्थ, 6 धर्मानुरक्त, 7 परमार्थज्ञ, 8 उच्छित स्फटिक, 9 अनावृत द्वार, 10 प्रतीत, 11 व्रती, 12 सम्यक् अनुपालक, 13 अतिथि सविभागी, 14 धर्मोपदेशक, 15 सुमनोरथी, 16 तीर्थ सेवक, 17 उपासक, 19 स्थिर कारक, 19 प्रतिक्रमणकारक, 20 सर्वजीव हितैषी, 21 तपस्वी।

छः काय का थोकड़ा (पन्नवणा सूत्र का छट्ठा पद)

द्वार	स्थावर काय					त्रस काय							
१ नाम	इन्द्रीथावर काय	ब्रभीथावर काय	सिप्पीथावर काय	सुमतिथावर काय	पयावत्त्वथावरकाय	सव जगमकाय							
२ गोत्र	पृथ्वीकाय	अपकाय	तेउकाय	वायुकाय	वनस्पतिकाय	वेन्द्रिय	तेन्द्रिय	चौरेन्द्रिय	असन्नीपचेन्द्रिय	सन्नीपचेन्द्रिय	नारकी	देवता	मनुष्य
३ वर्ण	पीला	लाल	सफेद	हरा	काला	सभी का अनेक प्रकार का							
४ स्वभाव	कठोर	ढीला	उष्ण	वाजणा	अनेक प्रकार का	सभी का अनेक प्रकार का							
५ सठाण	चद्रमसूर की दाल	पानी का परपोटा	सुई का भारा	ध्वजा पताका	अनेक प्रकार का	सभी का अनेक प्रकार का							
६ जन्मरण १ मुहूर्त में जगन्य उत्कृष्ट	१ १२८२४	१ १२८२४	१ १२८२४	१ १२८२४	१ ६५५३६ सूक्ष्म वनस्पति ३२००० साधारण वनस्पति १६००० प्रत्येक वनस्पति	१ ८०	१ ६०	१ ४०	१	१	—	—	१ २४ असन्नी मनुष्य
७ जीवयोनि	७ लाख	७ लाख	७ लाख	७ लाख	१० लाख प्रत्येक वनस्पति १४ लाख साधारण वनस्पति	२ लाख	२ लाख	२ लाख	चार लाख		४ लाख	४लाख	१४ लाख

द्वार	स्थावर काय					त्रस काय						
8 कुलकोडी	12 लाख	७ लाख	3 लाख	10 लाख	28 लाख	७ लाख	८ लाख	९ लाख	जलचर $१२\frac{१}{२}$ लाख स्थलचर १० लाख खेचर १२ लाख उरपर १० लाख भुजपर ९ लाख	२५ लाख	२६ लाख	१२ लाख
९ स्थिति जघन्य उत्कृष्ट	अतर्मूहूर्त २२ हजार वर्ष	अतर्मूहूर्त ७ हजार वर्ष	अतर्मूहूर्त ३ अहोरात्रि	अतर्मूहूर्त ३ हजार वर्ष	अतर्मूहूर्त १० हजार वर्ष	सबकी अतर्मूहूर्त १२वर्ष ४९ दिन ६ माह			असन्नी सन्नी अतर्मूहूर्त अतर्मूहूर्त क्रोडपूर्व जलचर क्रोडपूर्व ८४ ह. वर्ष थलचर ३ पल्य ७२ ह. वर्ष खेचर पल्य का अस. भाग ५३ ह. वर्ष उरपर क्रोडपूर्व ४२ ह. वर्ष भुजपर क्रोडपूर्व	१० ह. वर्ष ३३ सागर	१० ह. वर्ष ३३सागर	अतर्मूहूर्त ३पल्योपम
१० अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट	अगुल का असख्यातवाँ भाग सबकी अगुल का असख्यातवाँ भाग सबकी				१ हजार योजन झाझेरी कमलनाल की डडी अपेक्षा	सबकी अगुल का अस. भाग १२योजन ३कोस ४कोस			— हजार योजन ज. हजारयोजन प्रत्येक कोस थ. ६ कोस प्रत्येक धनुष खे प्रत्येक धनुष प्रत्येक योजन उ. हजार योजन प्रत्येक धनुष भु प्रत्येक कोस	$६\frac{३}{४}$ धनुष ५००धनुष	कुछकम १ हाथ ७ हाथ	कुछ कम १ हाथ ३ कोस
११ अल्पबहुत्व	सबसे कम त्रसकाय इनसे तेउकाय असख्यात गुणा इनसे पृथ्वीकाय विशेषाधिक इनसे अप्काय विशेषाधिक इनसे वायुकाय विशेषाधिक इनसे अकाय सिद्ध भगवत अनतगुणा अधिक इनसे वनस्पतिकाय अनत गुणा अधिक। इति सम्पूर्ण।											

भगवान महावीर

प्रश्न भगवान महावीर की गृहस्थ अवस्था की विशिष्ट घटनाऍ बताओ ?

उत्तर 1 दशवे देव लोक से आयु पूर्ण कर भगवान महावीर की आत्मा आसाढ सुदी 6 को ब्राह्मण कुण्ड नगर से ऋषभदत्त ब्राह्मण की भार्या देवानदा की कुक्षी मे आए। ब्राहमणी ने 14 स्वप्न देखे। शकेन्द्र के आदेश से हरिणगमेषी देव ने 83वी रात्रि को ब्राह्मणी की कुक्षी से गर्भ का सहरण कर क्षत्रिय कुड नगर के महाराज सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला के गर्भ मे स्थापित किया। (क्योकि ब्राहमण कुल मे याचना वृत्ति की स्वाभाविक परपरा होती है और क्षत्रिय कुल शूरवीरता का द्योतक है। जितने भी तीर्थकर होते है वे शूरवीर कुल मे ही जन्म लेते है)

देवानदा को ऐसा स्वप्न आया कि मेरे स्वप्न त्रिशला के पास चले गए। तब त्रिशला महारानी ने 14 स्वप्न देखे।

2 जब वे भगवान त्रिशला के गर्भ मे आए तब से राजा सिद्धार्थ के यहॉ धन धान्य राज्य सेना कोष अत पुर यश आदि की वृद्धि होने मे उन्होने निश्चय किया कि जन्म होने के वाद बालक का नाम वर्धमान रखेंगे।

3 माता को कष्ट न हो इसलिए भगवान ने अनुकम्पाकर हिलना डुलना बद कर दिया। इससे माता को बहुत चिंता हुई कि मेरे गर्भ को क्या हो गया है। ऐसी उल्टी स्थिति को देखकर अपने अवधि ज्ञान को देखकर भगवान ने पुन हिलना डुलना चालू कर दिया। जिससे माता की चिंता दूर हुई और परम सतोष हुआ।

4 भगवान का जन्म चैत्र शुक्ल 13 की रात्रि को हुआ। तव शक्रेन्द्र भ को जन्म कल्याणक मानने के लिए मेरु पर्वत पर लाये। पर भ का छोटा सा शरीर देखकर शक्रेन्द्र को शका हुई कि 1008 घड़े की जलधारा से क्या भगवान वह नही जावेगे। भगवान ने अपने अवधि ज्ञान से इन्द्र की शका को जानकर अपने पेरो के अगूठे से मेरु पर्वत को कम्पा दिया। इन्द्र की शका दूर हुई।

5 भगवान वालको के साथ खेल रहे थे। साप को देखकर वालक डरे तो भ ने कहा — "डरो मत। यह तो विचारा खुद ही डर रहा है।" उन्होन (भ. ने) उस सर्प को माला की तरह उठाकर एक तरफ रख दिया। यह भगवान की निडरता थी।

6 भगवान पढ़ने गए तब इन्द्र ने ब्राह्मण के रूप मे आकर अध्यापक से प्रश्न किया। वे उत्तर नही दे सके तब विनयशील भ. ने अध्यापक की आज्ञा लेकर उत्तर दिया। यह भगवान की विनयशीलता थी।

7 भगवान की शादी यशोदा नामक राजकन्या के साथ हुई। उनकी लडकी का नाम प्रिय दर्शना था। जवाई का नाम जमाली था। बहन का नाम सुदर्शना, भाई का नाम नदीवर्धन और काका का नाम सुपार्श्व था। माता-पिता का स्वर्गवास हो जाने पर भ ने भाई के आग्रह पर दो वर्ष वैराग्य अवस्था मे घर मे रहकर 30 वर्ष की उम्र मे मिगसर सुदी 10 को दीक्षा ग्रहण की। उसके पूर्व 1 वर्ष तक प्रतिदिन 1 करोड़ आठ लाख सोनैयों का दान दिया। और बेले के तप मे बडे ठाठ बाठ से दीक्षा ली थी।

प्रश्न भगवान की सयम अवस्था की विशिष्ट घटनाएँ बताओ ?

उत्तर 1 भ. को प्रथम एव अन्तिम उपसर्ग ग्वाले द्वारा हुआ।

शूलपाणियक्ष, सगमदेव तथा चड कौशिक सर्प द्वारा उपसर्ग हुवे।

2 भ. के प्रभाव को देखकर मखलिपुत्र गौशालक, भ. की इच्छा नही होते हुए भी भ. के शिष्य के रूप मे भ के साथ रहा।

3 भ ने अनेको उपसर्गो को निर्भय एव शाति के साथ सहन किया। मेरुकम्पाया और बाल अवस्था मे देव के द्वारा ली गई परीक्षा से भ. डरे नही इसलिए उनका नाम महावीर पडा।

4 भ. के तेरह अभिग्रहो का पारणा चदन बाला द्वारा हुआ।

5 भ. ने छ मासी तप 2, चौमासी तप 9, तीनमासीतप 2, ढाई मासी तप 2, दो मासी तप 6, मासिक तप 12, अर्ध मासिक तप 72, तेला 12, बेला 229, और अन्य तपस्याएँ 12 वर्ष 6 1/2 माह तक की। इन 4515 दिनो मे 349 दिन पारणा और 4166 दिन तप किया।

प्रश्न भ की केवली पर्याय की विशिष्ठ घटनाएँ बताओ ?

उत्तर 1 भ. को वैसाख सुदी 10 के दिन उनकी 42 वर्ष की उम्र मे ऋजुबालिका नदी के किनारे जृभक गाव में श्यामाक गाथापति के खेत में शालि वृक्ष के नीचे गोदुहासन मे बैठे बैठे बेले के तप मे अप्रमत्त भाव से शुक्लध्यान ध्याते हुए क्षपक क्षेणी पर आरूढ हुवे। तव मोहनीय आदि चारो घाती कर्म नष्ट होने पर केवल ज्ञान प्राप्त किया।

2 भगवान के अतिशय पूर्ण उपदेश को सुनने के लिए 4 जाति के देव 4 जाति की देवियाँ मनुष्य मनुष्यनी तिर्यथ तिर्यचनी यो 12 प्रकार की परिषद् उपस्थित हुई। किसी ने दीक्षा या श्रावक व्रत नही लिया, अत उनकी पहली देशना विफल हुई।

3 वहा से विहार कर भ अपापा नगरी मे पधारे। तब इन्द्र भूति आदि 11 ब्राह्मण अपने 4400 शिष्यो के साथ, चन्दन बाला आदि ने दीक्षा ली। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने व्रत प्रत्याख्यान लिए। आगे जाकर ऋषभदत्त और देवानदा ब्राह्मणी ने भी दीक्षा ली।

4 उनके बेटी जवाई ने भी दीक्षा ली। पर स्वतन्त्र विचरण के समय बीमारी के प्रसग से उनकी श्रद्धा पलट गई और जमाली मरकर किल्विषिक देव बने। प्रियदर्शना प्रतिबुद्ध होकर आराधक बनी।

5 श्रावस्ती नगरी मे भ पर गौशालक ने क्रोध किया। उसने भ के दो शिष्यो को तेजोलेश्या से जला दिया और भ पर भी प्रयोग किया पर भ जले नही पर उन्हें रक्तस्राव रोग हुआ।

6 भ. की अस्वस्थता से सिंह अणगार रोने लगे। तब भगवान ने उन्हें सान्त्वना देकर कहा कि मै अभी $15\frac{1}{2}$ वर्ष तक सुख पूर्वक जीऊँगा। तुम रेवती गाथा पत्नी के यहा जाकर मेरे लिए बनाया हुआ कोलापाक न लाकर उसके घोड़े के लिए बनाया हुआ बिजोरा पाक लाना। सिंह अणगार द्वारा लाई हुई औषधि से भगवान स्वस्थ हुवे। सिंह अणगार से भगवान के ज्ञान की बात जानकर रेवती को सम्यकत्व प्राप्त हुआ और श्रद्धापूर्वक उत्कृष्ट भाव से दान देने से उसने तीर्थकर गोत्र बाधा।

7 गौशालक को सातवे दिन मृत्यु के पूर्व सम्यकत्व प्राप्त हुआ। स्वय को धिक्कार देते हुए पश्चाताप किया। आयुपूर्ण कर 12 वे देव-लोक मे देव बना और वह एक दिन मोक्ष प्राप्त करे ऐसी नीव लगी।

8 भ. 30 वर्ष तक केवली पर्याय पूर्णकर 72 वर्ष की उम्र मे पावापुरी नगरी मे हस्तीपाल राजा की कचहरी मे 16 प्रहर तक चतुर्विध सघ को अतिम उपदेश सुनाते हुवे कार्तिक बदी अमावस्या को दो घड़ी रात्रि रहते बेले के तप सहित मोक्ष पधारे। सुधर्मा स्वामी पाट विराजे।

भ. के 14 हजार साधु, 36 हजार साध्वी, 1 लाख 59 हजार श्रावक और 3 लाख 18 हजार श्राविकाएँ थी। उनमे 700 साधु और 1400 साध्वियाँ केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष पधारे।

शिक्षाएँ — भगवान महावीर

प्रश्न 4 भगवान महावीर के जीवन से क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर 1 कर्म भगवान को भी नही छोडते ऐसा जानकर बुरे कर्मों से डरो।

2 तीर्थकर भी गृहत्याग कर साधु धर्म स्वीकार करते हैं तो बिना धर्म आराधना के हमारा उद्धार कैसे होगा।

3 भगवान ने जब इतना दीर्घ और उग्र तप किया तो हमे भी अपनी शक्ति के अनुसार तप करना चाहिए।

4 जब भगवान ने उपसर्गों को सहन किया तो हमे भी आए उपसर्गों को सहन करना चाहिए।

5 जो भगवान के पद च्रिह्नो पर चलता है वह निराश नही होता।

गणधर इन्द्रभूति

प्रश्न 1 गणधर इन्द्रभूति के देशादि का परिचय दो ?

उत्तर मगध देश के गोवर ग्राम निवासी गौतम गोत्रीय वसुभूति व्राह्मण की धर्म पत्नी पृथ्वी की कुक्षी से इन्द्रभूति का जन्म हुवा। उनके छोटे भाई का नाम अग्निभूति-वायुभूति था। तीनो उपाध्याय 4 वेद 18 पुराण के रहस्य के ज्ञाता थे। तीनो के 500–500 (छात्र) शिष्य थे।

प्रश्न 2 इन्द्रभूति गौतम भ. के शिष्य कैसे बने ?

उत्तर मध्य अपापापुरी के सोमिल व्राह्मण ने यज्ञ करवाया। इन्द्रभूति आदि 11 उपाध्याय अपने 4400 शिष्यो के साथ उस यज्ञ मे सम्मलित हुए। केवल ज्ञान उत्पन्न होने पर भ. महावीर उसी नगरी के बाहर महासेन वन मे विराजे। हजारो लोग और देवता भ. की वाणी सुनने के लिए आने लगे। जव लोगो से ज्ञात हुआ कि ये भगवान महावीर की देशना सुनने जा रहे हैं। तव इन्द्रभूति को अहकार के साथ ईर्ष्या भी उत्पन्न हुई। कि मेरे से वढकर विद्वान और कौन है जो मुझे छोडकर ये लोग वहॉ जा रहे हैं। मैं अभी जाकर उससे वाद विवाद कर परास्त कर दूँगा। वे अपने 500 शिष्यो के साथ वहॉ आए। भ. को देखते ही उनका मान गल गया। भगवान ने इनकी जीव विषयक शका का समाधान किया। जिससे प्रभावित होकर वे अपने 500 शिष्यो के साथ भगवान के शिष्य वने।

इसी प्रकार सभी 11 ही उपाध्याय 4400 शिष्यो के साथ भगवान के शिष्य बने।

प्रश्न 3 गौतम स्वामी (इन्द्रभूति) और भगवान का पुराना सम्बन्ध क्या था ?

उत्तर भगवान के चरणो मे पहुँचने के पहले इन्द्रभूति को भगवान के लिए प्रयुक्त किया गया 'सर्वज्ञ' शब्द भी सहन नही हुआ। पर बाद मे भगवान के साथ परम अनुराग जुडने का कारण यह था कि कई मनुष्य भव मे और कई देव भव मे तथा भगवान के त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव मे इन्द्रभूति का जीवन उनका सारथी था। और अब इस भव मे ही नही भविष्य में ये सदा साथ रहेगे। यहा से आयूपूर्ण कर मोक्ष मे भी दोनों एक समान सिद्ध बन जावेगे।

प्रश्न 4 गौतम स्वामी (इन्द्रभूति) के आयु विभाग का वर्णन करो ?

उत्तर इन्द्रभूति 50 वर्ष तक गृहस्थावस्था मे रहे। साधु पर्याय मे 30 वर्ष तक छद्मस्थ रहे और 12 वर्ष तक केवली पर्याय मे यों 92 वर्ष की आयुपूर्ण कर ये मोक्ष मे पधारे।

शिक्षाएँ – इन्द्रभूति (गौतम स्वामी) गणधर

प्रश्न 5 इन्द्रभूति के जीवन की शिक्षाप्रद बातें बताओ ?

उत्तर 1. तीर्थकर के चरणो में सभी झुक जाते है।
2 जीवादि नवतत्त्व और छ· द्रव्य वास्तविक है।
3 सदा ही ज्ञान पिपासा वनाए रखो।
4 ज्ञान के साथ तप भी करो।
5 नम्र, मधुर, स्वधर्मी, वात्सल्य, मर्यादा, पालक आदि गुणो से युक्त वनो।

महासती चंदलबाला

प्रश्न 1 वसुमति का नाम चदन वाला क्यो पडा ?

उत्तर . धनावह सेठ ने वसुमति को अपने घर लाकर उससे नाम पूछा। उसने कोई उत्तर नही दिया। तव सेठ ने उसकी मधुर और सौम्य वोली, विनय, नम्रता और सुशीलता का व्यवहार चदन के समान अनेक गुणो से युक्त जानकर यह नाम दिया।

प्रश्न 2 चन्दन बाला को किन-किन कष्टो का सामना करना पड़ा?

उत्तर चन्दनबाला चम्पानगरी के राजा दधिवाहन की पुत्री थी। कौशवी नगरी के राजा शतानीक (चन्दन बाला के मासा) ने चम्पानगरी पर चढाई कर दी। तब राजा दधिवाहन ने सोचा कि युद्ध मे अनेक मनुष्य मारे जायेगे। यह हिंसा न हो इसलिए युद्ध न करके वे जगल मे चले गये। तब से उसके कष्टो का प्रारम्भ हुआ। पिता का विरह 2 घर का छूटना 3 माता की मृत्यु 4 स्वय का बिकना 5 वैश्या की छीना झपटी 6 मूला के द्वारा उसके केश कटवाकर, वस्त्राभूषण उतरवाकर, हथकडी बेडी पहनाकर तीन दिन तक भौयरे मे डालकर ताला लगा देना आदि अनेक कष्ट उठाए।

प्रश्न 3 महावीर भगवान के कौन-कौन से अभिग्रह थे?

उत्तर भगवान के निम्न 13 अभिग्रह थे — द्रव्य से 1 सूप के कोने में 2 उडद के बाकले हो। क्षेत्र से 3 बहराने वाली दरवाजे पर एक पैर बाहर तथा एक पैर भीतर रखकर खड़ी हो। काल से 4 तीसरा प्रहर हो भाव से 5 राजकन्या हो 6. अविवाहित हो 7 बाजार में बिकी हुई हो, 8 निरपराधी होते हुए भी हाथो मे हथकड़ी हो 9 पैरो मे बेड़ी लगी हो 10 सिर मूडा हो 11 शरीर पर काछ पहनी हो 12 तीन दिन की भूखी हो 13 रो रही हो।

प्रश्न 4 चन्दन बाला के दुखों का अत कैसे हुआ?

उत्तर भगवान को अभिग्रह लिए 5 माह 25 दिन पूर्ण हो चुके थे। 26 वे दिन भ. कौशबी नगरी मे धनवाह सेठ के यहाँ पधारे तब भगवान ने चन्दन बाला को देखकर अवधि ज्ञान से जान लिया कि और तो सभी अभिग्रह पूरे दिखते है। पर यह रो ही नही रही है। तब भगवान वापस लौट गये। यह देखकर चन्दन बाला के आँखों में आँसू आ गये। वह कहने लगी — "म्हारे आँगणिये आया, पाछा मती जाओ महावीर, आँसूडा ढलकावे म्हारी आखड़ली।" तब भगवान ने अभिग्रहो की पूर्णता देखकर आहार ग्रहण किया। यह देखकर देवता प्रसन्न हुवे। उन्होने अहोदान अहोदान की घोषणा करते हुए देव दुदुभी बजी। $12\frac{1}{2}$ करोड सौनेयो वृष्टि की, उसके सुन्दर केश बनाए, सुन्दर वस्त्राभूषण पहनाए। इस प्रकार उसके दुखो का अन्त हुआ।

महासती चन्दनबाला

प्रश्न 5 चन्दना के जीवन से क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर 1 पुण्य सदा का साथी नही। सुख के बाद दु ख और दुख के बाद सुख भी नही रहा।

2 अपने आदर्श कर्तव्यो से सच्चा नाम प्राप्त करो।

3 सेवा और कृतज्ञता सीखो।

4 भगवान को भी कठिन तप करना पड़ा।

5 जीवन मे अनुशासन और विनय अवश्य अपनाओ।

मेघ कुमार

प्रश्न 1 मेघ कुमार का परिचय दो ?

उत्तर मगध देश की राजगृही नगरी मे महाराजा श्रेणिक की धारिणी नामक रानी को गर्भावस्था मे दोहला उत्पन्न हुआ, कि अकाल मे वर्षा होने पर मैं महाराजा के साथ हाथी पर बैठकर अपनी सखी सहेलियो के साथ पर्वतो का मनोरम दृश्य देखू। इस दोहेले को अभय कुमार ने अपने मित्र देव की सहायता से पूर्ण किया। तब जन्म के पश्चात् वालक का नाम मेघ कुमार रखा गया।

प्रश्न 2. मेघ कुमार की दीक्षा के 1 दिन पूर्व और 1 दिन पीछे की स्थिति लिखो ?

उत्तर दीक्षा के पूर्व की स्थिति — 1 वे राजमहल में मक्खन सी चिकनी और फूलो सी कोमल शय्या पर सोते थे। 2 अगर तगर की सुगध चारो ओर मडराती थी। 3 दासियो द्वारा पखो से मद मद वायु प्राप्त होती रहती थी। 4 आवश्यकता की पूर्ति हेतु दास रहते थे।

दीक्षा के वाद की स्थिति — 1 भ. विराजते वहाँ वगीचे मे धरती पर सोना, 2 सुगध के स्थान पर धूल। 3 मद मद हवा के स्थान पर ठोकरे और 4 किसी ने भी उसके सुख-दुख का हाल नहीं पूछा।

प्रश्न 3 मेघ मुनि का पूर्व भव वताइये ?

उत्तर उस भव से तीसरे पूर्व भव मे वह श्वेत रग का 6 दातो वाला हाथी था। 1000 हथिनियो का स्वामी था उसका नाम सुमेरु प्रभ था। एक वार जगल मे आग लगी तव वह हाथी वहां से भागकर

कम पानी वाले तालाब के कीचड़ मे फस गया। उस समय पूर्व वैर के कारण एक जवान हाथी ने दातो से तीखे प्रहार कर उसे मार डाला।

दूसरे भव मे वह विंध्य पर्वत पर लाल रग का चार दातो वाला हाथी बना, उसका नाम मेघप्रभ था। वहा वह 700 हथिनियो का स्वामी था। वहा जगल मे लगी आग को देखकर उसे जाति स्मरण ज्ञान हुआ। उसने हथिनियो की सहायता से 4 कोस का लबा चौड़ा मैदान साफ किया। दूसरी बार आग लगने पर वह हाथी हथिनियो सहित वहा पहुँच गया। अनेक दूसरे पशु-पक्षी भी वहा आकर खचाखच भर गये। हाथी के शरीर मे खाज आने से वह अपना एक पैर उठाकर खुजलाने लगा। तब एक खरगोश को जगह नही मिलने से धक्के खाता हुआ उस जगह में बैठ गया। खरगोश की रक्षा हेतु उस हाथी ने $2\frac{1}{2}$ दिन तक पैर अधर ही रखा। पैर अकड जाने से बाद मे वह हाथी गिर पड़ा और मर गया। और उस जीव की अनुकम्पा के कारण उस हाथी ने सम्यक्त्व प्राप्त किया ससार कम किया और मनुष्यायु बाधकर वहा से इस भव मे मेघकुमार नामक राजा का लड़का बना।

प्रश्न 4 भगवान ने कैसी शिक्षा देकर मेघ कुमार को धर्म मे स्थिर किया?

उत्तर भगवान ने कहा — हे मेघ! पूर्व भव मे तुम पशु थे वहा तुमने एक खरगोश की रक्षा के लिए कितना कष्ट सहन किया। आज तुम पशु नही हो। पुरानी श्रद्धा के साथ ज्ञान वैराग्य युक्त साधु हो। साधुओ की ठोकर के थोडे से कष्ट को तुम सहन नहीं कर सके। सोचो मेघ! आज तुम्हारे विचार कितने उच्च होने चाहिए। कितनी कष्ट सहन करने की क्षमता होनी चाहिए। भगवान की बात सुनकर मेघ मुनि पुन धर्म मे स्थिर हो गये।

प्रश्न 5 मेघकुमार के चरित्र से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर 1 स्वय कष्ट सहन करके भी अनुकम्पा भाव से दूसरों की रक्षा करो।

2 अनुकम्पा दया धर्म का मूल है।

3 उत्कृष्ट वैरागी के भाव भी कष्टो से गिर जाते है।

4 गिरे हुवे को और न गिराओ। न उसका उदाहरण ही दो।

5 उसे मधुर शब्दो से सान्त्वना देकर और कुशलतापूर्वक शिक्षा देकर पुन ऊपर उठाओ।

अर्जुन माली

प्रश्न 1 कुदेव श्रद्धा और सुदेव श्रद्धा के फल मे अन्तर बताइये ?

उत्तर मुद्गरपाणी यक्ष लौकिक देव था। वह अज्ञानी, मिथ्यात्वी, राग-द्वेषी था। निर्दोष अरिहन्त देव के सिवाय अन्य सदोष देवी देवता की श्रद्धा भक्ति व पूजा करने का कई बार दुष्फल भी होता है। वास्तव मे वे हमारी कुछ भी सहायता नही करते। यदि हमारे कुछ शुभ कर्म का उदय हो तो वे हमारे सुख मे निमित्त बन जाते है। परन्तु अशुभ कर्म की सत्ता अथवा उदय हो तो वे उन्हे नष्ट नही कर सकते किन्तु कई बार नए पापो मे फसा देते है। जैसा कि अर्जुन माली के लिए हुआ। यदि अर्जुन माली यक्ष की पूजा नही करता तो उसे हत्यारा नही बनना पड़ता।

एक अरिहन्त ही ऐसे देव है जिनकी श्रद्धा, भक्ति व पूजा हमारे पुराने कर्मो का क्षय करती है। और नये पापो को रोकती है। जब पुराने कर्म धीरे-धीरे क्षय होते हैं। नये कर्म नही वधते तव आत्मा निर्मल बन जाती है। और उस पर कभी कष्ट नही आता। सामान्य मनुष्य की तो वात ही क्या है देव शक्ति भी उस पर वार नही कर पाती। वल्कि देव उनके चरणो मे नमस्कार करते हैं।

प्रश्न 2 कुदेव श्रद्धा से अर्जुन माली का पतन कैसे हुआ ?

उत्तर मुद्गर पाणी यक्ष से प्रभावित अर्जुन माली ने सुदर्शन के पास पहुँचकर मुद्गर प्रहार करना चाहा। पर उसे अरिहन्त भक्त सुदर्शन का तेज सहन नही हुआ। उसने सुदर्शन के चारो और घूमकर मुद्गर घुमाते हुवे तीन चक्कर लगाये फिर भी वह सुदर्शन पर आक्रमण नही कर सका। जव उसने सुदर्शन को टकटकी लगाकर देखा तो सुदर्शन की ऑखो मे वही तेज दिखा, तव अत मे मुद्गर पाणी यक्ष को निराश होना पड़ा, और अर्जुन पर से अपनी शक्ति हटाकर मुद्गर लेकर चला गया। इस प्रकार कुदेव श्रद्धा से अर्जुन माली का पतन हुआ।

प्रश्न 3 सुदेव श्रद्धा से सुदर्शन की रक्षा और अर्जुन माली का उत्थान कैसे हुआ ?

उत्तर सुदेव श्रद्धा से सुदर्शन सेट अर्जुन माली को देखकर भयभीत नही हुवे। उन्होंने सागारी सथारा कर लिया। यक्ष उनका वाल वाका

भी नही कर सका। और भाग गया। इस प्रकार सुदर्शन की रक्षा हुई।

सुदर्शन, अर्जुन माली को अपने साथ भगवान महावीर के पास ले गये। घट-घट अतर्यामी भगवान को उसे मार्मिक उपदेश सुनाया जिससे प्रभावित होकर अर्जुन माली विरक्त हो गया। दीक्षा लेकर भगवान की आज्ञा से बेले-बेले की तपस्या कर उसी राजगृही नगरी मे गोचरी के लिए जाता देखकर लोग उसे ताड़ना तर्जना कर कहते, इसने मेरी मॉ को मारा, मेरे पिता को मारा, मेरे भाई को मारा, आदि पारिवारिक सज्जनो को मारा। कही आहार मिलता तो पानी नहीं, पानी मिलता तो आहार नही। अर्जुन माली यह सोचकर कि ये कितने उपकारी है। ये मुझे यो ही ताड़ना तर्जना कर छोड़ रहे हैं। समभाव से सहनकर कर्म क्षय कर मुक्त बने।

प्रश्न 4 सिद्ध करो कि अर्जुन माली आदर्श क्षमावान था?

उत्तर दीक्षा लेने के बाद अर्जुन मुनि निरन्तर बेले-बेले का तप करते रहे। पारणे के दिन वे स्वय नगर मे गोचरी के लिए जाते। कुछ अज्ञानी लोग उनसे घृणा करते और कहते कि इस हत्यारे ने मेरे मॉ, बाप, भाई, बहन तथा पत्नी को मारा है। कोई गाली देता, कोई उस पर थूक देता, कोई ककर पत्थर से मारता। पर अर्जुन मुनि के मन मे उनके प्रति द्वेष नही होता वे सब कुछ सहन कर लेते। उन्हे गोचरी मे रोटी मिलती तो पानी नही। पानी मिलता तो रोटी नही फिर भी वे उदास नहीं होते। वे सोचते कि यदि मै मिथ्यात्वी देव की श्रद्धा, भक्ति, पूजा नहीं करता तो इतनी हत्याएँ क्यों होती। ऐसी विचार कर वे समभाव रखाकर सहन करते यही उनकी आदर्श क्षमा थी।

प्रश्न 5 घृणा पाप से हो, पापी से नही? इस उक्ति को स्पष्ट करें?

उत्तर "घृणा पाप से करनी चाहिए पापी से नही" जिस पापी के सुधरने की सभावना हो उसके प्रति घृणा करने से वह सुधरता हुआ भी नही सुधर सकता। हाँ पापी के हृदय से पाप के प्रति घृणा उत्पन्न करने के लिए पापी से घृणा की जाये तो यह कार्य किसी अपेक्षा से उचित भी नही कहा जा सकता है। भगवान महावीर का सदेश है—

घृणा पाप से हो, पापी से नही कभी लवलेश।

भूल सुझाकर प्रेम मार्ग से करो उसे पुण्येश।
यही है महावीर सदेश॥

न 6 अर्जुन माली की कथा से क्या शिक्षा मिलती है ?

र 1 सच्चे भगवान अरिहन्त देव ही है। अन्य देवी देवता हमारी कुछ भी सहायता नही कर सकते।

2 अरिहन्त के भक्त को किसी से भय नही होता।

3 किसी से घृणा मत करो, उसके उद्धार से सहायक बनो।

4 पश्चाताप और तप से पापी भी मोक्ष पाते है।

5 अधर्मी और धर्म त्यागी इस लोक मे दु खी देखे जाते है।

कामदेव श्रावक

श्न 1 कामदेव श्रावक की लौकिक सम्पन्नता का परिचय दो ?

तर चम्पानगरी मे बहु प्रतिष्ठित कामदेव नाम के गण मान्य सेठ रहते थे। उनके सभी पुत्र सुयोग्य एव अनुकूल थे। कामदेव के भद्रा नामक स्त्री स्त्रियोचित सभी गुणों से सम्पन्न श्राविका थी। उनके 6 करोड स्वर्ण मुद्राएँ व्यापार मे लगी थी। 6 करोड घर, जमीन, जायदाद मे और 6 क्रोड स्वर्ण मुद्राएँ खजाने मे जमा थी। और 60,000 साठ हजार पशुधन (गाय, बैलादि) था।

श्न 2. कामदेव पर आये उपसर्गों का वर्णन करो ?

त्तर पौषध शाला मे पौषध कर रहे कामदेव को आधी रात के समय एक मिथ्यात्वी देव ने तीन उपसर्ग दिए। पहला पिशाच का दूसरा हाथी का तथा तीसरा सर्प का। इन रूपो मे भयकर रूप बनाकर कामदेव को कहा — कि तुझे धर्म छोड़ना उचित नही है फिर भी यदि तू धर्म से विचलित नहीं होता हे, तो पिशाच के रूप मे मैं तलवार से तेरे शरीर के टुकड़े टुकड़े कर दूगा, जिससे तू दु ख पाकर मर जायेगा। हाथी के रूप मे भी यही बात कही—कि यदि तू अपने नियम व्रत नहीं छोड़ेगा तो मै तुझे आकाश में उछालकर तीखे दातो पर झेलकर पेरों तले रोंद दूँगा। और सर्प के रूप मे भी यही कहा कि यदि तू धर्म को नहीं छोड़ेगा तो में तेरे गले मे तीन वार फासी की तरह लिपटूगा और तेरे को डसूगा जिसमे तू विना मोत मर जायेगा। तीनो रूप मे तीन-तीन वार यही व्रात कहने पर भी कामदेव डिगे, नही धर्म को नही छोड़ा, व्रतो को नही तोडा।

तब वह देव असली रूप से प्रकट होकर कामदेव की अपने नियमो मे दृढ रहने की प्रशसा की और क्षमा मागी।

प्रश्न 3 कामदेव को उपसर्ग देने देव क्यो आया?

उत्तर देव ने अपने आने का कारण कामदेव को बताते हुए कहा—"देवलोक मे इन्द्र ने तुम्हारी प्रशसा करते हुए कहा कि वह निर्ग्रन्थ प्रवचन मे इतने दृढ है कि कोई भी देव दानव उसे धर्म से डिगाने में समर्थ नही है।" परन्तु मुझे उस बात पर विश्वास नही हुआ। इसलिए मैने तुम्हें तीन बडे-बडे उपसर्ग देकर आज प्रत्यक्ष देख लिया कि तुम्हारी धर्म मे अटल श्रद्धा है।

प्रश्न 4 उपसर्ग समाप्ति के बाद क्या हुआ?

उत्तर 1 देव ने अपना वास्तविक रूप प्रकट कर कामदेव को धन्यवाद दिया। 2 अपने आने का कारण बता कर उसे उपसर्ग द्वारा दिए गए कष्टो के लिए बार-बार क्षमा मागी। अपने को उपसर्ग रहित जानकर कामदेव ने सागारी सथारा पार लिया और नगर मे भगवान पधारे है ऐसा जानकर बिना पौषध पारे ही भ के दर्शनार्थ गया। भगवान ने सभी को धर्म कथा सुनाने के बाद कामदेव से कहा—कामदेव! तुम्हे रात्रि को देवता ने तीन उपसर्ग दिये थे पर तुम विचलित नही हुए। क्या यह वार्ता सत्य है। कामदेव की स्वीकृति पर भगवान ने उपस्थित सत-सतिया से फरमाया कि जब एक श्रावक भी कष्टों मे घबराता नही, धर्म मे दृढ़ रहता है, तो आप को भी उपसर्गो को दृढता पूर्वक सहन करना चाहिए।

प्रश्न 5 कामदेव के जीवन से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर 1 साधु नही तो दृढ धर्मी श्रावक तो अवश्य बनो।

2 स्वय गृहस्थी चलाते हुवे धर्म की सम्यक् आराधना अधिक नही हो सकती।

3 देव, मनुष्य, तिर्यच के उपसर्ग आने पर धर्म मे दृढ रहो।

4 दृढ धर्मी की देव, इन्द्र तो क्या भगवान भी प्रसशा करते है।

5 छोटो के उदाहरण से भी शिक्षा लेनी चाहिए।

सुलसा श्राविका

प्रश्न 1 सुलसा श्राविका का परिचय दो ?

उत्तर राजगृही नगरी में नाग नामक सारथी (सेनापति) की धर्मपत्नी का नाम सुलसा था।

भगवान महावीर की 3 लाख 18 हजार श्राविकाओं में उसका प्रथम स्थान था। क्योकि वह सम्यक्त्व में दृढ़ थी। और दान आदि अनेक गुण से सम्पन्न थी। उसके पुत्र नही था तो भी उसे इसकी चिंता नही थी।

प्रश्न 2 सुलसा और नाग की बात सक्षिप्त मे बताओ।

उत्तर नाग को पुत्र की इच्छा थी, उसके लिए वह मिथ्यात्वी देव देवियों की पूजा करता और मंत्रतन्त्र जपता रहता। तब सुलसा ने अपने पति से कहा—अन्य मिथ्यात्वी देव देवी की पूजा करना और तन्त्र-मन्त्र पर श्रद्धा रखना मिथ्यात्व है। सच्चे श्रावक को ऐसे कार्य नही करने चाहिए। नाग ने कहा—तुम्हारा कहना ठीक है। मैं तो अरिहन्त देव और नमस्कार मन्त्र पर ही श्रद्धा रखता हूँ। मैं उन्हें ससार तारक और मोक्ष दाता मानता हूँ। परन्तु ये लौकिक देव और मत्र-तन्त्र, पुत्रादि की लौकिक इच्छा पूरी करते हैं। इसलिए इनको पूजता और स्मरण करता हूँ। सुलसा बोली—स्वामी। क्या पाषाण आदि के रूप मे देव योनि के देव है। नही तो इन्हे देव मानना मिथ्यात्व है। यदि हमने पूर्व जन्म में पुण्य नही कमाये है। तो अदृश्य रहे हुए देव भी हमारी सहायता नही कर सकते। नाग — तुम ठीक कहती हो मान लो हमने पुण्य कमाये हो और वे अभी उदय मे नही आये हो तो वे देवता और मन्त्र-तन्त्र उन दबे हुए पुण्य को उदय में लाकर हमारी इच्छा पूर्ण कर सकते है। सुलसा-आप भी ठीक कहते है। पर इसके लिए इन मिथ्यात्वी देवो को पूजना तो मिथ्यात्व ही है। हाँ आपको पुत्र की इच्छा हो तो दूसरी शादी कर लीजिए। मै वाझ रहना ज्यादा पसन्द करुगी। नाग-सुलसे। तुम्हारी बात मानकर मैं मिथ्यात्व प्रवृत्ति छोड़ता हूँ। सुलसा—आपने अच्छा निश्चय किया। धर्म पर दृढ रहने से हमारे अशुभ कर्म नष्ट होवेंगे। उसके प्रभाव से सम्यक्त्वी देव हमारी मदद करेंगे।

प्रश्न 3 सुलसा की [illegible] कैसी परीक्षा ली ?

उत्तर 1 शकेन्द्र ने भरी सभा में देवताओ के सामने सुलसा की प्रसशा की 2 देव ने सुलसा की साधु के रूप मे परीक्षा लेकर उसके दृढ सम्यक्त्व की प्रशसा की और उसके पति के पुत्र प्राप्ति की इच्छा पूर्ण करने के लिए पुत्रोत्पत्ति मे सहायक 32 गोलियाँ दी। और कहा कि समय पडने पर मुझे याद करना। 3 चम्पानगरी मे भगवान महावीर ने अबड श्रावक को कहा कि तुम राजगृही जा रहे हो वहा मेरी दृढ सम्यक्त्वी श्राविका सुलसा रहती है। 4 अबड द्वारा एक सन्यासी के रूप मे, 2 आकाश मे अधर कमल पर आसन लगाए योगी के रूप मे, और 3 अबड श्रावक के रूप में उसकी परीक्षा ली।

प्रश्न 4 सुलसा के जीवन से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर 1 दृढ सम्यक्त्वी की देव तो क्या भगवान भी प्रशसा करते है।

2 दृढ़ सम्यक्त्वी की परीक्षा रूप कसौटियाँ भी होती रहती है।

3 मिथ्यादृष्टि के साथ मिथ्यात्व की प्रवृत्ति भी छोडे।

4 दृढ सम्यक्त्वी दूसरो को भी दृढ़ करता है।

5 दृढ़ सम्यक्त्वी की भी लौकिक आशाएँ पूर्ण होती है।

सुबाहु कुमार

प्रश्न 1 सुबाहु कुमार का परिचय दीजिये?

उत्तर हस्तिशीर्ष नगर के राजा अदीन शत्रु की धर्मपरायणा महारानी धारिणी की कुक्षी से सुबाहु कुमार का जन्म हुआ। जन्म के पूर्व माता ने सिंह का स्वप्न देखा। बडा होने पर उसने 72 कलाएँ सीखी। उसका 500 राज कन्याओ के साथ एक दिन मे लग्न हुआ और वह अपनी पत्नियो के साथ आनन्द से रहता था।

प्रश्न 2 भगवान ने किन पॉच बातो का विस्तार से उपदेश दिया?

उत्तर भगवान विचरण करते हुए हस्तिशीर्ष नगर मे पधारे तब राजा रानी राजकुमार सुबाहु अपनी 500 रानियो के साथ प्रवचन सुनने गए। प्रजा भी गई। भ. ने 1 आस्तिकता (देव गुरु धर्म में श्रद्धा) 2 निकाचित कर्म को भोगना ही पड़ता है (कड़ाण कम्माण न मोक्ख अत्थि) 3 जैन धर्म का स्वरूप और पालन का फल 4 चार गति और सिद्धि का कारण 5 साधु धर्म और श्रावक धर्म के 12 व्रत।

प्रश्न 3 भगवान से गौतम स्वामी ने क्या पूछा? भ ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर गौतम स्वामी ने पूछा—भगवान ! यह सुबाहु कुमार हम सब को प्रिय लगता है। यह पूर्व भव मे कौन था। 2 क्या नाम गौत्र था 3 क्या दान दिया 4 क्या व्रत उपवास किया 5 क्या धर्म सुना। भगवान ने फरमाया—यह पूर्व भव मे हस्तिशीर्ष नगर मे सुमुख नामक धनवान और दृढ़ धर्मी श्रावक था। इसने सुदत्त अणगार को मासखामण के पारणा हेतु अपने घर की तरफ आते हुए देख पाँच अभिगम का पालन कर दाता वस्तु और पात्र की शुद्धि पूर्वक दान देने के पूर्व, दान देते समय, और दान देने के बाद मे मन वचन, काया की शुद्धि पूर्वक दान दिया जिससे ससार कम किया। और मनुष्यायु का बध किया। जिससे देवो ने स्वर्ण वृष्टि की 2 पुष्प वृष्टि की 3 ध्वजा फहराई 4 दुदुभी बजाई और 5 अहोदान की घोषणा की। सबने उसकी प्रशसा की।

प्रश्न 4 गौतम स्वामी ने सुबाहु कुमार के भविष्य के बारे मे क्या पूछा ?

उत्तर गौतम स्वामी ने पूछा कि—भगवान ! इसका भविष्य फरमाइये। तब भगवान ने कहा—यह आगे चलकर मेरे पास दीक्षा लेगा। और ग्यारह अग आदि सीखेगा, तप कर सथारा पूर्वक आयु पूर्ण कर देव बनेगा और 15वे भव में सिद्ध बुद्ध और मुक्त होगा।

प्रश्न 5 सुबाहु कुमार के जीवन से क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर 1 पात्र का योग मिलने पर शुद्ध भाव पूर्वक निर्दोष दान दो।
2. सुपात्र दान से ससार घटता है। मुक्ति निकट होती है।
3 सुपात्र दान से आत्मा की क्रमश उन्नति होती है।
4 सुपात्रदानी को लौकिक सुख भी मिलता है।
5 सुपात्र दानी सभी का प्रिय बनता है।

छोटी बहु रोहिणी

प्रश्न 1 रोहिणी आदि नामो का अर्थ बताओ ?

उत्तर रोहिणी — धन सम्पत्ति परिवार की वृद्धि करने वाली।
सरक्षिका — धन सम्पत्ति परिवार की रक्षा करने वाली
भोगवती — धन सम्पत्ति परिवार का उपभोग करने वाली
उज्झिता — घर का कचरा फेकने वाली।

प्रश्न 2 रोहिणी सबसे अच्छी बहु क्यो कहलाई ?

उत्तर उसने अपने श्वसुर से प्राप्त अनाज के पाच दानो को अपने भाई के पास पीहर भेजकर अपने खेत मे बोवाकर उसकी वृद्धि करवाई, जिससे वह सबसे अच्छी बहु कहलाई।

प्रश्न 3 चारो बहुओ को क्या-क्या कार्य सौंपे गए थे ?

उत्तर (1) उज्झिता को घर का कचरा साफ करने का क्योकि उसने वस्तु का महत्त्व न समझकर फेक दिए।

(2) भोगवती को रसोई बनाकर खाने खिलाने का क्योकि उसने बुजुर्गो के द्वारा प्रदत्त वस्तु को प्रसाद समझकर खा गई।

(3) सरक्षिका को धन सम्पत्ति की रक्षा करने का क्योकि उसने उन दानो का सरक्षण किया।

(4) और रोहिणी को घर की मालकिन बनाई क्योकि उसने उनका महत्त्व समझकर वृद्धि करवाई।

प्रश्न 4 धन्ना सेठ ने सबके सामने परीक्षा क्यो ली ?

उत्तर उसने सोचा कि इन चारों बहुओ मे कौन किस योग्य है इसकी परीक्षा कर इन्हें कार्य सौंपा जाए। और लोग भी इन बहुओ के कार्य को देखकर निर्णय कर सके।

प्रश्न 5 रोहिणी की कथा से क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर 1 बडों के द्वारा दी गई वस्तु को तुच्छ मत समझो। 2 प्राप्त वस्तु का सरक्षण सगोपन करो। 3 इससे अपनी उन्नति होती है। 4 फल पाने मे धैर्य रखो।

धर्मनिष्ठा महासती सुभद्रा

प्रश्न 1 सुभद्रा का परिचय दीजिए।

उत्तर वसन्तपुर के जिनदास श्रेष्ठी की पुत्री का नाम सुभद्रा था। वह नाम के अनुसार ही अच्छी स्वभाव वाली थी। पारिवारिक सस्कारो के कारण जैन धर्म के सिद्धान्तों में उसका अटल विश्वास था। उसकी धार्मिक रुचि और सदाचरणो के गुणो के कारण उसका पिता उपर्युक्त वर की तलाश मे था। वह जिन धर्म के अनुयायी किसी पुरुषार्थी युवक को ही अपनी पुत्री देना चाहता है। सुभद्रा के सौंदर्य और गुणो की दूर-दूर तक प्रसिद्धि हो चुकी थी। चम्पानगरी का एक

धनवान युवक बुद्ध दास सुभद्रा के गुणो पर आसक्त हो गया। अत उसने अन्य धर्मावलवी होते हुए भी ऐसा प्रदर्शन किया। और विश्वास दिलाया कि मानो वह जिन धर्म का परम भक्त हो। इससे जिनदास ने सुभद्रा का विवाह उसके साथ सम्पन्न कर दिया।

श्न 2 शादी के बाद सुभद्रा के साथ ससुराल वालो का व्यवहार कैसा रहा ?

त्तर वह अपने पति बुद्ध दास के साथ ससुराल मे आई। तब उसे पता चल गया कि सारा परिवार अन्य धर्मावलबी है। सुभद्रा जब जिन धर्म की दैनिक अराधना करती तो घर के सभी लोग उसे अनादर की दृष्टि से देखते। किन्तु सुभद्रा को अपने धर्म का पालन करना था। और दोनो कुलो की मर्यादा भी रखनी थी। अत उसने पति से सामायिक आदि क्रियाएँ यथावत् जारी रखने की अनुमति मागी। किन्तु सकीर्ण विचारधारा वाले बुद्ध दास ने सुभद्रा की धार्मिक स्वतन्त्रता को तो स्वीकार नहीं किया। उलटे पत्नी से बोलचाल भी बन्द कर दी। फिर भी सुभद्रा अतर्मन से जिन धर्म और शील धर्म का पालन करती हुई रहने लगी।

श्न 3 सुभद्रा के साथ पारिवारिक व्यवहार और मुनिराज की घटना लिखो।

उत्तर सुभद्रा की इस धार्मिक निष्ठा के कारण उसकी सास, ननद भी उससे रुष्ट थी। एक दिन सुभद्रा ने घर पर आये हुये जिन-कल्पी मुनि को वदनाकर आहार बहराने लगी। तो मुनि की ऑख मे तृण का टुकड़ा गिरा होने से पानी गिरते देखा। मुनि की ऑख मे जीभ द्वारा तृण निकालते समय सुभद्रा के ललाट पर लगी कुंकु बिन्दी मुनिराज के ललाट पर लग गई। किन्तु उसको इसका कोई पता नही चला। मुनि आहार लेकर चले गये। सुभद्रा की सास ननन्द इस घटना को देख रही थी। उन्होने द्वेष भाव से सुभद्रा पर कलंक लगा दिया कि सुभद्रा और जैन मुनि के अनुचित सम्बन्ध थे। उन्होने बुद्धदास को बुलाकर मुनिराज के ललाट पर लगी हुई बिन्दी दिखा दी, और चिल्लाते हुए सुभद्रा को कुलटा कहने लगी। बुद्धदास ने भी सबके सामने सुभद्रा को अपमानित किया। सुभद्रा के द्वारा सही बात बता देने पर भी उन धर्म विरोधियो को विश्वास नही हुआ। तब सुभद्रा ने प्रतिज्ञा कर ली की इस कलक का निवारण होने पर ही अन्न जल ग्रहण करूँगी। अन्यथा नही। ऐसा विचार कर वह नमस्कार मत्र का दृढ़ता व विश्वास के साथ एकाग्रता से

ध्यान लगाकर बैठ गई। परिवार के लोग उसकी हँसी उडाते हुए अपने कार्यो मे लग गये।

प्रश्न 4 चम्पानगरी के दरवाजे कैसे खुले? और उसका सम्मान किसने किया?

उत्तर एकाएक चम्पानगरी मे एक समस्या उठी। नगर के परकोटे के प्रमुख चार दरवाजे जिन्हे रात मे बन्द कर दिया गया था, प्रात बहुत प्रयत्न करने पर भी नही खुले। इससे सारा जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया। अत मे राजा ने विचार करने के लिए एक सभा बुलाई। तभी वहा आकाश वाणी हुई। नगर की कोई भी शीलवती नारी कच्चे सूत के धागे से बधी हुई चलनी द्वारा कुवे में से पानी निकालकर दरवाजों पर छिड़केगी तभी ये दरवाजे खुल सकेंगे। राजा ने तुरन्त ही नगर मे घोषणा करवा दी। जिसे सुनकर नगर की स्त्रियॉ अपने सतीत्व की परीक्षा देने और नगर का उद्धार करने कुवे पर इकट्ठी हुई। पर कोई भी स्त्री कुवे पर चलनी से पानी नही भर पाई क्योकि मन वचन काया की पूर्ण शुद्धता के अभाव मे वे इस अभियान में सफल नही हो सकी।

सुभद्रा के परिवार वालो ने इस चर्चा को सुनकर सुभद्रा को चिढ़ाने के लिए कहा—तुमसे बडी सती नगर में कौन है। लो! तुम्हारे शील की परीक्षा देकर नगर के दरवाजे खोल दो, तो राजा भी तुम्हे पुरस्कार देगे। और तुम्हारे पर लगा यह कलक भी मिट जायेगा।

सुभद्रा आत्म-विश्वास के साथ नगर के कुवे पर पहुँची। उसने अर्हन्त भगवान का स्मरण कर सूत के कच्चे धागे से चलनी बाधकर कुवे मे डाली और खीची तो वह जल से लबालव भरी हुई आई। चारो ओर सुभद्रा की जय जयकार होने लगी। राजा के साथ जाकर सुभद्रा ने नगर के तीनो दरवाजो पर उस पानी को छिड़का, दरवाजे खुल गये। राजा ने कहा — कि चौथा दरवाजा भी खोल दो। तब सुभद्रा ने कहा कि इसे बद ही रहने दीजिए क्योकि मेरी जैसी अन्य कोई बहन पर किसी स्वार्थी व्यक्ति द्वारा लगाये हुए लाछन को मिटाने के लिए वह उसे खोलकर अपनी परीक्षा दे सकेगी, और इस कसौटी से नगर की स्त्रियॉ भी शील धर्म में दृढ रह सकेगी।

राजा सुभद्रा की इस बात से सतुष्ट हुआ, और उसे सम्मानित किया। इस घटना ने सुभद्रा के परिवार वालो की ऑखे खोल दी। वे मुह छिपा रहे

थे। तब सुभद्रा ने जाकर अपनी सास ननन्द व पति के चरण छुए। और उन्हे क्षमा करते हुए सच्चे धर्म की जानकारी दी। इससे बुद्धदास का सारा परिवार जैन धर्म स्वीकार कर सन्मार्ग मे लगा।

प्रश्न 5 सुभद्रा की कथा से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर 1 अपने जीवन मे धार्मिक रुचि और सद्व्यवहार बढाते रहना चाहिए।
2 सकट आने पर समभाव से सहन करना चाहिए।
3 सम्मान मिलने पर गर्व नही करते हुए सबके साथ विनम्रता करनी चाहिए।
4 समय आने पर अपने आचरण की परीक्षा देनी चाहिए।
5 अपने गुणो और सदाचरण से हम दूसरो को भी प्रभावित कर सकते हैं।

विवेक

विवेक एक कीमती धन भण्डार है। विवेक के बिना धर्म की शोभा नही। विवेक का अर्थ है प्रत्येक कार्य यतनापूर्वक करो। घर पर कोई अतिथि आवे तो आइये पधारिये बिराजिये कहते हुए उनका स्वागत कर उन्हे नमन जय जिनेन्द्र करना। मधुर वार्तालाप करना। कहना — मेरे योग्य सेवा फरमाइये। बड़ो व गुरुजनों का आदर करना। छोटो से प्रेम रखना। अँधे, लूले, लगड़े की सेवा करना। साधु सतियॉ जी को देखकर प्रसन्न होकर वदना करना। बेकार जमीन देखकर नाक साफ करना, थूकना उस पर मिट्टी डालना, सब जगह स्वच्छता रखना, ठीक समय पर पाठशाला जाना, मन लगाकर पढ़ाई करना। इधर उधर नही देखना।

शिक्षक की आज्ञा लेकर बाहर जाना। रात्रि मे जल्दी सोना, प्रात जल्दी उठना। सोते उठते भगवान का नाम लेना।

दाँतो की सफाई करना, नही तो अनेक रोग हो जाते है। व्यायाम कसरत करना। शरीर को रगड़कर नहाना। स्वय अपने हाथो से कपड़े धोना। खूब भूख लगने पर भोजन करना। बाजार की गन्दी चीजे नही खाना। हल्का भोजन करना। आँखों की सफाई करना। नाटक सिनेमा नही देखना। आलस नही

करना। अच्छे बालको से मित्रता करना। नया नया ज्ञान सीखना। ऐसे विवेकी बालक धर्म के योग्य और देश के शृगार होते हैं।

विनय

मगध देश मे श्रेणिक राजा का मत्री अभय कुमार था। राजमहल के पास एक राज्य का बगीचा था। उसमे सभी ऋतुओं मे सभी फल देने वाले बहुत से वृक्ष थे। बगीचे की सफाई एक हरिजन करता था।

एक दिन उस हरिजन की स्त्री को आम खाने की इच्छा हुई। उसने पति से कहा। उस समय आम का मौसम नही था। हरिजन ने उस राजबाग से आम लाकर पत्नी को दे दिये। रानी घूमती फिरती उसी वृक्ष को देखकर राजा के पास आम की चोरी की शिकायत की। राजा ने अभयकुमार से पता लगाने को कहा। मत्री अभयकुमार ने पता लगाकर हरिजन को राजा के सामने खडा किया। हरिजन ने चोरी मजूर की। हरिजन को राजा ने पूछा कि रात दिन दरवाजे पर पहरा लग रहा था तब तूने आम कैसे चुरा लिए।

हरिजन ने कहा मैं दो विद्याएँ जानता हूँ। एक विद्या से मैं डालियाँ झुकाकर फल लेकर वापस डालियॉ ऊँची कर देता हूँ। दूसरी विद्या से मैं अदृश्य हो जाता हूँ। इन के बल पर मैंने आम चुराकर पत्नी की इच्छा पूर्ण की। राजा को इस बात पर बहुत क्रोध आया और हरिजन को कड़ी सजा देने का सोचा।

मत्री ने कहा—इससे आप इसकी विद्याएँ ले लेवे, बाद मे फॉसी दे देना। राजा क्रियाएँ सीखने लगा, पर विद्याएँ नही सीख सका। तब मन्त्री ने कहा पिताजी। आप इस हरिजन से विनय करेगे। तब आपको विद्याएँ याद होगी।

यह सुनकर राजा शीघ्र सिंहासन से उटा और उसे सिंहासन पर विठा दिया। आप नीचे वैठकर विद्याएँ सीखने लगा। विद्याएँ जल्दी ही याद हो गई। अव हरिजन को सजा देने की राजा की इच्छा नहीं हुई। कि गुरु को कौन सजा दे। इसने मुझे विद्याएँ सीखाई। यह तो मेरा गुरु है। गुरु का सम्मान करना चाहिए।

आध्यात्मिक जीवन के नियम

१. प्रत्येक कार्य में समय की पाबन्दी [illegible] टेबल के अनुसार अवश्य ही होनी चाहिए।

२. रात्रि को निश्चित समय पर शयन की तैयारी।

३. प्रातः [illegible] संकीर्तन से प्रेमपूर्वक [illegible] नमस्कार करके ध्यान करना।

४. प्रतिदिन कम से कम १५ मिनट का मौन करना, मन, वचन, काया की एकाग्रता की साधना।

५. [illegible] समय का मन को [illegible] देते हुए [illegible] का [illegible] करना।

६. ज्ञान सिद्धि के लिए [illegible] का नियमितपूर्वक स्वाध्याय करना।

७. [illegible]

८. [illegible]

९. अपने से बड़े सभी [illegible] को चरण छूकर नमस्कार करना।

१०. [illegible] दर्शन एवं विधिपूर्वक वन्दन करना।

११. धर्मगुरुओं के सम्मुख खुले मुँह वार्तालाप नहीं करना।

करना। अच्छे बालको से मित्रता करना। नया नया ज्ञान सीखना। ऐसे विवेकी बालक धर्म के योग्य और देश के शृगार होते है।

विनय

मगध देश मे श्रेणिक राजा का मत्री अभय कुमार था। राजमहल के पास एक राज्य का बगीचा था। उसमे सभी ऋतुओ मे सभी फल देने वाले बहुत से वृक्ष थे। बगीचे की सफाई एक हरिजन करता था।

एक दिन उस हरिजन की स्त्री को आम खाने की इच्छा हुई। उसने पति से कहा। उस समय आम का मौसम नही था। हरिजन ने उस राजबाग से आम लाकर पत्नी को दे दिये। रानी घूमती फिरती उसी वृक्ष को देखकर राजा के पास आम की चोरी की शिकायत की। राजा ने अभयकुमार से पता लगाने को कहा। मत्री अभयकुमार ने पता लगाकर हरिजन को राजा के सामने खडा किया। हरिजन ने चोरी मजूर की। हरिजन को राजा ने पूछा कि रात दिन दरवाजे पर पहरा लग रहा था तब तूने आम कैसे चुरा लिए।

हरिजन ने कहा मैं दो विद्याएँ जानता हूँ। एक विद्या से मैं डालियॉ झुकाकर फल लेकर वापस डालियॉ ऊँची कर देता हूँ। दूसरी विद्या से मैं अदृश्य हो जाता हूँ। इन के बल पर मैंने आम चुराकर पत्नी की इच्छा पूर्ण की। राजा को इस बात पर बहुत क्रोध आया और हरिजन को कड़ी सजा देने का सोचा।

मंत्री ने कहा—इससे आप इसकी विद्याएॅ ले लेवे, बाद मे फॉसी दे देना। राजा क्रियाएॅ सीखने लगा, पर विद्याएॅ नही सीख सका। तब मन्त्री ने कहा पिताजी। आप इस हरिजन से विनय करेगे। तब आपको विद्याएॅ याद होगी।

यह सुनकर राजा शीघ्र सिंहासन से उठा और उसे सिंहासन पर बिठा दिया। आप नीचे बैठकर विद्याएॅ सीखने लगा। विद्याएॅ जल्दी ही याद हो गई। अव हरिजन को सजा देने की राजा की इच्छा नही हुई। कि गुरु को कोन सजा दे। इसने मुझे विद्याएॅ सीखाई। यह तो मेरा गुरु है। गुरु का सम्मान करना चाहिए।

आध्यात्मिक जीवन के नियम

1. प्रत्येक कार्य मे समय की पाबन्दी (टाईम टेबल के अनुसार) अवश्य ही होनी चाहिए।
2. रात्रि को नियमित समय पर शयन की तैयारी।
3. शय्या पर पर्यकासन से एकाग्रतापूर्वक ग्यारह नमस्कार मत्र का ध्यान करना।
4. तत्पश्चात् कम से कम 15 मिनट का चिंतन करना। मन, वचन, काया की एकाग्रता की साधना।
5. जागरण समय का मन को आदेश देते हुए सागारी सथारे का प्रत्याख्यान करना।
6. उत्तम निद्रा के लिए अग-प्रत्यंग की शिथिलतापूर्वक श्वासोश्वास की गणना।
7. प्रात उठकर शय्या पर ही अपने वस्त्र तथा शरीर को भी न देखते हुए ऑखे बन्द कर पर्यकासन से बैठकर एकाग्रतापूर्वक ग्यारह बार नमस्कार मत्र का ध्यान करना।
8. तत्पश्चात् शय्या से नीचे उतर कर प्रज्ञापक दिशा (याने जो वर्तमान में चतुर्विध सघ के सचालक श्री आचार्य महाराज हैं, वे जिस दिशा मे विराजमान हो, उसे प्रज्ञापक दिशा कहते हैं) में मुह कर सुदेव, सुगुरु, सुधर्म के प्रति अटूट श्रद्धापूर्वक तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार विधिपूर्वक घुटने टेक कर वन्दन करना।
9. अपने से बडे सभी पारिवारिक सदस्यो को चरण छूकर नमस्कार करना।
10. गाव मे सत-सतिया जी विराजमान हो तो प्रतिदिन दर्शन एव विधिपूर्वक वन्दन करना।
11. धर्मगुरुओ के सम्मुख खुले मुह वार्तालाप नही करना।

12 दारु, मास, जुआ, चोरी, शिकार, परस्त्रीगमन (वेश्यागमन) व मादक द्रव्यादि सप्त कुव्यसनों का त्याग करना।

13 चवदह नियम का प्रतिदिन स्मरण करना तथा यथा शक्ति प्रत्याख्यान करना।

14. गाव मे जो भी सदस्य मिले, उसका 'जयजिनेन्द्र' पूर्वक अभिवादन करना।

15 प्रातकाल नियत समय पर घटा, आधा घटा या 15 मिनिट का नियमित स्वाध्याय करना।

16 इसके पूर्व निम्न तीन वातो पर अवश्य ही ध्यान देना (1) स्वाध्याय के लिए समय की पावन्दी अति आवश्यक है। यह आत्मिक खुराक है। (2) सामायिक का वेश (यूनिफार्म) वदलना अति आवश्यक है। वने जहा तक वस्त्र अलग ही रखना। (3) घर मे रहे हुए वृद्ध तपस्वी रोगी की देखभाल करने वाला दूसरा न हो तो उनकी शारीरिक वाधाओ की समय के पूर्व निवृत्ति कराना अति आवश्यक है। (धर्म से कर्त्तव्य वडा है।)

17 स्वाध्याय के पचास मिनिटो का दस, पन्द्रह व पच्चीस मिनिटो मे विभाजन करना। (1) प्रथम के दस मिनिटो मे मन की एकाग्रता के लिए हाथ की अनानुपूर्वी के माध्यम से साधना करना। (2) सधे हुए मन मे बाद के पन्द्रह मिनिट के चिन्तन-मनन मे पूर्व दिवस के दैनिक कार्यो का वारीकी से निरीक्षण करते हुए एक-एक त्रुटि को एक-एक माह के अभ्यास से सर्वथा दूर करना। (3) शेष पच्चीस मिनिटों मे महापुरुषो के जीवन-चरित्र व उनके द्वारा रचित साहित्य को मनन पूर्वक पढ़ते हुए एक-एक गुण को एक-एक माह के अभ्यास से जीवन मे धारण करना, अन्य वाते न करना।

18 क्रिया मे कर्म, उपयोग में धर्म व परिणाम में वन्ध के सिद्धात को सदैव स्मरण कर व्यावहारिक जीवन सुधारना।

19. व्याख्यान मे नियत समय पर उपस्थित होना व वहां पर मौन रखना।

20 पाक्षिक प्रतिक्रमण व आलोचना करना।

21 प्राणीमात्र पर मैत्रीभाव रखना। पानी छाने विना न पीना।

22. सद्गुणी आत्माओ के प्रति आदरभाव व गुण ग्रहण का चाव रखना।

23 दु खी प्राणियो पर सहृदयतापूर्वक अनुकम्पा भाव रख उनके दु खों को यथाशक्ति दूर करना।

24 विरोधी प्रवृत्ति करने वालो पर तथा शत्रुओ पर भी समभाव रखना। (घृणा पाप से करना, पापी से नही)।

25 जड-चैतन्य के भेद-ज्ञानपूर्वक आत्मिक शक्ति पर अटल निष्ठा रखना।

26 मोह ममत्व के परिहारपूर्वक सात्विक प्रेमभाव का विस्तार करना।

27 क्रोध, मान, माया, लोभ, रागद्वेष, अज्ञान व पापकारी प्रवृत्तियों के त्यागपूर्वक जीवन मे क्षमा, नम्रता, सरलता व निर्लोभता आदि सद्गुणो को धारण कर जीवन का विकास करना।

28 धार्मिक पर्वों मे सम्मिलित रूप से धार्मिक अनुष्ठान करना।

29 प्रतिदिन कुछ न कुछ नया ज्ञान सीखते हुए सीखे हुए ज्ञान की पुनरावृत्ति करना।

30 उत्पन्न शकाओ का समुचित समाधान प्राप्त करना। (सशयात्मा विनश्यति)

31 वार्तालाप में नम्रता का व्यवहार करते हुए सदैव मीठे वचन का उच्चारण करना।

32 अपने पुत्रवधु व जमाता के प्रति पुत्री व पुत्र का सा व्यवहार करना।

33 अपने सास-श्वसुर के प्रति माता-पिता का सा व्यवहार करना।

34 अपनी जेठानी व जेठ को माता-पिता व देवर-देवरानी को पुत्र व पुत्री समझना।

35 अपने से बड़ों के सामने नही बोलना। उस समय उनकी बात सुनकर बाद मे यदि कोई आवश्यक समाधान हो तो नम्रतापूर्वक निवेदन करना।

36 अपनी स्त्री के प्रति भी कभी अपमानजनक शब्दो का व्यवहार नही करना। भारी अपराध हो जाने पर भी शाति से उसे समझाना।

(यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता)

37 अपने आश्रित तथा पडोसियो के साथ सदैव सद्भावनापूर्ण व्यवहार करना।

38 दूसरो के प्रति कोई कार्य करने से पूर्व यह ख्याल करना कि यदि यही कार्य दूसरा मेरे प्रति करे तो मुझे कैसा लगे। यदि वह मुझे पसन्द न हो तो वह कार्य दूसरों के प्रति नही करना।

39 अन्य की निन्दा व आत्मप्रशसा कदापि नही करना। देखना हो तो अन्य के गुण व स्वय के दोष देखना।

40 अपने बालक बालिकाओ को बचपन से धार्मिक शिक्षण नियमित रूप से प्राप्त कराने हेतु जैनशाला भेजना। जहा जैनशाला न हो, वहा उचित व्यवस्था करना।

41 आगतुक का यथोचित स्वागत सत्कार करते हुए नम्र व मीठे शब्दों से वार्तालाप करना।

42 जहा कहा भी जावे, वहा रहन-सहन, खान-पान मे सादगी का ध्यान रखना। बने जहा तक घर मे भी सादगी हो।

43 सभा-सोसायटी आदि मे उपस्थित सज्जनों का अभिवादन करते हुए यथोचित स्थान पर बैठने का ध्यान रखना।

शाश्वत स्वर

1 प्रभु भक्ति के लिए हृदय की पवित्रता होना आंवश्यक है।

2. प्रत्येक धर्म का अनादर नही करना चाहिए।

3 आत्म विकास के लिए साधना आवश्यक है।

4 जन्म और मृत्यु देह से सम्बन्धित है (जुड़े है), आत्मा से नही। आत्मा सदैव अजन्मा व शाश्वत (अमर) है।

5 आकृति से मानव बनने की अपेक्षा प्रकृति से मानव बनना श्रेष्ठ है।

6 भौतिक साधनों से मिलने वाली सुविधा केवल सुखाभास है, मानसिक शाति उनसे भिन्न है।

7 बिना सोचे समझे भावावेश मे लिया गया निर्णय कष्टप्रद होता है।

8 वर्तमान परिस्थिति में जीना सीखें।

9 अयोग्य व्यवहार व्यक्ति की अयोग्यता का परिचायक होता है।

10 जन्म के साथ मृत्यु निश्चित है, इस क्रम को बदलने वाला जीव ससार मे नही, मोक्ष में निवास करता है।

11 पाप कर्म को जितना छुपाया जाय उतना वह जड मूल से मजबूत होता जायेगा और उखाड़ने पर उसकी पकड़ ढीली होती जायेगी।

12. सेवा करने वालों को मेवा मिलता है।

13 व्यक्ति का नही, उसके व्यक्तित्व का आदर होता है।

14 अपने पोषण हेतु पर का शोषण करना पाप है।

15 सद्गुरु सूचना पट्ट की तरह मार्गदर्शक होते हैं, उनके सकेतानुसार चलना अनुयायियो का काम है।

16 निन्दा करने वाला अच्छाई मे भी बुराई खोज लेता है।

17 बर्हिमुखी से अतर्मुखी बनना सीखे।

18 मनुष्य की योग्यता का मापदण्ड उसका व्यवहार होता है।

19 सब कुछ सरलता से बदला जा सकता है, किन्तु मन का बदलना बहुत कठिन है।

20 जो परिवार को प्रसन्न नही रख सकता वह समाज व राष्ट्र का क्या भला कर सकेगा?

21 अनुकूल या प्रतिकूल प्रत्येक परिस्थिति मे मन का सन्तुलन बनाये रखें।

22. क्रोध के क्षणों में जोश रहता है, होश नही रहता।

23 मन के गुलाम नही, मन के मालिक बनिये।

24 जीवन की दशा बदलने के लिए दिशा पहले बदलें।

25 विनम्रता ज्ञानवान का लक्षण है।

26 कपटी व्यक्ति की मित्रता समाप्त हो जाती है।

27 जन्म और मृत्यु हमारे हाथ मे नही, किन्तु बीच का जीवन बनाना हमारे हाथ की बात है।

28 अहकारी व्यक्ति धरती का अलकार नही बन सकता।

29 सासारिक सम्बन्ध कभी शाश्वत नही होते, जो शाश्वत हैं, वे सम्बन्ध नही रखते हैं।

30 पुरुषार्थ करने वाला व्यक्ति लक्ष्य को प्राप्त करता है।

31 ज्ञान सर्वत्र आदरणीय होता है।

32. दृढ विश्वास और सद्प्रयास ही सफलता की कुजी है।

33 धनवान बनने की इच्छा जीवन की एकमात्र ऊँची इच्छा नही हो सकती।

34 जो अटूट आत्म विश्वास लेकर आगे बढता है, उसके लिए सफलता के द्वार सदा खुल जाते हैं।

35 परिश्रम से जीवन की हर इच्छा को पूरा किया जा सकता है।

36 शरीर और आत्मा दोनो की इच्छाओं मे महान अन्तर है।

37 जो अपने आप से निराश हो गया, उसे मजिल तक कौन पहुचायेगा।

38 जीवन सघर्षमय है। सच्चा योद्धा वह है जो निराशाओ से जूझता हुआ भी साहस के साथ अडिग बना रहे।

39 शका एव भय से भरा मन कोई भी कार्य नही कर सकता। यह निश्चेष्ट हो जाता है।

40 मानसिक निश्चेष्टता हमें कायर बना देती है।

41 असफलता गिरने मे नही बल्कि हर बार गिर कर भी न उठने मे है।

42 धर्म हमारे जीवन के लिए आतरिक और बाह्य रोगो की अनुपम औषधि है।

43 निराशा मानव का सबसे बडा शत्रु और प्रकृति का अभिशाप है।

44 धर्म का आचरण नही करने वाले मनुष्य में और पशु मे विशेष अन्तर नही है।

45 हमारा सच्चा साथी तो हमारे हृदय का विश्वास है।

46 भय या सन्देह के निराशापूर्ण विचार जीवन मे जहर का काम करते हैं।

47 पशु नही बोल सकने के कारण दु खी रहता है और इन्सान अधिक बोलने की वजह से।

48 ससार के विशाल भडार में अनगिनत वरदान भरे पड़े हैं, जिन्हें मानव चाहे तो अपने अथक परिश्रम से प्राप्त कर सकता है।

49 सदाचार जीवन का शृगार है।

50 तपश्चर्या पाप विशुद्धि का मार्ग है।

51 आत्मा में परमात्मा का स्वरूप छिपा है।

1 आठ मूल

1 सभी गुणो का मूल विनय।
2 सभी रसो का मूल पानी।
3 सभी पापो का मूल लोभ।
4 सभी धर्मो का मूल दया।
5 सभी कलह का मूल हँसी।
6 सभी रोगों का मूल खाँसी।
7 सभी मरण का मूल शरीर।
8 सभी बधनों का मूल स्नेह।

2. आठ नही

1 क्रोध के समान विष नहीं।
2. क्षमा के समान अमृत नही।
3 लोभ के समान दु ख नही।
4 सतोष के समान सुख नही।
5 पाप के समान शत्रु नही।
6 धर्म के समान मित्र नही।
7 कुशील के समान भय नही।
8 शील के समान शरण नही।

3. शृंगार

1 शरीर का शृगार शील।
2. शील का शृगार तप।
3 तप का शृगार क्षमा।
4 क्षमा का शृगार ज्ञान।
5 ज्ञान का शृगार मौन।
6 मौन का शृगार शु ध्यान।
7 शुभ ध्यान का शृगार सवर।
8 सवर का शृगार निर्जरा।
9 निर्जरा का शृगार केवल ज्ञान।
10 केवल ज्ञान का शृगार अक्रिया।
11 अक्रिया का शृगार मोक्ष।
12 मोक्ष का शृगार अत्या बाध सुख।

4. बारह महापापी

1 आत्मघाती
2. विश्वासघाती
3 गुरुद्रोही
4 कृतघ्नी
5 झूठी सलाहदाता
6 झूठी साक्षीदाता
7 हिंसा मे धर्म बताने वाला
8 तालाब के पास पाल फोडने वाला
9 आग लगाने वाला
10 हरा-भरा जगल काटने वाला
11 बाल हत्या कर्ता
12 सती का शील भग कर्ता।

5. यति धर्म — आत्म विकास पूर्वक मुक्ति दिलाने वाला साधन।

1 क्षमा,
2 सतोष,
3 सरलता,
4 नम्रता,
5 लघुता,
6 लक्ष्य,
7 सयम,
8 तप,
9 त्याग,
10 ब्रह्मचर्य।

6 जैन धर्म की बारह शिक्षा

1 सदा जीवन की रक्षा करना।
2 मुख से सच्ची बाते कहना।
3 मॉग पूछकर वस्तु लेना।
4 सदाचार का पालन करना।
5 अपनी इच्छा सदा घटाना।
6 इधर-उधर नही जाना जाना।
7 सीधा सादा जीवन जीना।
8 कोई अनर्थ का काम न करना।
9 नित उठकर सामयिक करना।
10 जीवन मे मर्यादा रखना।
11. बनते पौषध आदि करना।
12 अपने हाथ से वहराना।

प्रश्न गुरु महाराज की सुख-साता किस प्रकार पूछना चाहिए?

उत्तर गुरु महाराज, साधु जी, महासतियॉ जी को तिखुत्तों के पाठ से वदन करने के बाद निम्न प्रकार से सुख-साता पूछना चाहिए। अहो! पूज्य गुरुदेव जी/महासतियॉ जी महाराज साहब! आपके ज्ञान दर्शन चारित्र तप तथा सयम यात्रा की तथा आपके शरीर की सुख साता पूछते हुए मगल कामना करते है। हमारे द्वारा हुई आपकी अविनय अशातना अभक्ति अपराध के लिए हम बारम्बार क्षमा याचना करते है। आप क्षमा करने की कृपा करावे।

प्रश्न ज्ञान सीखने के लिए आज्ञा किस प्रकार लेनी चाहिए?

उत्तर अहो! पुज्य गुरुदेवजी/महासतियॉ जी महाराज आपके पास से ज्ञान सीखने की आपकी आज्ञा है। आपकी कृपा से हमारा ज्ञान, ध्यान बढे, आपके प्रति, धर्म की दृढ़ता बढ़े, हमारी साधना बढे हमारी आत्मा का कल्याण हो और हम शीघ्र मोक्ष के अन्तिम सुख को प्राप्त करे।

प्रश्न हमारा वचन व्यवहार कैसा होना चाहिए?

उत्तर 1 बहुत कम बोलें, 2. आवश्यकता होने पर बोले, 3 मीठा बोले, 4 चतुराई पूर्वक बोले, 5 अभिमान रहित बोले, 6 मार्मिक वचन न बोले, 7 न्याय युक्त बोले, 8 हित मित प्रियकारी बोलें।

प्रश्न हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर 1 देवो दान, 2 लेवो यश, 3 करो परोपकार, 4 खावो कम और गम, 5 पीओ प्रेम रस, 6 पालो शील, 7 टालो कुसगति, 8 छोड़ो पाप, 9 धारो धर्म, 10 ध्यावो अरहत, 11 सेवो निर्ग्रथ गुरु, 12 रमो ध्यान में।

प्रश्न तीर्थंकर गौत्र का बध कैसे होता है?

उत्तर निम्न 20 बोलो की आराधना करने से कर्मो की कोटि खपे उत्कृष्ट रसायन आने से तीर्थंकर गोत्र बधता है।

1 अरहन्त भगवान, 2 सिद्ध भगवान की भक्ति गुणगान करने से।, ३ सूत्र में उपयोग, 4 गुरुदेव की भक्ति, 5 स्थविर की भक्ति, 6 ज्ञानी की सेवा, 7 तपस्वी की सेवा, 8 ज्ञान आराधना, 9 सम्यक्त्व मे दृढ रहने से, 10 ज्ञानी और ज्ञान का विनय, 11 उभयकाल शुद्ध भाव पूर्वक प्रतिक्रमण, 12 शुद्ध ब्रह्मचर्य पालन, 13 सदैव विरक्ति, 14 सयम तप की शुद्ध आराधना, 15 भक्ति पूर्वक सुपात्र दान, 16

आचार्य वृद्ध जनो की सेवा करने से, 17 सदैव समभाव रखने से, 18. सदैव नया ज्ञान सीखने से, 19 देव, गुरु, धर्म और ज्ञान की श्रद्धा भक्ति बढाने से, 20 जिनधर्म की प्रभावना करने से।

प्रश्न ससार में भटकते जीव को कौन-कौन से दस बोल मिलना दुर्लभ है ?

उत्तर . 1 मनुष्य गति, 2 आर्य क्षेत्र, 3 उत्तम कुल, 4 लम्बा आयुष्य, 5. स्वस्थ शरीर, 6 पाचों इन्द्रिय परिपूर्ण, 7 सत सतीजी का समागम, 8 जिनवाणी का श्रवण, 9 जिनवाणी पर श्रद्धा, 10 धर्म में पराक्रम।

प्रश्न गृहस्थ मे रहने वालो के लिए 4 विश्राम कौन-कौन से है ?

उत्तर जैसे हमाल बोझ को उठाकर चलता हुआ—

1 पहला विश्राम—बोझ को एक कधे से दूसरे कधे पर लेता है।

2 दूसरा विश्राम — रास्ते मे आए चबूतरे पर बोझ को रखकर दो घडी के लिए थकावट दूर करता है।

3 तीसरा विश्राम — रास्ते में धर्मशाला या मन्दिर मे बोझ रखकर रात्रि को विश्राम करता है।

4 चौथा विश्राम—बोझ को ठिकाने पहुँचाकर शाति प्राप्त करता है।

इस प्रकार घर गृहस्थी में काम करने वालो के लिए 4 विश्राम है।

1 नवकारसी आदि तप और 12 व्रत ग्रहण करना पहला विश्राम है।

2 सुबह-शाम को एक घडी की सामायिक करना दूसरा विश्राम है।

3 अष्टमी पक्खी आदि को प्रति पूर्ण पौषध करना तीसरा विश्राम है।

4 अन्तिम समय अठारह पाप त्याग कर सथारा करना चौथा विश्राम है।

भोजन

मनुष्य का भोजन क्या हो ? उसे क्या खाना चाहिए और क्या नही ?

यह सवाल आदिकाल से अनन्त काल तक चलता रहेगा। दिन मे हर एक व्यक्ति, हर एक गृहिणी सोचती है कि उसे आज क्या खाना है ? उसे आज क्या भोजन बनाना है ? वे चुनाव करते है, अपनी मनस्थिति धनस्थिति, स्वास्थ्य, मौसम और उपलब्धि के आधार पर। भोजन के चुनाव में मनस्थिति

निर्भर करती है—जाति, धर्म, शिक्षा, समुदाय, परिवार, परवरिश और सस्कार पर।

सस्कारों से भारत भूमि मे मानव-सभ्यता के अनुरूप सात्विक भोजन को सर्वदा, सर्वदृष्टि से श्रेष्ठ और उपयुक्त माना है। सात्विक भोजन शुद्ध शाकाहारी होता है। उससे शरीर पर तो अनुकूल असर पडता ही है, मन विचार और आचरण पर भी वाछित सही असर पड़ता है।

राजसिक और तामसिक भोजन, शरीर और विचार दोनो ही दृष्टि से असगत है। जो लोग कभी कभार इस तरह के भोजन के आदी हो जाते हैं, उन्हें भी अपने कल्याण के लिए अन्तत ऐसा भोजन छोड़ना चाहिए अन्यथा उनकी शारीरिक दुर्गति होती है। शाकाहारी सात्विक भोजन मे भी प्याज, लहसुन, अधिक स्वाद या मिर्च मसाले वाली चीजे, राजसिक और तामसिक भोजन के अग हैं। अत जब सात्विक भोजन पदार्थों मे से भी सात्विकता के लिए बहुत से पदार्थ मना हो तो मास, मछली, अण्डा इत्यादि प्राणी जन्य पदार्थ और मदिरा कैसे सभ्य, सस्कृत व्यक्ति का भोजन बन सकता है। अत हमे अपने मन, विचार, शरीर, स्वास्थ्य, धर्म, सभ्यता और सस्कृति, जाति और परिवार की रक्षा के लिए हमे स्वय, हमारे स्वजन, परिजन और मित्र जन को शाकाहारी और सात्विक भोजन ही करना चाहिए। मास, मछली, मदिरा, अण्डे से बनी वस्तुओं का उपयोग जान-अनजान मे नही करना चाहिए। आधुनिकता, फैशन, प्रोग्रेसिव इत्यादि भ्रातिवश भी इन वस्तुओ के उपयोग में नही फसना चाहिए। सभ्यता, विकास और ऊँचाई, इन पदार्थो के उपयोग में नही, इन्हें छोडने मे है। शर्म आनी ही चाहिए तो मासाहारी और मदिरा पान करने वालो को, न कि शाकाहारी या सात्विक व्यक्ति को। ऐसे लोगो की मडली में घिर जाने पर होस्टल, रेस्टोरेन्ट, मीटिंग, विदेश भ्रमण, शादी-विवाह आदि प्रसगो पर आप और अपने बच्चो को भटक जाने से रोकिये और याद रखिये स्वय को रोकने वाला ही सम्मान पाता है, बहाव मे बहने वाला नही।

विज्ञान ने, डाक्टरो ने अब यह तथ्य भी स्वीकृत एव प्रमाणित किया हे कि मनुष्य की शरीर रचना शाकाहारी भोजन के ही अनुरूप है, न कि मासाहारी

भोजन के। शाकाहारी भोजन-तत्त्व अण्डे और मास से ज्यादा ताकतवर और स्वास्थ्यवर्धक होते हैं। मासाहारी लोग ज्यादा अस्वस्थ और अधिक किस्म की बीमारियो से ग्रस्त होते हैं। अत इस बहम मे कि मास, मछली, अण्डा स्वास्थ्यवर्धक और अधिक बलप्रद है, इनका सेवन नही करना चाहिए।

यदि आप शाकाहारी हैं, तो शाकाहारी बने रहे। आप अपने बच्चों एव मित्रो को शाकाहारी बनाये रखे। यदि आप मासाहारी हैं तो आप शाकाहारी बन कर देखें। आप कुछ ही समय मे शाति और तन्दुरूस्ती महसूस करेंगे, और फिर स्वय मासाहार छोड देगे, औरो को छुडाएगे। सिर्फ एक बार एक महीने, एक वर्ष बदलकर देखिये। यदि आप सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक कार्यकर्त्ता हैं तो शाकाहार के प्रचार-प्रसार और मासाहारी प्रवृत्तियों को रोकथाम के लिए लोगो मे काम करें।

याद रखिये, अगर आपकी पीढ़ी ने इस ओर कुछ नही किया तो शाकाहारी सस्कृति की, आपकी पीढी, आखिरी पीढ़ी होगी और इतिहास, धर्म, सभ्यता सब आपको धर्म एव सस्कृति की रक्षा न करवाने के लिए दोषी ठहरायेगे। जैन एव वैष्णव धर्म भी अपनी अमूल्य, अमिट पहचान और विश्व के सभी धर्म श्रेष्ठतम तत्त्वो को छोड चुकेगे।

अब और देर न करे, शाकाहार का प्रचार करे, मासाहार की आँधी रोके, मदिरा की बाढ रोके, तभी आपके धर्म, आपके सस्कार, आपके आचार विचार, आपकी सभ्यता आदि की रक्षा और अभिवृद्धि होगी।

मांसाहार छोड़ें, शाकाहारी बनें

पाकिस्तानी प्रधानमंत्री की अपील

AVOID FLESH FOODS. BE VEGETARIAN

— An appeal by Benazir Bhutto — Prime Minister of Pakistan

क्या भारत की लडखड़ाती मवेशी आबादी, को देखते भारत के प्रधानमत्री भी अपने देशवासियो से इस तरह की कोई अपील नही करेगे ?

क्या इस चेतावनी के बावजूद कि सन 2011 तक देश में कोई भेड-बकरी नही बचेगी, कत्लखानों पर ताला डालने की शुरुआत नही होगी ?

पाकिस्तान की प्रधानमत्री श्रीमती बेनजारी बेनजीर भुट्टो ने अपने एक लेख द्वारा सारे विश्व के लोगो से एक मार्मिक तथा सामाजिक अपील करते हुए कहा है कि उम्र बढाने तथा उसे निरोगी रखने के लिए मासाहार का त्याग, या उसमे कमी करना अत्यन्त आवश्यक है।

हम (मासाहारी) भेड़िए की तरह हो गये हैं, अब भेडिएपन के दिन लदने को है। यदि हमने मासाहार मे कमी नही की तो निश्चित रूप से अपने एक बहुत बडे कीमती ससाधन पशुधन और अपने स्वास्थ्य से हम हाथ धो बैठेंगे।

जब बिट्रिश प्रधानमत्री जॉन मेजर ने 'पागलपन से भरा, खराब तथा खतरनाक' जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया था तो उनका आशय आर्थिक समुदाय के देशों द्वारा ब्रिटेन के पशुओं के मास तथा पशुओ के आयात पर प्रतिबन्ध लगाये जाने के विरुद्ध अपना रोष प्रकट करना था। वस्तुत यूरोपीय बाजार मे ब्रिटेन पर इस प्रकार के प्रतिबन्ध से उसकी अर्थव्यवस्था पर एक आघात तो था ही।

ब्रिटेन के पशुओ के मास के आयात पर विभिन्न देशो द्वारा लगाये गये प्रतिबन्ध के कुछ समय बाद ही हमने देखा कि यूरोपीय यूरोपीय समुदाय के देशो के दो प्रमुख नेता लदन मे मास से बने व्यजन खा रहे थे। इसका उद्देश्य शायद यही था कि लोगो मे ब्रिटेन के मास-व्यापार के प्रति विश्वास बढ़े।

ब्रिटेन मे गउओ मे पागलपन की बीमारी की चर्चा होने के उपरान्त इसे जनस्वास्थ्य के लिए एक गभीर खतरे के रूप मे माना जा रहा था, हालाकि

अभी तक यह बात शायद सिद्ध नही हो पायी है। मांस मानव-स्वास्थ्य के लिए कितना जरूरी है इस बारे मे अलग-अलग विचार हैं। वैसे पाकिस्तान मे आमतौर पर एक कहावत प्रचलित है कि जब आदमी जवान होता है तब वह मास को खाता है। जब कोई व्यक्ति 40 की उम्र पार कर जाता है तो फिर मासाहारी भोजन उस आदमी को ही खाने लगता है।

मुझे याद है कि मैं छोटी थी तो उस समय पाकिस्तान में जीवन-शैली काफी भिन्न थी। कुछ चीजो मे व्यापक परिवर्तन एक अच्छी दिशा में आया है, लेकिन पशुओ के मास पर हमारी भारी निर्भरता अभी तक घटी नही है।

जब मैं बड़ी हो रही थी तब उस समय मास का उपयोग कभी-कभी विशेष अवसरों पर किया जाता था, मुस्लिम त्यौहार ईद तथा अन्य पर्व इस प्रकार के मौके होते थे। हमारे अपने घर मे मासाहारी भोजन सप्ताह मे एक या दो बार ही बनता था, अन्यथा अन्य दिनों मे हम चावल मसूर की दाल तथा सब्जियों का उपयोग ही करते थे।

लेकिन अब अधिकाश मध्यवर्गीय परिवारो मे मासाहार एक प्रकार से सामाजिक प्रतिष्ठा का मापदण्ड बन गया है। इस प्रकार के भोजन को आमतौर पर समाज में आर्थिक सफलता का मापदण्ड ही माना जाता है।

मै अभी भी अपने बचपन एव युवावस्था के दिनों मे भोजन की आदतों की अभ्यस्त हूँ। मैं प्रधानमत्री के रूप मे सरकारी भोजों मे इस बात पर बल देती हूँ कि मासाहारी भोजन की अपेक्षा मसूर की दाल तथा अन्य शाकाहारी भोजन ही परोसे जाएँ। मै स्पष्ट रूप से कहूँ तो शाकाहारी नही हूँ, लेकिन इस बात का अनुभव करती हूँ कि मानव स्वास्थ्य के लिए मास की बजाय दाले या शाकाहारी भोजन कही अधिक स्वास्थ्यवर्द्धक तथा जल्दी पचने वाला होता है। बौद्धिक रूप से भी देखा जाए तो मासाहारी भोजन करना न तो स्वास्थ्य की दृष्टि से और न ही विवेक की दृष्टि से उचित है।

इस सम्बन्ध मे मेडिकल विज्ञान के प्रमाण भी स्पष्ट सकेत देते है उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, कोलेस्ट्रोल की बढती मात्रा आदि व्याधियॉ अधिक मासाहार के कारण ही होती हैं। आखिर जब पशु मासाहारी चारा खा कर बीमार पड़ जाते है, जैसे कि गउओ के पागलपन के मामले में हुआ बताया जाता है, तो निश्चित रूप से उसका असर लोगो पर पडना स्वाभाविक है।

पाकिस्तान मे ही अकेले कराची मे 275 लाख पशु-पक्षियो का रोजाना वध किया जाता है। देश में मास की कीमत आसमान छू रही है। आप यकीन करे या नही, लेकिन यह सच है कि आस्ट्रेलिया से आयातित मास पाकिस्तान के मास की अपेक्षा सस्ता पडता है।

पाकिस्तान ही अकेला मासभक्षक नही है। हाल मे जब मैं मध्य एशिया के देशो मे गयी थी, वहॉ हमारे एक मेजबान ने कहा था 'हम भेड़िये की तरह हो गये हैं।'

शायद अब हमारे भेडियापन के दिन लदने को है। इग्लैण्ड में गउओ में व्याप्त पागलपन की बीमारी हमारी ऑख खोल देने के लिए काफी है। अब सोचना चाहिए कि स्वास्थ्य ही सम्पत्ति है। अगर हमने मासहार मे कमी नहीं की तो हम निश्चित रूप से अपने एक बहुत कीमती ससाधन पशुधन और अपने स्वास्थ्य से हाथ धो बैठेंगे।

अब मैने सकल्प किया है कि अपने बच्चो के लिए मैं उसी प्रकार का शाकाहारी भोजन उपलब्ध कराऊँगी, जिस प्रकार के शाकाहारी भोजन पर मैं आमतौर पर पली और बड़ी हुई हूँ। मेरे बच्चे अब भुने हुए आलू, सब्जियॉ चावल और मसूर की दाल, खीर आदि बड़े चाव से खाते हैं।

दो सप्ताह पूर्व मैने मेडिकल चैकअप करवाया तथा मुझे जो रिपोर्ट मिली उससे मैं अत्यन्त खुश हूँ। अपने अत्यन्त तनावपूर्ण तथा व्यस्त कार्यक्रमो के बावजूद मुझे स्वास्थ्य ठीक होने का प्रमाण पत्र दिया गया। इस बात का विश्वास है कि यह सब मेरे द्वारा अपने भोजन के कारण ही सभव हो सका है। जब मेरे बच्चे मेरी उम्र तक पहुँचेगे, तव मैं चाहती हूँ कि वे अपने भोजन की इसी प्रकार की आदतें बनाये रखें तथा उनकी उम्र बहुत लम्बी हो।

अगर आप ही अपने जीवन के वर्ष बढ़ाना चाहते हैं तो इस बात को ध्यान मे रखे कि आपके भोजन की प्लेट या थाली मे खाने की क्या चीजे है? मासाहार को घटाना या उसे छोड देना कोई पागलपन का विचार नही हे।

(डेली टेलिग्राफ कलकत्ता से उद्धृत—वेनजीर भुट्टो)

मवेशी : सर्वनाश की गम्भीर चेतावनी

नई दिल्ली, 8 अप्रैल 1996। देश मे कत्ल किये जा रहे कुल पशुओ का लगभग 70 प्रतिशत सिर्फ मध्यपूर्व के मुल्क डकार रहे है।

केन्द्रीय पर्यावरण मन्त्रालय की एक ताजा रिपोर्ट मे दावा किया गया है कि पशुओ के भारी सख्या मे हो रहे अवैध कत्ल ने उनके अस्तित्व के लिए गभीर खतरा उत्पन्न कर दिया है तथा पशुओ और मनुष्यो की सख्या के अनुपात को एक भयावह स्थित का सामना करना पड रहा है। उपलब्ध ऑकड़ों के अनुसार देश मे 32,000 अवैध कत्लखानो के अलावा 3600 लायसेंस-प्राप्त कत्लखाने हैं।

पर्यावरण मन्त्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' (नई दिल्ली) को बताया कि वर्ष 1991-92 मे देश मे 165 करोड़ रुपयो के मूल्य का मास विदेशो को भेजा गया। वर्ष 1993-94 में यह आकड़ा 285 करोड़ रुपयो तक पहुँच गया और लगता है सदी के अन्त मे यह 1000 करोड़ की सीमा लॉघ जाएगा। प्रवक्ता ने सकेत दिया है कि इस तरह जो भी धन अर्जित किया जाएगा, वह पशुओ को लड़खड़ाती आबादी की कीमत पर ही होगा।

रिपोर्ट मे कहा गया है कि वर्ष 1951 मे 1000 व्यक्तियो पर 430 पशु थे, जो वर्ष 1981 में घट कर 278 रह गये और यदि निर्यात की यही स्थिति रही तो वर्ष 2011 तक पहुँचते-पहुँचते यह स्तर प्रति 100 पर सिर्फ 20 बच रहेगा।

इसी तरह बकरियो की जो सख्या वर्ष 1951 मे प्रति व्यक्ति 1000 व्यक्ति 141 थी वह वर्ष 1981 मे प्रति 1000 व्यक्ति 136 और 1991 मे 106 रह गयी। भेडो की सख्या जो वर्ष 1951 में प्रति 1000 व्यक्ति 108 थी, 1981 में 69 और 1991 मे मात्र 50 रह गयी। उक्त अधिकारी का कथन है कि यदि यही रफ्तार रही तो वर्ष 2011 तक भारत मे बकरी या भेड़ का कोई नामोनिशा नही रहेगा।

अखिल भारतीय यान्त्रिक कत्लखाना हटाओ समिति के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता के अनुसार यद्यपि सरकार यान्त्रिक कत्लखाने खोल कर मास तथा उसके उत्पादो के निर्यात को बढावा दे रही है, तथापि उसे जानना चाहिये कि हमारे देश की पशु सख्या पश्चिमी देशो की पशु-सख्या की तुलना मे काफी कम है।

उसने बताया कि भारतीय सविधान के अनुच्छेद 48 और 51(ए) मे अनुबन्धित है कि राज्य कृषि और पशु-सवर्द्धन को आधुनिक/वैज्ञानिक पद्धति से व्यवस्थित/सवर्द्धित करेगे और विशेषत ऐसे कदम उठायेगे, जिनसे उनकी नस्ल उन्नत हो तथा गौओं, बछड़ो एव अन्य भारवाही पशुओं के कत्ल को रोका जा सके।

सरकार की वर्तमान नीति की आलोचना करते हुए पर्यावरण मन्त्रालय के वरिष्ठ अधिकारी ने कहाकि सरकार इस गलत धारणा के अन्तर्गत कि देश की मवेशी सख्या बढ रही है, उसके कत्ल की योजना तैयार कर रही थी।

अधिकारी ने आगे कहा कि मद्रास-स्थित सेट्रल लेदर रिसर्च इस्टीट्यूट ने अपनी ताजा समीक्षा मे कहा है कि आन्तरिक तथा निर्यात सबन्धी मागों को पूरा करने के लिए पशुओ का जो अन्धाधुन्ध कत्ल किया जा रहा है, उससे पशुओ की वृद्धि दर कम हुई है।

(हिन्दुस्तान टाइम्स अग्रेजी नई दिल्ली 10 अप्रेल, 1996)

हमारा आहार

(विचारणीय)

जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन।

मन उचित पुद्गलों के सयोग से गतिशील होता है। इसलिए आहार के रूप मे शुद्ध पुद्गल का सेवन ही श्रेयस्कर है। आहार के रूप में गृहीत अशुद्ध महा विकृत पदार्थ साधना में सहायक शरीर को रोगाक्रात करता है। अत वह त्याज्य है।

आज आहार विवेक लगभग समाप्त सा हो गया है। शाकाहार या निरामिष भोजन के नाम पर शका युक्त (विना खोज किया हुआ) अभक्ष्य निर्मित आहार ग्रहण किया जा रहा है। जो साधना मे गतिशील, मन को विकृत करता है।

व्रेड विस्कूट, खारी, चाकलेट, केक, टोस्ट, क्रीमरोल, आइसक्रीम, टूथपेस्ट, पाउडर, पनीर, वेजीटेवल, सूप, चायनिजडिस, मैवोनीज सास, कन्सेंटेड, मीट, गैविन, पाव विस्कूट आदि मे अभक्ष्य पदार्थो का उपयोग किया जाता है। जिनमे

प्राणियो के रक्त व मास तथा अडे का प्रयोग होता है। चर्बी, हड्डी एव मछली का पाउडर भी मिलाया जाता है।

शाकाहारी व्यक्ति अनजाने ही इन त्याज्य वस्तुओ का सेवन करने लग जाता है। जो खाद्य वस्तुएँ ही नही है। अधिकाश औषधियो के निर्माण मे भी वे वस्तुएँ काम मे ली जाती है। जानकारी हेतु निम्न सूची दी जा रही है।

कोचीनीयल—यह एक तरह का लाल रग है जो बेरी बूटी नामक एक पौधे पर पाये जाने वाले कीडो के शरीर से निकाला जाता है। इसका प्रयोग खाद्य निर्माता, सौन्दर्य प्रसाधन एव दवा निर्माता करते है।

रेनेट—गाय के बछडे के पेट से प्राप्त यह रस दूध को फाड़कर पनीर बनाने के काम मे आती है।

ओवल्टीन केक—इनमें अडों का प्रयोग होता है।

काडलीवर ऑयल—यह मछली के तेल से बनता है।

इंसुलीन—भेड-बकरी के पेट मे अग्नेय ग्रथियों से प्राप्त यह शुगर (मधुमेह) की बीमारी मे प्रयोग की जाती है।

जिलेटीन—इसका प्रयोग आइसक्रीम बनाने वाली कपनियाँ करती है।

स्टेबीलाइनर के रूप मे यह चमडे के टुकडे, हड्डी कार्टिलोज आदि पशुओ के अगो से प्राप्त वस्तुओं को उबाल कर बनाई जाती है। जो जमी हुई या पाउडर के रूप मे बिकती है। यह जेली कैप्सूल, आइसक्रीम, पीपरमेंट, चुइगम, आदि बनाने मे उपयोग किया जाता है।

सौन्दर्य प्रसाधन — (कोस्मेटिक) लिपिस्टिक, आइब्रो, शैम्पू आदि मे जानवरो की हड्डी का पाउडर और चर्बी मिलाई जाती है।

नहाने का साबुन — जयादातर साबुनो मे जानवरो की चर्बी जो टेलो से बनती है मिलाई जाती है।

इन चीजों में जीव हिंसा नहीं होती।

1 फैशन व सौन्दर्य प्रसाधनो के लिए जीव हत्या क्यो ? मानव केवल अपने स्वाद व स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से ही जीव हत्या नही करता अपितु

जाने अनजाने कुछ ऐसी फैशन की वस्तुओ व सौन्दर्य प्रसाधनो आदि का उपयोग भी कर लेता है जिनके बनाने व जाच आदि प्रयोगो मे किसी जीव की हत्या होती है अथवा उसे कष्ट पहुँचाया जाता है।

2 जैसे फर की टोपी आदि पहनते हुए वह यह नही जानता कि यह कराकुल मेमने को, भेड के गर्भ से जबरदस्ती निकाल कर उसकी खाल से बनती है। उसी भाति वह यह भी नही जानता कि कही शैम्पू, आफ्टर शैव लोशन आदि सौन्दर्य प्रसाधनो की जाच के लिए खरगोशो पर क्या क्या निर्दय प्रयोग होते है। 'ब्युटी विदाउट क्रूयेल्टी' पूना सस्थान ने काफी खोज के बाद ऐसे प्रसाधनो की सूची तैयार की है जिनमे केवल वनस्पति पदार्थ ही इस्तेमाल किये जाते है और जिन के बनाने व जाच आदि प्रयोगो मे किसी पशु को कष्ट नही दिया जाता। इस सूची के अश पाठकों की जानकारी के लिए यहॉं दिये जा रहे है। जीव हत्या को जो व्यक्ति प्रोत्साहन देना नही चाहते वह इस सूची से लाभ उठा सकते है। पहले पदार्थ का नाम है, तथा कोष्ठक मे निर्माता का नाम दिये गये हैं, पदार्थ से पहले जो नम्बर दिया गया है उससे निर्माता का नाम इस सूची के अन्त मे देखा जा सकता है। दूसरो के प्राणो की रक्षा के लिए उतना ही सावधान होना चाहिये, जितना कि हम अपने प्राणों की रक्षा चाहते हैं।

1 साबुन और शैम्पू—सिन्थोल, न्यू सिन्थोल, क्राऊन ग्लोरी, मार्बल, विजिल (गोदरेज), हमाम (टाटा), वीको (पार्कडेविस), मैसूर सैन्डल, जेस्मिन, सिंसार, नीम (बगलोर), चन्द्रिका, कुटीर, शैम्पू—लेमन, लक्जरी, शिकाकाई (ल्योर) लेमन शैम्पू, आनिविका (सन), अयूर।

(2) टूथपेस्ट पावडर—प्रोमिस, जैमिनी, निहारिका, बबूल प्राईड, राजराजश्वरी, वीना, शिवानन्द, फोरहन्स, जैनसन, विको वज्रदन्ती, लाल काला, सफेद दन्त मजन (वैद्यनाथ) लाल मजन (अमर) दन्त मजन (झन्डु) पवन दन्त (झन्डु) दुध पेस्ट (किस्टल मोनी)।

3 पावड़र—टेलकम पावड़र —लवेन्डर, रोज, खस, नीवोसा, लक्मे, टिआरा, सम्राट, पावडर, निखार हेमा। केश पावडर। वृन्दा शालीमार भागीरथी, भारत, लक्मे, सीको (मेडिकेटेड पावडर) नाइसिल टामतेल पावड़र। सिन्थोल फेसिका।

4. हेयर प्रिपरेशन—ऑवला तेल वाहनी, तेल ब्राह्मी ऑवला तेल (वेद्यनाथ झण्डू) महाभृगराज केश तेल, हिमानी कल्याण तेल, केवरल हेयर ऑयल हर्बल

हेयर, टानिक (क्राउन) हेयर डाइज (फरिश्ता, पिकाक, सीजर्स, गोदरेज हेयर टानिक, पावडर) मुकेश्वरी हेयर क्रीम (गोदरेज)

5 क्रीम और लोशन—ब्यूटी क्रीम (क्राउन) हर्बल समाज क्रीम (क्राऊन) सेन्डवुड ऑयल (मैसूर) स्नो वेसलीन हिमा (क्रीम) टिआरा लक्ष्मी विशाल हर्बल पिम्पल क्रीम (क्राऊन) स्कीम (निबियॉ) बैनोलिन कोल्ड क्रीम (लक्मे) टरमेरिक बैनिशैंग क्रीम (विको) क्लीर्शिग मिल्क (लक्मे)

6. **आई मेकअप** — आई वैसिल आई लाइनर मस्कारा (लक्मे) काजल सोनिया (श्रीमती) काजल (सजोग)

7. **अन्य शेविंग राउन्ड**—(गोदरेज) शैविंग स्टिक (गोदरेज) आफ्टर शेव लोशन (कन्सर्ट लक्मे सन) शेविंग क्रीम (गोदरेज) लक्मे। मिनार्क ! लिपिस्टिक (लक्मे) स्टिकर बिन्दी (शिल्पा) । अण्डा व चादी के वर्क भी शाकाहारी नही है।

8 नेल पालिश—नेल ऐनामिल (लक्में) नेल नेवामेल रिमूवर नेल लस्टर (टिप्स एन्डटोप्स)

9. परम्यूम—कीलोन—लक्मे के सब परफ्यूम।
10 बोडीसोप (इंग्लैण्ड) — इस कम्पनी के सारे प्रोडक्ट।
11. ओरिफ्लेम (इंगलैण्ड) — इस कम्पनी के सारे प्रोडक्ट।
12. वायोटिया (हर्बल हन्डिया) —इस कम्पनी के सारे प्रोडक्ट।

गर्भपात रोककर खुद के बच्चे को मरने से बचाये

गर्भस्थ बच्चे की हत्या का आँखों देखा विवरण

वर्ष 1984 मे 'नेशनल राईट्स टू लाईफ कन्वैन्शन' कनास सिटी, मिस्सौरी मे हुआ था। इसी (कन्वैन्शन) सम्मेलन की एक प्रतिनिधि Mrs Sandy Ressal ने Dr Bernard Nathanson के द्वारा एक Suction abortion गर्भपात की वनाई गइ अल्ट्रासाउन्ड मूवी का जो विवरण दिया था वह उन्ही के शब्दो में इस प्रकार हैं।

“गर्भ की वह मासूम वच्ची अभी दस सप्ताह की थी वह काफी चुस्त थी। हम उसे अपनी माँ की कोख मे खेलते, करवट वदलते व अगूठा चूसते हुए देख रहे थे। उसके दिल की धड़कनो को भी हम देख पा रहे थे ओर

वह उस समय 120 की साधारण गति से धडक रही थी। सब कुछ बिल्कुल सामान्य था किन्तु जैसे ही पहले औजार (सक्शन पम्प) ने गर्भाशय की दीवार को छुआ, वह मासुम बच्ची डर से एक दम घूमकर सिकुड गई और उसके दिल की धडकन काफी बढ गई। हालाकि अभी तक किसी औजार ने बच्ची को छुआ तक नही था, लेकिन उसे अनुभव हो गया था कि कोई चीज उसके आरामगाह, उसके सुरक्षित क्षेत्र पर हमला करने का प्रयत्न कर रही है।

हम दहशत से भरे यह देख रहे थे कि किस तरह वह औजार उस नन्ही-मुन्नी मासूम गुड़िया सी बच्ची के टुकडे टुकड़े कर रहा था। पहले कमर (Spine) फिर पैर इत्यादि के टुकड़े ऐसे काटे जा रहे थे जैसे वह जीवित प्राणी न हो कर कोई गाजर मूली हो और वह बच्ची दर्द व पीड़ा से छटपटाती हुई सिकुड-सिकुड़ कर धूम घूम कर तडपती हुई इस हत्यारे औजार से बचने का प्रयत्न कर ही थी। वह इस बुरी तरह से डर गई थी कि एक समय उसके दिल की धड़कन 200 तक पहुॅच गई। मैंने स्वय अपनी ऑखो से उसको अपना सिर पीछे झटकते व मुॅह खोल कर चीखने का प्रयत्न करते हुए, (जिसे डॉ॰ नैथान्सन ने उचित ही साइलैन्ट स्क्रीम (Silent Scream) मूक चीख या मूक पुकार कहा हैं,) स्वय देखा। अन्त मे हमने वह नृशस व वीभत्स दृश्य भी देखा जब सडसी (Forceps) उसकी खोपडी को तोडने के लिए तलाश कर रहा था, और दबा कर उस कठोर खोपडी को तोड़ रहा था, क्योकि सर का वह भाग बगैर तोड़े सक्शन ट्यूब (Suction Tube) के माध्यम से बाहर नही निकाला जा सकता था।

हत्या के इस वीभत्स खेल को सम्पन्न करने मे करीब 15 मिनट का समय लगा और इसके दर्दनाक दृश्य का अनुमान इससे अधिक और कैसे लगाया जा सकता है कि जिस डाक्टर ने यह (एबोर्शन) गर्भपात किया था और जिसने मात्र कोतूहलवश इसकी फिल्म बनवा ली थी उसने जब स्वय इस फिल्म को देखा तो वह अपना (Clinic) छोड़कर चला गया और वापस नही आया।

गर्भस्थ शिशु की हत्या व उसकी वेदना को दर्शाने वाली इस फिल्म (Silent Scream) साइलेन्ट स्क्रीम को जब भूतपूर्व अमरीकी प्रेसिडेन्ट श्री रोनाल्ड रीगन ने देखा तो वह इससे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने प्रत्येक अमरीकी ससद सदस्य को इस फिल्म को देखने का अनुरोध किया। श्री रीगन एबॉर्शनकानून को बदलने के लिए इच्छुक थे।

मदर टेरेसा ने कहा कि गर्भपात गर्भाशय मे बालक की हत्या ही है। उन्होने विश्व की सरकारो से गर्भपात को कानूनन रद्द कर दिये जाने का अनुरोध भी किया था।

Stonaway New Delhi 12 2 94 मे छपे समाचार के अनुसार मदन टेरेसा ने अमरीका मे बढती हुई हिंसा का सम्बन्ध भ्रूण हत्या से जोड़ा है। उन्होने अमरीकी राष्ट्रपति क्लिंटन उपराष्ट्रपति गोरे, उनकी पत्नियो व अन्य तीन हजार श्रोताओ के समक्ष अपने भाषण मे कहा "If we accept that a mother can kill even her own child, how can we tell other people not to kill each other? Any country that we accepts abortion is not teaching its people to love, but to use any violence to get what they want" यदि हम यह स्वीकार कर ले कि एक माँ अपने बच्चे की हत्या कर सकती है तो हम दूसरो से कैसे कह सकते है कि वे एक दूसरे की हत्या न करें। जो भी देश गर्भपात को मान्यता देता है वह अपनी प्रजा को प्रेम की शिक्षा न देकर अपनी इच्छा पूर्ति के लिए हिंसा अपनाने की शिक्षा ही दे रहा है।

हिन्दूस्तान टाइम्स ता. 2 9 94 मे छपे समाचार के अनुसार मदन टेरेसा ने काहिरा मे होने वाली (World Population Conference) की पूर्व सध्या पर कहा "The greatest destroyer of peace today in the world is abortion The only one who has the right to take life is the one who has created it, Nobady else has the right not the mother, not the father, not the doctor, no conference, no agencies, no Government" गर्भपात आज विश्व शाति को नष्ट करने का सबसे बडा कारण हैं। जिसने जीवन दिया है, केवल एक उसी प्रभू को जीवन लेने का अधिक है, उसके अतिरिक्त किसी को भी, चाहे वह माँ हो, बाप हो, डाक्टर हो, कोई सस्था या सम्मेलन हो, चाहे कोई सरकार हो, गर्भपात द्वारा जीवन लेने का किसी को कोई अधिकार नही है।

साला एक गुटखा आदमी की अर्थी उठवा देता है।

गाव-गाव गली गली, फैल गया इसका कहर,
ससार की सर्वाधिक बिक्री, वाला यह स्वादिष्ट जहर।
धूम मचा दे रग जमा दे, जीते जी अर्थी उठवा दे,
जिन्दों की अर्थी उठवाये, फिर भी बेवकूफ! गुटखा खाये।
हुई नपुसक युवा पीढ़ी, मुख कैंसर ने किया अट्टहास,

दातो का भी हुआ कबाड़ा,' सेहत का हो गया सत्यानाश।
अक्ल का अधा खाने वाला, जहर खरीद कर खाता जाये,
गाठ का पूरा बनाने वाला, जहर बेचकर माल कमाये।
रग-बिरगे पाउचो मे, जहरीला है पान-मसाला,
कैंसर की प्रयोगशाला, बन गया है खाने वाला।
तबाह-यमराज, कफन-दफन, कालपसद इसके नाम है।
जिसमें जितना जहर है, उसके उतने ही कम दाम है।
हसकर कहता गुटखा सबसे, कितना मैं सर्वव्यापी हूँ।
हे मूर्ख। मुझे खाने वालो!, मै यमराज की कार्बन कापी हूँ।
हे सेहत के साक्षात सर्वनाश, हे कानपुर के बदनुमा दाग,
हे मुख कैंसर के आदि स्रोत, तूने बना दिया है देश को पीकदान।

निवेदन

महगा नही तुम सस्ता खाओ, दस खाते हो बीस खाओ।
शार्टकट रास्ता अपनाओ, अपनी अर्थी खुद उठवाओ।
हमारा नवीन पान मसाला / गुटखा 'मृत्युदण्ड'
बाजार मे कचरा और सल्फास की भारी कमी से अभी उपलब्ध नही है।
डीलरशिप व एजेंसी के लिए सम्पर्क करे, या मिले या लिखे।
मै. मृत्युदण्ड एजेंसी
प्रोपराईटर—कालभैरव, यमलोक हाऊस, पोस्ट शमशान घाट, जिला—परलोक।

सिगरेट से कैंसर

तम्बाकू मे 24 घातक विष

(भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पत्रिका 11-2-65)

(1) निकोटिन विष—से कैंसर पैदा होता है।

(2) कार्वन मोनोक्साइड विष—से दिल की वीमारी सास रोग, दमा और ऑखो की रोशनी धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है।

(3) मार्श गैस विष—से शक्ति नष्ट होकर नपुसकता प्राप्त होती है।

(4) अमोनिया विष—से पाचन शक्ति और जिगर बिगड़ जाते है।

(5) कालोडिन विष—से सिर चकराने लगता है, नसें कमजोर पड़ जाती हैं।

(6) पायरीडिन विष—से आतो मे खुश्की और पेट मे कब्ज रहने लगता है।

(7) कार्बोलिक एसिड विष—से अनिद्रा, स्मरण शक्ति का विनाश और चिड़-चिड़ेपन का स्वभाव रहता है।

(8) परफेरोल विष—से दात पीले, मैले और कमजोर बनते हैं।

(9) एजालिन विष और सायनोजन विष—से खून खराब हो जाता है।

(10) फरफल विष और प्रसिक एसिड विष—से थकान, जड़ता, और उदासी पैदा होती है।

इसी प्रकार के तम्बाकू मे और भी बहुत से विष पाए गए है जिनके कारण टी बी., लकवा, खासी, अदरुनी सूजन और खून का पानी तक बन जाता है।

एक ही सिगरेट से मौत

यदि एक ही सिगरेट का धुआ बाहर न निकाल दिया जाय तो मौत तक हो सकती है।

एक सिगरेट से 14 मिनिट आयु कम होती है।

डॉ॰ रेमाण्ड पर्ल-जान हापकिन्स, विश्वविद्यालय(आरोग्य फरवरी, 1970)

अमरीका मे 2,10,00,000 (दो करोड दस लाख) व्यक्तियो ने धूम्रपान को कैंसर की जड समझ कर छोड़ दिया। इनमे 1,00,000 (एक लाख) तो डाक्टर ही है। अत धूम्रपान नही करना चाहिए।

सारांश—हिन्दुस्तान समाचार पत्र 22-10-68

जी एस मैडिकल कॉलेज, बम्बई के डाक्टर मगलदास जे शाह लिखते हैं—

शराब एक भयंकर विष

शराब से टी. बी.

शराब से बुखार, टी वी., पीलिया, सासरोग, लकवा आदि भयानक रोग उत्पन्न होते हैं।

शराब से हार्ट फेल

शराब से दिल कमजोर होकर-हार्ट फेल तक हो जाता है। इसके सेवन से दिमाग व गुरदे तबाह हो जाते है।

शराब से खून तक की उल्टी

शराब के सेवन से तिल्ली बढ जाती है। पेट सूज जाता है। पेट मे फोड़ा, व जख्म हो जाने के कारण कभी-कभी खून की उल्टी आकर मौत तक हो जाती है।

एक्सरे विभाग नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो पी के. हलदार लिखते हैं।

(हिन्दुस्तान समाचार पत्र 21 अक्टूबर 1968)

शराब से कैसर का प्रकोप बढ़ा

आज जैसे-जैसे शराब का सेवन बढता जा रहा है, वैसे-वैसे कैसर का प्रकोप भी बढता जा रहा है। सरकार और जनता को चाहिए कि वे शराब पर तुरन्त पाबन्दी लगाएँ।

रूस में शराब का प्रचार करने वाले को 5 वर्ष तक की कैद

(ट्रिब्यूनल 8 जुलाई 1965)

शराब के कारण ही द्वारिकापुरी जल कर राख का ढेर हो गई। शराव के नशे मे चूर शाम्ब और यादवों ने द्वीपायन ऋषि को मार-पीट कर बहुत सताया। अकेले द्वीपायन ऋषि क्या कर सकते थे, बदले की भावना से देह त्याग कर अगले जन्म में ऋषि, अग्निकुमार देव बने और अपने अवधिज्ञान से पूर्वभव का वृत्तान्त जानकर अपमान का बदला लेने के लिए सारी द्वारकापुरी को ही जला दिया।

वैज्ञानिक एवं डाक्टरी खोजों का परिणाम

क्या अण्डा अधिक पौष्टिक होता है?

आम तौर पर एक ऐसी भ्राति जनसाधारण मे व्यापक रूप से फैल गई है कि अण्डे शक्ति के स्रोत है। आर्थिक दृष्टिकोण से अण्डे सस्ते होते हैं, इनके पाचन में कम परिश्रम लगता है, राष्ट्रीय स्तर से जनसाधारण तक बड़ी

सरलता से इनका उत्पादन किया जा सकता है। मुर्गीपालन व्यवसाय वाले लालच की दृष्टि से गलत प्रचार कर लोगों को गुमराह करते हैं।

आइये। इस विषय पर जरा विचार करे और स्वय यह निर्धारित करे कि, क्या उपरोक्त बाते सही हैं?

1. अण्डे और उनकी खाद्य शक्ति

अण्डे मे अन्य खाद्य पदार्थो जैसे मूग, उडद, अरहर, मसूर, मटर, चना, मोठ, मूगफली इत्यादि दालो की अपेक्षा ऊर्जा की मात्रा बहुत ही कम होती है। भारत सरकार के विभिन्न बुलेटिन इसका पुष्टीकरण करते हैं।

2. आर्थिक दृष्टिकोण

बाजार में अण्डे का भाव औसतन 1 रुपया प्रति अण्डा उपलब्ध है। एक अण्डे का वजन औसतन 50 ग्राम होता है। यानि की 100 ग्राम अण्डों का मूल्य दो रुपये हुआ। जबकि दालें व अन्य शाकाहारी खाद्य पदार्थ उससे भी सस्ते दामो मे उपलब्ध है। बात नीचे दिये गये चार्ट से स्पष्ट हो जाएगी—

वस्तु	मूल्य (प्रति 100 ग्राम)	ऊर्जा कैलोरी) (प्रति 100 ग्राम)
अण्डा	2 00	160
दाले	60	340
मूगफली	80	450
घी और तेल	2 00	900

3. स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी अण्डे हानिकारक

यह बात ससार के सभी वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं कि अण्डे को अच्छा भोजन मानना न केवल एक बड़ी भूल है बल्कि अनेक भयकर रोगो की उत्पत्ति का प्रमुख कारण भी अण्डा है। वढते हुए हृदय रोगों की उत्पत्ति का एक प्रमुख कारण अण्डे खाना ही है। अण्डों मे कोलेस्टेरोल की मात्रा अधिक होने से हार्ट अटेक, पेरालिसिस और रीनल पोल्योर नाम की भयकर बीमारिया उत्पन्न हो जाती हैं।

4 अण्डे प्रोटीन के अच्छे स्रोत-एक और अन्य भ्राति

प्रति सौ ग्राम अण्डे मे 6 8 ग्राम प्रोटीन होता है जबकि दालों मे 24 ग्राम, मूगफली मे 31 5 ग्राम होता है। गेहू की एक चपाती मे लगभग 13 ग्राम प्रोटीन होता है, जिसकी लागत सिर्फ 15 या 20 पैसा आती है। क्यों न हम इन प्रोटीन के सस्ते साधनो का इस्तेमाल करे और अण्डो से होने वाली भयकर बीमारियो से बचे रहे।

5. अण्डे कदापि सुपाच्य नही

अण्डे की सफेदी का अधिकाश भाग भोजन की नली मे बिना पाचन के ही निकल जाता है। इस पदार्थ पर यकृत और अमाशय के पाचक तत्त्वो का कोई प्रभाव नही होता।

6 अण्डो मे लोह और मैग्नेशियम आदि खनिज

भोजन मे लौह तत्त्वो की उपस्थिति नितान्त आवश्यक होती है। साधारण वनस्पतियो और दालो मे लोह तत्त्व की उपस्थिति प्रचुर मात्रा मे होती है, जिससे शरीर मे रक्त अल्पता नही हो पाती।

7 सड़े हुए अण्डो की पहचान, एक समस्या

अण्डे सडे हुए होने के बावजूद ऊपर से अच्छे व ताजे नजर आते हैं, जिसके कारण दुकानदार उनको मुनाफे की दृष्टि से बेच देता है। सड़े हुए अण्डे मे उपस्थित जीवाणु खाने वाले की मृत्यु का कारण बन सकते हैं।

8 शाकाहारी अण्डे-एक कोरी कल्पना

शाकाहारी अण्डे एक अव्यावहारिक एव अवैज्ञानिक भ्रातिपूर्ण नामकरण है, जो स्वार्थी दुकानदारो और व्यापारिक सस्थानो द्वारा जनसाधारण को गुमराह कर अपनी बिक्री के उद्देश्य से किया गया झूठा प्रचार है।

9. अण्डो की टूट फूट एक भयंकर आर्थिक हानि

एक सरकारी ऑकडे के अनुसार अण्डो के स्थानातरण मे 10% हानि हो सकती है, जिसके कारण अण्डो का विक्रय मूल्य अधिक हो जाता है।

अण्डे खाने की प्रवृत्ति यदि इसी तरह विस्तरित होती गयी तो अनेक पशु-पक्षियो की जातियो का इस पृथ्वी पर से लोप हो जाएगा। एक पर्यावरण विशेषज्ञ की यह घोषणा है कि सपूर्ण प्रदेश मे सन् 2000 तक एक भी चिड़िया दिखाई न देगी। यह निश्चय ही हम सबके लिए एक शोचनीय बात होगी।

अण्डो का उपयोग शाकाहारी लोगो के लिए वर्जित है। मासाहारी लोगो के लिए भी हानिकारक है। अण्डे की बनी चीजो को बिना अण्डे के बनी बताकर बेचना, खिलाना, परोसना, एक बडा भारी अपराध है। ऐसे पदार्थो पर "अण्डे का उपयोग लिया" बड़े स्पष्ट अक्षरो मे हिन्दी, अग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओ मे जरूरी लिखा हो।

टी वी तथा रेडियो पर नाफेड के द्वारा दिये जाने वाले अण्डे के विज्ञापन गैर कानूनी, एक गलत धारणा का प्रचार करने, और धार्मिक भावना को ठेस पहुचाने वाले हैं, अत सरकार उन्हे तुरन्त बन्द करे।

अण्डे विष से भरे हैं

अण्डो मे डी. डी. टी. विष

18 महीनो के परीक्षण के बाद अण्डो में 30 प्र. श डी डी टी विष मिला। **—कृषि विभाग-फलोरिडा-अमरीका, हैल्थ बुलेटिन-अक्टूबर 1967**

अण्डो से दिल की बीमारी

अण्डो मे कोलेस्टरोल की मात्रा इतनी अधिक होती है कि जिसके कारण अण्डो से दिल की बीमारी हाईब्लड प्रेशर, गुरदों की बीमारी पित्त की थैली मे पत्थरी आदि सैकडो रोग पैदा होते है। फलों, सब्जियो और वनस्पति तेलों में कोलैस्टरोल बिल्कुल नही होता।**—डॉ० कैथेराइन निम्मो, डी.सी.आर.एन. ओसियनों, कैलीफोर्निया (यू. एस. ऐ)**

अण्डों से धमनियो मे जख्म

रासायनिक परीक्षण सिद्ध करता है कि अण्डे की जरदी मे कोलैस्टरोल नामक ध्यानक तत्त्व पाया गया है, जो कि एक चिकना एल्कोहल (शराब) होता है। वह जिगर में जमा हो जाता है और फिर रगो (धमनियो) में जख्म ओर कडापन पैदा करता है। **—डॉ० जे एमन विल्किज**

अण्डों से पिताशय मे पथरी

एक अण्डे में लगभग 4 ग्रेन कोलैस्टरोल होता है। जब अण्डे खाये जाते हैं तो खून मे कोलैस्टरोल की मात्रा बढ जाती है जिसके कारण पित्ताशय में पथरी और दूसरी बीमारिया पैदा हो जाती है। **—डॉ॰ रौबर्ट ग्रास और प्रो. इरविंग डेविडसन**

अण्डों से एग्जिमा और लकवा

अण्डे की सफेदी अण्डे का सबसे अधिक खतरनाक भाग है। जिन जानवरो को अण्डे की सफेदी खिलाई गई, उन्हे लकवा मार गया और चमड़ी सूज गई।**—डॉ॰ रोबर्ट ग्रास**

अण्डे की सफेदी मे 'एवीडिंग' नामक हानिकारक तत्त्व होता है, जो एग्जिमा का कारण होता है।**—डॉ॰ आर. जे. विलियम्स**

अण्डो से पेट मे सडान

अण्डो मे कैलशियम की कमी और कार्बोहाइड्रेटस का बिल्कुल अभाव होता है। इस कारण ये बडी आतों मे जाकर सड़ान मारते है।**—डॉ॰ ई. वी. मैक्कॉलम—(बड़ी भारी डाक्टरी राय) न्यूअर नॉलेज आफ न्यूट्रिशन, पृ. 171**

अण्डे मनुष्य के हाजमे के प्रतिकूल है

पित्त और लबलबा का रस अण्डे की सफेदी के साथ नही मिलते है। अण्डे की सफेदी के साथ नही मिलते हैं। अण्डे की सफेदी का 30 से 50 प्रतिशत भाग भोजन प्रणाली से विना हजम हुए निकल जाता है।**—प्रो. आकोड़ा**

ससार मे अण्डो से बढकर कोई हानिकारक पदार्थ नही

अण्डो की उत्पत्ति और विकास उन पदार्थो के मेल से होता हैं जो कि वड़े गन्दे और नफरत से भरे है। इन पदार्थो को छूना ही मनुष्य के लिए घृणा की वात है खाना तो दूर रहा। मनुष्य की सेहत विगाड़ने के लिए इनसे वढ़कर और क्या वस्तु हो सकती ह ? मनुष्य अपना स्वास्थ्य विभिन्न फलो, शाकों व सूखे मेवो से प्राप्त कर सकता हैं ओर इन्ही से जीभ के स्वाद की पूर्ति भी अच्छी तरह हो सकती हे।—(डॉ॰ कामताप्रसाद, अजीगज, एटा, इण्डिया)

आज के वैज्ञानिक युग मे अण्डो जैसे अभक्ष्य पदार्थों का त्याग कर अमृत तुल्य दूध, फल, मेवा ग्रहण करने चाहिए।

दूध के पौष्टिक तत्त्व बहुत ही उचे दरजे के होते हैं क्योंकि इनमे बढिया किस्म के प्रोटीन पाये जाते हैं। ऐसा कोई पौष्टिक तत्त्व नही जो अण्डे से मिल सकता हो, परन्तु दूध मे न मिले। इस वैज्ञानिक युग में विशेष रूप से विटामिन और खनिज लवण बनावटी तौर पर मिल सकते हैं और वे जहा आवश्यक हों, दूध के साथ सहायक रूप मे लिए जा सकते हैं। मेरा यह दढ विश्वास है कि सतुलित शाकाहारी भोजन उतना ही पोषणकारी हैं, जितना कि मास और अडे। अत विटामिन और खनिज लवणो के लिए अण्डे और मांस पर निर्भर रहना व्यर्थ है।—**डॉ॰ आनन्द विमल सूरिया**

मांस में विष

लन्दन मे सर्व प्रसिद्ध डाक्टर हेग ने अपने प्रयोगों और अनुभ्वों के बाद मास के एक पौण्ड मे यूरिक एसिड विष और उसका प्रभाव नीचे लिखा है—

विष की मात्रा

काड मछली में	4 ग्रेन
यलीस मछली में	5 ग्रेन
सूअर मुर्दा में	6 ग्रेन
भेड वकरी में	6 ग्रेन से कुछ अधिक
वछडे मे	8 ग्रेन
सूअर की कमर रान मे	8 ग्रेन से कुछ अधिक
चूजे मे	9 ग्रेन
गाय की पीठ तथा पीछे के अग मे	9 ग्रेन
गाय की भूनी वोटी में	14 ग्रेन
गाय के जिगर मे	19 ग्रेन
मास के शोरवे मे	50 ग्रेन

विष का प्रभाव

यह विष जब खून मे मिलता है तो दिल की जलन, जिगर की खराबी, टी. बी, सासरोग, खून की कमी, गठिया, हिस्टीरिया, सुस्ती नीद आदि का आना, अजीर्ण रोग, शरीर मे तरह-तरह के दर्द, जुकाम, ऍफ्लूएजा, मलेरिया, न्यूमोनिया आदि सैकडो रोग पैदा हो जाते हो। सेहत बनाने के लिए विषपूर्ण मास त्याग कर शाकाहारी बनो।

भारत सरकार का फैसला

(हैल्थ बुलेटिन नं. 23)

अण्डे, मछली, मास की अपेक्षा, सोयाबीन, मूगफली मेथी, चौला, मटर, मूग, उडद, चने, मसूर आदि शाकाहारी पदार्थ अधिक शक्ति देने वाले हैं और अधिक सस्ते, भी है।

मांसाहारियों, सावधान! 1968 की नई वैज्ञानिक खोज 'मास-भक्षण से हड्डियां कमजोर।

हार्बर्ड मेडिकल स्कूल अमरीका के डॉ॰ ए, वाचमैन और डॉ॰ डी एस बर्नस्टीन लैंसेट 1968 वौल्यूम 1, पृष्ठ 958 मे अपनी महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक खोजो का परिणाम लिखते हैं—

मासाहारी लोगो का पेशाब प्राय तेजाबयुक्त होता है—इस कारण शरीर के रक्त का तेजाब और क्षार का अनुपात ठीक रखने के लिए हड्डियो से क्षार के नमक खून मे मिलते है और इसके विपरीत शाकाहारियो का पेशाव क्षार वाला होता है। इसलिए उनकी हड्डिया का क्षार खून मे नही जाता और हड्डिया मजबूत रहती है। उनकी राय मे जिन व्यक्तियो की हड्डिया कमजोर हो, उनको विशेष तौर पर अधिक फल, सब्जिया, सब्जियो के प्रोटीन और दूध का सेवन करना चाहिए और मास एकदम छोड़ देना चाहिए।

—साइस न्यूज—(दिल्ली विज्ञान शैक्षिक सघ से उद्धृत)

उपवास और अमेरिकन डॉक्टर्स

(उपवास चिकित्सा मे से)

1 पेट पूर्ण होने से भोजन से स्वय अरुचि होती है। फिर भी अज्ञानी लोग आचार चटनी और मसाला के निमित्त से ज्यादा भोजन करके दाट लगाते है। वह विष के समान हानिकारक है।

2 शरीर खुद खराब वस्तु को स्थान नही देता है। मल, मूत्र, सेड़ा व पसीना आदि को उत्पन्न होते ही फेक देता है।

3 बारी बारणे, बद करके सोने के बाद बारी खोलने से शरदी लगती है किन्तु हवा मे सोने से सरदी नही लगती है। ज्यादा भोजन करने से मल सड़ने से दिमाग में दर्द व श्लेष्म आदि होते है।

4 शरीर के लिए हवा बहुत कीमती पदार्थ है। हवा से शरीर को कभी नुकसान नही होता।

5 शरीर मे अन्न जलादि के सिवाय सर्व वस्तु विष का काम करती है।

6 शरीर अपने भीतर रात्रि दिन झाडु देकर रोग को बाहिर निकालता है।

7 उपवास (लघन) करने से जठराग्नि रोग को भस्म करता है।

8 बुखार आने के पहिले बुखार की दवा देना यह निकलते विष को शरीर मे बढाने के समान है।

9 ऐसा एक भी रोग नही है जो उपवास न मिटा सके।

10 स्वाभाविक मृत्यु से दवाई से ज्यादा मृत्यु होती है।

11 एक दवाई शरीर मे बीस रोग पैदा करती है।

12 अनुभवी डॉक्टरों को दवाई का विश्वास नही है।

13 बिना अनुभव वाले डॉक्टर दवाई का विश्वास करते है।

14 दुनिया को निरोगी बनाने का बड़े बड़े डाक्टरो ने एक इलाज ढूंढा है। वह यह है कि दवाईयो को जमीन मे गाड़ दो।

15 उपवास करने से मस्तिष्क (मगज) शक्ति घटती नही है।

16 मनुष्य का खान पान पशु ससार से भी बिगडा हुआ है।

17 ज्यादा खाने से शरीर मे विष और रोग बढता है।

18 दुष्काल की मृत्यु सख्या से ज्यादा खाने वाले की मृत्यु सख्या विशेष होती है।

19 ज्यादा खाना अन्न को विष और रोग रूप बनाने के समान है।

20 कचरे से मच्छर पैदा होते हैं और उसको दूर करना परम जरूरी है। उसी तरह ज्यादा खाने से रोग रूप मच्छर पैदा होते हैं। और उनको भी दूर करना आवश्यक है। दूर करने का एक सरल उपाय उपवास (लघन) है।

21 ज्यो-ज्यों अनुभव बढता है त्यो-त्यो डॉक्टरो को दवाई के अवगुण (नुकसान) प्रत्यक्ष रूप से मालूम होते जाते हैं।

22 बड़े-बडे डॉक्टरो का कहना है कि रोग को पहचानने मे हम सर्वथा असमर्थ है। केवल अदाज से काम लेते हैं।

23 रोग उपकारक है। वह चेताता है कि अब नया कचरा शरीर में मत डालो, उपवास से पुराने रोग को जला डालो।

24 शरीर को सुधारने वाला डॉक्टर शरीर ही है। दवाई को सर्वथा छोड विवेक पूर्वक उपवास करने से सौ रोगी में निव्वे रोगी सुधरते हैं। वही दवाई ले तो वे निव्वे रोगी ज्यादा विगडते है।

25 जैसे शरीर मे घाव स्वय भर जाता है वैसे सब रोग विना दवाई के मिट जाते हैं।

26 शरीर मे उत्पन्न हुए विष को फैलाने वाला रोग है। घरके मैले व कचरे को ढाँकने तुल्य दवाई है, जो थोडे समय अच्छा दिखावा करके भविष्य में भयकर रोग फूट निकलते हैं। जवकि शुद्ध उपवासों से रोग के तत्त्व नष्ट हो जाते है। यह मले कचरे को फैकने के समान है, कचरा फेकने मे प्रथम थोडा कष्ट पीछे वहुत सुख इसी प्रकार तपश्चर्या मे थोडा कष्ट पडता है। कचरा ढाँकने के पहले थोड़ा आराम पीछे से दु ख इसी प्रकार

दवाईयो से रोग ढॉकने में प्रथम लाभ पीछे से बहुत दु ख निरतर भोगने पडते हैं।

27 ज्यो दवाई बढती जाती है त्यों रोग भी बढ़ते जाते है। मनुष्य दवाईयो की आतुरता व मोह छोडकर कुदरत के नियम पालेंगे तब ही सुखी होंवेगें।

28 दवाई से रोग नष्ट होता है। यह समझ शरीर का नाश करने वाली है। आज इसी रोगो से जनता सड़ रही है।

29 सरदी लगने पर तम्बाखू आदि दवाई लेना विष को भीतर रखना है।

30 एडवर्ड सातवे बादशाह का डॉक्टर कह गया है कि डॉक्टर लोग रोगी के दुश्मन है।

31 अज्ञान के जमाने में दवाई का रिवाज शुरू हुआ था।

32. दवाई विष की बनती है और वे शरीर मे विष बढ़ाती है।

33 शरीर मे विष डालकर सुखी कौन हो सकता है।

34 जुल्लाब लेने से रोग भीतर रह जाता है किन्तु उपवाससे रोग जडमूलसे नष्ट होकर आराम होता है।

35 उपवास करने वाले रोगी को मुह में और जीभ पर उत्तम स्वाद का अनुभव होवे तब रोग का नष्ट होना समझना चाहिये।

36 शरीर में जो रोग कार्य करता है वही काम दवाई करती है।

37 अनुभवी डॉक्टर कहते हैं कि दवाई से रोगी ज्यादा बिगडते हैं।

38 दवाई न देना एक रोगी पर महान् उपकार करने के समान है। केवल कुदरती पथ्य हवा भावना आदि परम उपकारक है।

39 ज्यो-ज्यो डॉक्टर्स वढते है त्यो-त्यो रोग और रोगी वढते जाते है।

40 डॉक्टर घट जाय तो रोग और रोगी भी घट जाये।

41 रोगी के पेट मे अन्न न डालने से रोग बिचारा आप ही स्वय नष्ट हो जाता है।

42 दवाई को निकम्मी समझे वही सच्चा डॉक्टर है।

43 हाथ, पैर, आँख को आराम देते हो वैसे उपवास करना जठर-पेट को आराम देना है।

44 अमेरिका मे डॉक्टर लोग रोगी को उपवास कराके रात्रि को देखते रहते है कि शायद यह गुप्त रीति से खाना खा न ले।

45 तीन दिन के बाद उपवास मे कठिनाई मालूम नही पड़ती है।

46 पशु पक्षी भी रोगी होने के बाद तुरन्त आराम न हो वहाँ तक खाना पीना छोड देते है।

47 टूटी हड्डी का जुड़ना और बन्दूक की गोली की मार को भी उपवास से आराम पहुचता है।

प्राकृतिक उपचार

स्वस्थ जीवन के प्राकृतिक गुण

दातों की हिफाजत

1 नीम के या बबूल के दाँतौन से रोज सुबह दॉतो को साफ करे।

2 दातौन न मिले तो थोड़े से सरसो के तेल मे नमक, हल्दी और फिटकरी मिलाकर मसूड़ों और दातों को रगडकर साफ करे।

3 भोजन के वाद और सोने से पहले दॉत जरूर जाफ कर ले।

4 गरम दूध, चाय ओर गरम भोजन के वाद टण्डा पानी मत पीओ।

5 वरफ का टुकड़ा मुह मे कभी मत रखो, पान सुपारी न खाओ।

6 मुह से दुर्गध निकलती हो तो पानी में नींबू का रस मिलाकर कुल्ले करो।

7 वच्चों के दात निकलते समय निम्न प्रयोग करे इससे दात आसानी मे निकलते है और मजवूत भी वनते है।

प्रयोग—250 ग्राम चूना दो किलो पानी मे भिगा दो, अब चूना पानी मे नीचे बैठ जाय तब नितरा हुआ चूने का पानी बोतल में भर दो, बोतल पर चिट लगा दो, चूने का पानी, सुबह शाम 10-15 बूद बच्चे को पिलाओ।

8 कब्ज न होने दे। दो छोटी हरडे रोज शाम को चबाने के बजाय चूसे।

अधिक आयु तक स्वस्थ जीवन का रहस्य

1 जर्दा, गुटका, चुटकी, शराब, मास न खाओ, धूम्रपान बिलकुल न करो।

2 तेज गरम मसालेदार भोजन मत करो, झर-झरते तेल में पकाई हुई सब्जी मत खाओ, जल्दी हजम नही होती है।

3 ताजा पानी छानकर अधिक मात्रा में पिओ, तालाब या नदी का नही।

4 बर्फ या कुलफी, आइसक्रीम कभी मत खाओ, दॉत व पेट के लिए हानिकारक है।

5 हरी सब्जी और हरे ताजे फल इच्छानुसार खाते रहो, ये विटामिन और नमक से ओत-प्रोत रहते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए हितकर हैं।

6 भोजन खूब चबाकर और धीरे-धीरे करो। भूख से कुछ कम खाओ।

7 गरिष्ठ भोजन को पचाने मे आतों को अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

8 रोज सूर्यास्त से पहले भोजन कर लो, हल्का भोजन करो।

9. हर समय नाक से गहरे श्वांस लो, मुह से नहीं।

10 सीधे बैठो, सीधे चलो, झुककर नही। रीढ़ की हड्डी सीधी रहे।

11 शयन कक्ष का वातावरण खूब शात रहे। स्वच्छ हवा आती रहे।

12. जल्दी सोने उठने का अभ्यास रखे। स्त्री प्रसंग मे सयम रखो।

13 क्रोध और फिक्र से बचो। परिश्रम शक्ति से अधिक न करो।

14 हर समय अपने को स्वस्थ अनुभव करते रहो। प्रसन्नमुद्रा मे रहो।

15 विचारो को हर समय पवित्र और उन्नत रखो सदा खुश रहो।

16 आत्म शक्ति बढाने हेतु सुबह-शाम प्रार्थना स्वाध्याय करो।

17 आत्मनिरीक्षण किया करो। मन को शाति मिलेगी। आत्म बल बढ़ेगा।

18 रोज आधा किलो ताजा दूध पिओ। कमजोरी मिट जायेगी।

19 प्रात आधे घटे तक सूर्य स्नान लेने के बाद गर्म या ठण्डे जल से स्नान करो।

20 सरसों या जैतून का तेल की मालिश के बाद सूर्य स्नान करना चाहिए।

21 सूर्य स्नान रक्त को शुद्ध करता है। चर्म रोग मिटाता है। भूख बढाता है। मासपेशियों और हड्डियो को मजबूत बनाता है। टी बी का रोग नही होता है। ऑखो की रोशनी बढ़ती है। ऑख और सिर को कपड़े से ढकना चाहिए। शरीर सुन्दर चमकता है। दिन भर काम करने में उत्साह रहता है।

22 तेलीय त्वचा के लिए पानी मे डेटॉल की कुछ बूदे डालकर स्नान करे।

विटामिन खाद्य प्राण या खाद्य सार

स्वास्थ्य की रक्षा के लिए एव अनेक बिमारियो से बचने के लिए विटामिन जरूरी है। कन्दमूल साग-सब्जी आदि में विटामिन काफी रूप मे पाया जाता है। इन्हे उबाल कर खाने से बहुत से विटामिन नष्ट हो जाते हैं। भोजन मे विटामिन का प्रमुख स्थान है।

विटामिन (ए)

मुख्य रूप से दूध घी, मक्खन, गोभी, टमाटर, केला, पपीता, नींबू, नारगी (सतरा), गाजर, मटर, गेहूँ आदि मे पाया जाता है। पत्तीवाली सब्जियो मे भी पाया जाता है।

लाभ शरीर की वृद्धि और मरम्मत करता है। बच्चों को पुष्ट बनाता है सक्रामक (छूत वाले) रोगो मे शरीर की रक्षा करता है और शरीर

के रूखेपन को नष्ट करता है। बाल झडने से रोकता है। ऑख सम्बन्धी बीमारी नही होने देता है।

हानि ऑख, कान, नाक, गला, फेंफडा आदि के अनेक रोग न्यूमोनिया, थाईसन, पेचिस, जलोदर, रतौंधी आदि हो सकते है। शरीर की वृद्धि रुक सकती है।

अधिक से हानि सिरदर्द, होठ सूखना, हाथ-पैर मे सूजन झुझलाहट आदि।

विटामिन 'बी'

मुख्य रूप से गेहूँ, जौ, मक्की, सोयाबीन, मटर, दाल, चना, टमाटर, नारियल, खजूर नारगी, पपीता आदि मे उपलब्ध होता है।

लाभ दिल दिमाग और नसो को तन्दुरूस्त रखता है। भूख और हाजमा बढाता है। पुट्ठो को ताकत (शक्ति) देता है।

बी 1 बेरी-बेरी रोग में फायदा करता है। बी 2 ऑखों की लाली दूर करता है। चर्म रोग मे फायदा करता है। बी 6 वमन और श्वास मे फायदा करता है।

बी कॉम – शारीरिक वृद्धि होती है। काम मे मन लगता है। नीद आती है। खून बढता है। हृदय रोग, घबराहट दूर करता है। पाचन बढ़ाता है।

अभाव से हानि—मुह का स्वाद बिगड़ जाता है। शरीर कमजोर हो जाता है। रोगों से सामना करने की हिम्मत नही रह जाती। बेरी-बेरी रोग हो जाता है। और अजीर्ण वमन, पेट मे दर्द आदि अनेक शिकायतें बनी रहती हैं।

अधिक से हानि—आतो मे अलसर, बीपी कम, दिल की धड़कन, बाल झड़ते है।

विटामिन सी

यह ऑवला, नीबू, नारगी, इमली, आम, अनानास, पपीता, जाम, सेव, नाशपती, टमाटर, अगूर केला, हरी सब्जी में उपलब्ध है।

लाभ—खून शुद्ध होता है। हड्डियों और दॉतो को मजबूत बनाता है। रक्तनली त्वचा और मसूडो को मजबूत करता है। ऑखो को ठीक रखता है। सक्रामक (छूत) बिमारियो के आक्रमण से बचाता है।

अभाव से हानि—भूख कम लगती है। रक्त विकार होता है। श्वास उठने लगता है। सुस्ती और चिड़-चिड़ापन आने लगता है। वजन कम हो जाता है। पायरिया-दॉतो में हो जाता है। हाथ-पैर में दर्द जोड़ों मे सूजन होती है।

अधिक से हानि—गर्भ को विकृत करता है। पथरी की बिमारी हो जाती है।

विटामिन डी

यह मक्खन, पनीर, दूध, दही, छेना, हरी तरकारी, पपीता, गाजर, नारियल और सूर्य के ताप में उपलब्ध है, तेल मालिस कर थोड़ी देर धूप मे बैठने से प्राप्त होता है।

लाभ—हड्डियो को मजबूत बनाता है। पचे हुए भोजन में फास्फोरस और केलसियम की अधिकता को बराबर करता है।

हानि—हड्डियॉ कमजोर हो जाती है। खून की कमी से चेहरा पीला पडता है। हिस्टीरिया आदि के दौर वाली बीमारी हो जाती है। सर्दी और जुखाम जल्दी-जल्दी होता है। फेफडो मे रोग हो जाता है। शरीर की वृद्धि रुक जाती है। वच्चो में चलने फिरने दौड़ने की शक्ति नही रह जाती है। वे सुस्त पड़े रहते हैं। दाँत देर से निकलते हैं। हाथ-पैर दुवले पड़ जाते हैं। टेढ़े-मेढ़े हो जाते है।

अधिकता से हानि—रोग की स्थिति घातक वन जाती है। थकावट कमजोरी, वजन मे कमी, अतिसार, पेशाव वमन ज्यादा आता है। हड्डियो से केल्सियम निकलकर खून मे आने से गुर्दे काम करना वद कर देते है। अत मृत्यु तक हो जाती है।

विटामिन (ई)

गेहूँ, चावल, अकुरित अनाज, हरे साग पात मे, नारियल, ताजे दूध मे मक्खन, सेम, सोयाबीन, सलाद बिनौला मे उपलब्ध।

लाभ—हाई बीपी मे फायदा खून मे थक्का जमने नही देता स्त्रियो के बध्यापन और गर्भपात को रोकता है। प्रजनन शक्ति बढ़ती है।

अभाव से हानि—गर्भपात, नपुसकता, हृदय रोग एनिमिया हो जाता है। प्रजनन अगो का विकास रुक जाता है।

अधिक से हानि—थोड़ी चोट से अधिक खून गिरता है। खून का थक्का मिटाने की प्रक्रिया रुक जाती है।

विटामिन (के)

हरी सब्जी पत्ते वाली पालक, बथवा, सोयाबीन, पनीर, टमाटर मे उपलब्ध।

लाभ—बीपी नारमल रहता है।

अभाव से हानि—कमी से मृत्यु हो जाती है।

अधिक से हानि—एनीमिया गर्भवती स्त्री के बच्चे को पीलिया।

किस वस्तु में कितना विटामिन कौनसा उपलब्ध है

फलो के नाम	ए.	बी	सी	डी	ई
अगूर किसमिस		1	3		
अनारस	2		2		
आम	2		3		
केला	2	2	2		
नारियल	1	2		1	1
नीबू कमला	1	1	3		1
गेहूँ	1	2		1	1
गाय का दूध	2	2		1	1
सैव	1	1	2		
पपीता	2	1	3		
पिस्ता	1	2			
अखरोट	1	3			
गाजर	2	3	2		
गोभी	1	1	2		
प्याज	1	1	2		
काली मिर्च हरी मिर्च	2	1	3		
सीता फल	2	1	2		
पालक	2	1	2		
टमाटर		3	3		
हरा टमाटर	2	2	2	1	
अकुरित चना मूँगा	1	2	2		
मक्खन	2		2	2	

नोट — 1 विटामिन है, 2 ज्यादा है, 3 वहुत ही ज्यादा है।

अहिंसक चिकित्सा पद्धति

1 अधिक शक्ति वाला चुम्बक, हाई पावर मैंगनेट जोडी एक।

2 एक्यूप्रेसर।

3 सूर्य किरण चिकित्सा।

चुम्बक असन्तुलित शारीरिक ऊर्जा को संतुलित करता है। एक्यूप्रेसर दवाव से वीमारी मे फायदा होता है। सूर्य किरण चिकित्सा — नारगी या लाल रग कफ के दोषो को/हरा रग — वात के दोषो / एव नोला रग — पित्त के दोषो को शात करता है।

जैन नवयुवक एवं महिला मंडल अपील

क्या आप दीपावली पर एवं शादी विवाह में फटाखे, आतिशबाजी का प्रयोग करते हैं?

"आप आज ही घातक आतिशवाजी का त्याग करने का प्रण ले"
आतिशबाजी से होने वाली विभिन्न हानियाँ —

1 प्रति वर्ष आतिशवाजी पर होने वाले करोड़ों रुपयो का व्यय खर्च।

2. फटाखों के धमाकों से हृदय रोगियो की हृदय गति बढ जाना।

3. आतिशवाजी से प्रति वर्ष होने वाले अनेकों अग्निकांडों से करोडो की सम्पत्ति का नुकसान

4 आतिशवाजी की गध से दमे श्वास के रोगियो को तकलीफ होना। दम फूलना, रक्तचाप बढना आदि अनेक बीमारियों का घर कर जाना।

5 आतिशवाजी के धुएँ से वायुमडल दूषित होना, प्रदूषण फैलना, तथा शुद्ध आक्सीजन का न मिल पाना।

6 आतिशवाजी से बच्चों का गंभीर रूप से घायल होना, अपंग हो जाना, मौत तक हो जाना।

7. अस्पतालो मे एव अन्य स्थान में रोगियों को धमाकों से पीडा पहुँचना।

8 आतिशवाजी से वच्चों में हिंसक प्रवृत्ति का विकास होना।

9 आतिशवाजी करते हुए जीव के नीच गति का वध हो जाता है।

10 आतिशवाजी से अनेक त्रस एव स्थावर जीवो को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता है।

11 आतिशवाजी से कई लोग बुरी तरह जलकर मौत के मुह में पहुच जाते हैं।

उपरोक्त हानियो को ध्यान मे रखते हुये आतिशवाजी का स्वय त्याग करें एवं दूसरो को त्याग करने की प्रेरणा देवे, वच्चों को प्यार से समझाकर त्याग करने की प्रेरणा दें एव आतिशवाजी से वचाये हुए धन को जीवदया हेतु उपयोग में देने का लक्ष्य रखे।

आतिशबाजी से खतरा व धन का दुरुपयोग

1 बच्चो का जल जाना व असख्य जीवो की हत्या।

2 आतिशबाजी से आपस मे लडाई-झगडा होना।

3 आतिश-वाजी से वायुमण्डल दूषित होता है।

4 आतिशबाजी से लाखो, करोडो की सम्पत्ति नष्ट होती है।

5 आतिशबाजी से ऑखे फूटने की हजारो घटनाएँ होती हैं।

6 आतिशबाजी के द्वारा धन-जन व मकान जलने पर, कई लोगो को गाव छोड़कर भागना पडता है एव लाखो का नुकसान सहन करना पड़ता है।

7 आपनी गाढे पसीने की कमाई का दुरुपयोग।

8 पटाखो के धमाके से पक्षी पेड़ से गिरकर मर जाते है और पशु भी डर जाते हैं।

9 पटाखो के धमाके से बीमार व्यक्तियो की नीद उड जाती है जिससे उनको भयकर वेदना होती है।

10 बीकानेर मे पटाखो की आग से लाखो की सम्पत्ति नष्ट एव दस लोग बुरी तरह घायल।

11 हैदारबाद केरोपाली में एक घर के 12 व्यक्तियो की पटाखो के विस्फोट से मृत्यु हो गई।

12 मेक्सिको सिटी मे पटाखो की आग से 61 लोगो की मृत्यु एव 63 घायल व करोडो का नुकसान एव कई इमारते नष्ट।

13 झासी मे पटाखो से फेक्ट्री जल कई। मालिक के परिवार सहित 35 लोगो की मृत्यु एव कई घायल, लाखो का नुकसान हुआ।

अत आपका कर्तव्य है कि — दूसरो को भी पटाखे नही छोड़ने की प्रेरणा दे।

1 पटाखो मे लगने वाली राशी से बीमारो के लिए दवाईयॉ, निर्धन विद्यार्थियो के लिए पुस्तके, अनार्थो की सहायता, जीव दया आदि में उपयोग कर अपने जीवन को धन्य बनाने के कसाथ, दूसरो के जीवन को बनाने मे सहयोग देंवे।

2 आतिशबाजी मे लगने वाले धन का उपव्यय रोके।

3 वेस्टेज, झूटन, साग-सब्जी, केले, मटर, (मतीरे) तरबूज, खरबूजे के छिलके आदि रोडि पर, रास्ते मे अथवा गटर में न डालें वर्ना कीडे-ककौड़े पैदा होगे। पावो मे आकर मरेगे उसका परिणाम बीमारी आदि के द्वारा भोगना पडेगा। कबूतर, मोर, मृग, गाय, बन्दर आदि राष्ट्रीय प्राणि है। इनको मारने वाला सजा का भागीदार है क्रूरता निवारण कानून के अनुसार दोषी है।

वेद शास्त्रों में यह बात लिखी है कि —

सुख दिया सुख होत है, दुख दिया दुख होय।
आप हणे नही अवर को, आपको हणे न कोय।।

श्रावक की दिनचर्या

1 प्रात काल सूर्योदय से पहले उठकर परमात्मा का भजन या प्रार्थना स्वरूप नमस्कार मत्र का ध्यान अवश्य करो।

2. शरीर चिन्ता से निपटना आवश्यक हो तो यह कार्य करना, मलमूत्र की वाधा रोकना नही, किन्तु समुच्छिम जीवों की विराधना का पाप टालने के लिए वाहर जंगल मे जाने की आदत डालो, जिससे पाप से भी वचो और शरीर भी स्वस्थ रहे।

3 पश्चात् अवकाश हो तो धर्म स्थान में जाकर सामायिक के माध्यम से आत्म चिन्तन करो, यदि अवकाश न हो तो कुछ समय वेठकर नमस्कार मत्र की माला या अनुपूर्वी आदि स्मरण करो।

4 पश्चात् मुनि महात्मा या सतिये विराजते हो तो उनके दर्शन करना उनकी सुख समाधि पूछना जरूरत हो तो उनके उपचार की व्यवस्था करना।

5 पश्चात् सन्त सतियो के व्याख्यान होते हो और अवकाश हो तो व्याख्यान अवश्य सुनो, व्याख्यान से कई प्रकार की शिक्षा मिलती है।

6 यदि सन्त सतिये न हो तो धर्म स्थान मे जाकर धर्म पुस्तको का वाचन मनन करो।

7 भोजन करते समय श्रमण निर्गन्थ या निर्ग्रन्थीयो को प्रासुक एव ऐषनीक दान देने की भावना करो और योग मिले तो भावना सफल बनाओ।

8 पश्चात् दुकान पर जाकर न्याय नीति पूर्वक आजीविका उपार्जन करो, व्यापार करते समय भी धर्म और नीति को अपना लक्ष्य बिन्दु बनाओ आर्थिक लाभ के लिए धर्म एव नीति को छोडना नही।

9 व्यवसाय मे जो लाभ हो उसमे प्रतिशत दस या कम से कम 6 के हिसाव से अलग जमा करो जिससे कोई भी शुभ कार्य करने मे हाथ तग न रहे।

10 दुपहरी में कुछ समय ऐसा निकालो जिससे शरीर व मस्तक को शाति मिले।

11 सायकाल सूर्यास्त से पहले ही भोजनादि से निवृत्त हो जाना चाहिये रात्रि भोजन जैनियो के लिए शोभास्पद नहीं।

12. भोजन मे कन्दमूल या ज्यादा उत्तेजक पदार्थ (अधिक मसालेदार तेल के पदार्थ वगैरा) का आहार नहीं करो जिससे प्रकृति तुम्हारे कावू में रहे।

13 सायकाल को समय निकालकर प्रतिक्रमण करने की भावना रखनी चाहिये।

14 प्रहर रात्रि जाने बाद सोने के समय भी परमात्मा का ध्यान करना चाहिये।

15 नैतिकता का पतन नहीं हो इसका सदैव ध्यान रखना चाहिये।

16 अपने कुटुम्ब जाति समाज की सार सभाल करके उनके सुख-दुःख के सविभागी बनने से जीवन मे समाधि रहेगी।

इस प्रकार जीवन को सीमित और नियमित बनाने से आत्मा उन्नत बनती है। वही उन्नत आत्मा अपने पुत्रादि के घर सभालने योग्य हो जाने पर उनके जिम्मे व्यापारादि सौपकर विरक्त बनकर सेवा द्वारा समाज की उन्नति करें। और अन्तिम समय निकट जानकर आलोचनापूर्वक सलेखन सथारा द्वारा समभावपूर्वक काल कर आराधक बने यही मनुष्य जीवन की सफलता है। आराधक श्रावक स्वल्प भवो मे केवली होकर शाश्वत सुख प्राप्त करता है।

□□

(श्री जैन धार्मिक शिक्षण संस्कार योजना) अध्ययन वृद्धि का विवरण

क्रमांक सन्	विषय	प्रथम शिविर				द्वितीय शिविर				तृतीय शिविर			
नाम	सामायिक सूत्र												
	प्रतिक्रमण सूत्र												
पिता का नाम	२५ बोल												
	भक्तामर												
धार्मिक शाला	मेरी भावना												
	प्रार्थना												
अभिभावकों के लिए	श्लोक												
	अन्य												

शिविर	हस्ताक्षर
प्रथम	
द्वितीय	
तृतीय	

उपस्थिति विवरण

माह	ज.	फ	मा.	अ.	म	जू.	जु	अ.	सि	अ	न	दि.	योग
उपस्थिति													

अध्यापकों के लिए

नियम पालन विवरण

माह	ज.	फ	मा.	अ	म	जू.	जु	अ	सि	अ	न	दि.	योग
स्थिति													
अभिभावक के हस्ताक्षर													